[illegible] गेहिया

प्रस्तावना

श्लोक

व्याजे द्वी गुणं वितं, व्यापारे च चतुर्गुणं;
खेतं शत गुणं वितं, दाने च अनंत गुणं.

[illegible] सेठिया जैन ग्रन्थालय बीकानेर.

इस वक्त जैन धर्म के आराधन करने वाले [illegible] वैश्य (बणिये - वैपारी) जाती के लोक ही अधिकतर [illegible] और वेपारी लोक हिसाब में हॉशियार ज्यादा होते हैं. वो जिस वेपार में ज्यादा लाभ देखते हैं, वो [illegible] और यथा शक्ति करते भी हैं. इस लिये उनको अधिकाधिक लाभ का वेपार बताना, यो धन उनके [illegible] बताना और सुखी बनाना, यह मेरा कर्तव्य है, क्योंकि वो मेरे धर्म बन्धु हैं. अब लाभ उपार्जन करने के [illegible] का व्यवहारिक (हर हमेश संसार में प्रवृत्ती हुइ) रीति को तरफ दृष्टि दे कर विचार दो हैं. [illegible] प्रकार अनुसार: व्याज में दो गुणा, वेपार में चौगुणा, और खेत में सो गुणा, लगाया हुवा द्रव्य फल-

... पर ग्रन्थ कर्ता ने अनुमान किया है, परन्तु यह निश्चय नहीं, क्योंकि - जो नियम सिर पेसाही होता ... यश नतहै। कार्य करने वाले कभी निराश न हुवे चाहियें. ऐसा तो थोडी नहीं आता है, उलट बहुत_परोक्ष ... करने वालों को झुरते - पश्चात्ताप करते ही देखने में आते हैं. कि - हाय! वस्तु या ब्याज डूब गया! ... निकला गया' निरजत ही नहीं हुए! वगैरा. इस से जाना जाता है कि - उपर कहे तीनों ही कर्तव्यों में लाभा- ... का होना दैवाधीन - कर्माधीन है वो कर्म दो तरह हैं - १ अलाभ - दुःख जिस से होता है उन्हे पाप कर्म कहते हैं और लाभ - सुख जिस से होता है उन्हे पुण्य कर्म कहते हैं. इसलिये डाली पत्ते को छोड कर, मूल कर्तव्य जो लाभा लाभ के कर्ता पुण्य पाप है, उन्ही के तरफ लक्ष देने की बहुत जरूर है, और अलाभ का करता जो पाप कर्तव्य उसे त्याग - छोड कर, लाभ का करता पुण्य कर्तव्य है, उसका स्वीकार करने के वास्ते ही यद्योक्त ग्रन्थ कर्ता ने उन वैपारी वर्ग को सुचित - सावधान करके - सच्चा लाभ उपार्जन करने को ही बोध करते है कि - "दानं च अनंत गुणं" अहो लाभार्थी वैपारीयों! सब वैपारों से जो 'दान' नाम का वैपार है वो सच्चा ही वैपार है अर्थात् पार विगर का अपार लाभ - अनंत गुण लाभ का दाता है, इसलिये लाभार्थीयों को अन्य वैपार से इस 'दान' ... वैपार करने की बहुत ही आवश्यकता - जरूर है. परन्तु यों कहने सेही इस जमाने के लोक इस बात को मंजूर ... बनादे, ऐसा भोला जमाना अब न रहा! अब तो उपरक्त प्रत्याक्षादि प्रमाण से सिद्ध किया जाय उसे ही कबूल करते हैं, और उनको कबूल कराने के लिये, इस विश्वालय में प्रत्यक्ष प्रकरण अनेक मौजूद है, सो देखिये - एक जन्म से दरिद्र और एक जन्म से ही श्रीमंत - मालदार होता है, इसका क्या सबब? एक सत्र आराम से विलास ...

[illegible] है और एक बड़ा सुशोभित ग्रन्थ [illegible] यह नहीं आ सकता है, इसका क्या कारण? इत्या-
[illegible] जब कोई दृष्टि में विचार करेंगे तो, सहज ही दृष्टि आजायगा कि - पूर्व पार जित पाप पुण्य
[illegible] इसी बीच की [illegible] भव्यों के हृदय में [illegible] " सरल
[illegible] किया था, [illegible] - [illegible] - गुण - [illegible] - [illegible] - [illegible] आदि की
[illegible] इस ग्रन्थ में [illegible] किया गया है.

[illegible] ([illegible]) के निवासी [illegible] -
[illegible] जी कि जिन्होंने विक्रम संवत् १९३४ के [illegible]
[illegible] के [illegible] पुण्य की [illegible] जी ऋषि जी
[illegible] ऋषि जी महाराज के शिष्य [illegible] मुनि था [illegible] ऋषि जी के शिष्य
[illegible] ऋषि जी महाराज के पास [illegible] अनेक ग्रन्थ [illegible] और
[illegible] ([illegible] - [illegible] में) अपने पूज्य पिता श्री की [illegible] में
महाराज [illegible] आजकल [illegible]
[illegible] हुए हैं, [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible] मारवाड [illegible] अपने [illegible]
[illegible] कार्य में व्यय किया [illegible] है. और महाराज श्री [illegible]
[illegible] क्योंकि जब महाराज श्री [illegible] पधारे और [illegible] का
[illegible] ने मना किया, कि [illegible] कोई भी साधु जो [illegible] नहीं हैं,
[illegible] है, और [illegible] भी साधुओंका निर्वाह होना व आहार पाणी
[illegible] है, [illegible] अनेक [illegible] - इस सब [illegible] के [illegible]
[illegible]

[illegible] है.

[illegible] का साराँश यह है कि - यह अग्रवंशी वैश्य जाति में उत्पन्न हुए भक्त लोग का है, और श्रीमान [illegible] वैश्य जाति में उत्पन्न हुये हैं और उपकेशवंशी [illegible] वैश्य जाति को सूचना अनेक लाभ का [illegible] प्रकार प्रमाण का है, ऐसा इस ग्रन्थ का सम्बन्ध मिलनेसे यह ग्रन्थ हमारे सम्पूर्ण भाइयों [illegible] लाभ कारक होगा. और इसे अवलोकन करके [illegible] ग्रन्थ कर्त्ताका प्रतिफल [illegible] पढ़ने करने का श्रम - [illegible] इस प्रकाशक की सहायता कर आगे [illegible] पुस्तक पढ़ने सुनने की और गुणकी गुण ग्रहण करने की बड़ी सुजानता है इसलिये सूचना लिखदिया.

[illegible] कार्तिक,
[illegible] १९३४
[illegible] पूर्णिमा.

आपका दास इच्छुक,
रामलाल पन्नालाल कीमती,
रामपुरा वाला.

सूचना पाठक गणों ! अव्वल निम्न लिखित अशुद्धियोंको शुद्ध कर फिर यत्नासे पढियेजी.

पान	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	[illegible]	[illegible]	नग	नग
[illegible]	[illegible]	[illegible]	कारण	कारण
[illegible]	[illegible]	[illegible]	पानी	पानी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	कराय	कराय
[illegible]	[illegible]	[illegible]	निरधार	निराधार
[illegible]	[illegible]	[illegible]	जायो	जाण्यो
[illegible]	[illegible]	[illegible]	करायाय	कराय
[illegible]	[illegible]	[illegible]	कारं	कारं
[illegible]	[illegible]	[illegible]	कार	कर
[illegible]	[illegible]	[illegible]	तिक्षिण	ततक्षिण
[illegible]	[illegible]	[illegible]	को	का
[illegible]	[illegible]	[illegible]	सुनार	सुनार
[illegible]	[illegible]	[illegible]	कुंवार	कुंवार
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पान	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४	२	८	प रात ॥	प ॥ रात
१५	५	३	प तिहां	तिहां
१५	२	१०	भातुम	धातुम
१६	२	१४	रक	कर
१७	२	५	अपारं	अपार
१७	२	७	मिल ॥	मिली ॥ ओ॥
१८	१	११	धाय ॥	धाय
१९	१	नीचे	माजे	काजे
२०	१	३	तक्षिण	ततक्षिण
२०	१	७	यथार	यथार्थ
२०	१	८	कन्या	राज कन्या
२०	२	२	कम	कम
२१	१	७	पाय	पाय
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	॥ री ॥	॥ री ॥ १२ ॥
[illegible]	[illegible]	४	तुरी	तुर्हि
[illegible]	[illegible]	[illegible]	करमानी	करामान्नी
[illegible]	[illegible]	१४	गाजनं	गाजन
[illegible]	[illegible]	[illegible]	गीता	गीता
[illegible]	[illegible]	[illegible]	माग	मग
[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रति	फ़िती
[illegible]	[illegible]	[illegible]	गर्हाने	गहानो
[illegible]	[illegible]	[illegible]	गरम गो	करमोगा
[illegible]	[illegible]	[illegible]	गैहीर	नैही २
[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रगन	प्रमान
[illegible]	[illegible]	[illegible]	मकरन्त्	मकरेन्
[illegible]	[illegible]	४	प्रगरमी	पागर्मी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	गाउ	गन्हे
[illegible]	[illegible]	[illegible]	आगी	आगो
[illegible]	[illegible]	[illegible]	माग	मागैं
[illegible]	[illegible]	[illegible]	दाउ	दाग्द
[illegible]	[illegible]	१४	गिरहीं	गिनरी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	हरकी	हाउकी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	भागने	भागनें
[illegible]	[illegible]	१४	मंर २	मरमोर
[illegible]	[illegible]	[illegible]	हाइ	डाइ

[illegible]	[illegible]
गा	गे
अ गा	माग
दृग	दृग
गई	गोई
अब	आम
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
मृग्दि	मुग्दी
दाउ	दाग
[illegible]	[illegible]
मुलि	मुलि
अग	आग
अहम	अहम गहम
पुलि	पुलि
[illegible]	[illegible]
मुगा	मुगां
[illegible]	[illegible]
आगा	आगा
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
मग	मग

[illegible]	[illegible]	[illegible]	आणद्	आनंद
[illegible]	[illegible]	[illegible]	शद्व	शब्द
[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्य	ध्य
[illegible]	[illegible]	[illegible]	इशी	इणी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	शद्व	शब्द
[illegible]	[illegible]	[illegible]	चर्दी	चर्दी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	मगाया	मगाया
[illegible]	[illegible]	[illegible]	लिश्च	निश्चय
[illegible]	[illegible]	[illegible]	लिर	लिये
[illegible]	[illegible]	[illegible]	उमग	उमंग
[illegible]	[illegible]	[illegible]	अपुकयाय	अकुलाय
[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्यार	यार
[illegible]	[illegible]	[illegible]	सम्दम्य	सम्यग्य
[illegible]	[illegible]	[illegible]	चिता	चिंता
[illegible]	[illegible]	[illegible]	पुण्य	पुण्य
[illegible]	[illegible]	[illegible]	शद्व	शब्द
[illegible]	[illegible]	नोट	निघा	निद्रा
[illegible]	[illegible]	[illegible]	शद्व	शब्द
[illegible]	[illegible]	[illegible]	च	चे
[illegible]	[illegible]	[illegible]	क्यां	कैसा
[illegible]	[illegible]	१२	धीड	वो

७३—७४ पृष्ठांक व नाम उलट पलट हैं.

७३	१	१०	ज्यारे	त्यारे
७८	१	१३	रो	पूरो
७८	२	४	सणीये	सुणीये
७८	२	४	पृछंग	पुछयो
७८	२	६	म	में
७८	२	१०	वस्या	पैदयां
७९	१	४	भांप्या	भाप्य
८०	१	९	ढेर	ढेर
८१	१	नोट	क्रेश	क्लेस
८१	२	५	उमारी	ऊभरी
८२	१	३	वृीया	वृतीया
८२	१	१२	हिमी	हामी
८४	१	४	दोढी	दोडी
८४	१	१३	अध्यामे	अध्यामे
८५	२	३	कडधो	कढ्यो
८५	२	१३	हायव	हानव
८६	२	८	सुज	मुज
८७	१	१०	प्रम	प्रेम
८८	१	१०	सत्य	सत्य
९०	१	१०	शिष	शिष्य

अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	मुना
[illegible]	मुना
[illegible]	आत्म
समय	सयम
[illegible]	काल
आकाश	[illegible]
ही	ही
प्र	मे

सूचना [illegible]

खुशखबर.

सिंहल कुंवर चरित्र और भुवन सुन्दरी चरित्र ज्ञान भातेकी तरफसे छपकर थोडेही रोजमें अमुल्य भेटदि जायगीजी।

पुस्तकें मगाने वालेको टपाल खर्च भेजने का जरूर ही

॥ ॐ ॥

॥ परमात्मायनमः ॥

॥ श्री मदन श्रेष्ठी चरित्र प्रारंभ ॥

॥ दुहा ॥ परम ज्योती प्रमात्मा । अगम अगोचर शांत ॥ चिदानन्द नन्देशिव । [illegible] ॥ १ ॥ अरिगंजण अरिहंतजी । सिद्धक्रिया सिद्धकाम ॥ आचार्य [illegible] । कोटी करूं प्रणाम ॥ २ ॥ श्री गुरु गुणौघ सिन्धुसम । चिवा चरित्र [illegible] समजावयां ॥ तास करी नमस्कार ॥ ३ ॥ तीर्थेश वाणी शारदा । [illegible] ॥ बुद्ध दाता कथी मातजी । प्रणमु भाव अवतंस ॥ ४ ॥ चरणांबुज [illegible] । प्राप्तु भागवंत ॥ पुण्य रास प्रकाशवा । कीजो मुज बुद्धवंत ॥ ५ ॥ [illegible] । सुख दाता एक पुण्य ॥ जेसंचीने लावीया । तास नहीं कुछ नुन्य

मनोरम्य बहु उद्यानोहो ॥ वृक्षलता गुच्छ मंडपे । सोभे नंदन वन मानोहो ॥ पुण्य ॥ ८
॥ रिपु मर्दन राजा तिहां ॥ शूर वीर शिरदारो हो ॥ तेज रुप बल बुद्ध शिरे । न्याय नी-
ति गुण धारोहो ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ सज्जन परजन मन रंजणो । प्रजा पुत्र परे पालेहो ॥ दा-
न अन्याइन गंजणो । उदार प्रणामी सू चाले हो ॥ पुण्य ॥ १० ॥ श्रीधरा आदी करी
। नारी उत्तम पांचोहो ॥ रुपे रंभा अचंभसी । सीयल लज्जा गुण सांचोहो ॥ पुण्य ॥ ११
॥ मतीव मनुर्धा कला निलो । राज धुरंधर शूरोहो ॥ राजा प्रजा मन रंजणो । न्याय
निपुण गुण पुरोहो ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ तिण नगरी मांही वसे । सब थी शिर वेपारी हो ॥
'धनदत्त' नामें दीपतो । ऋद्धि घरमे अपारीहो ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ दाता भुक्ता द्रव्य को ।
गुण धारीने उदारो हो ॥ दया धर्मी जंत पालणा । करता दुःखी की सारोहो ॥ पुण्य ॥
१४ ॥ सत्यवती प्रियवती । सील रुप गुण खाणीहो ॥ पतिव्रता नम्र जिमलता । विचक्षण
धर्मी शाणी हो ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ पुत्र चार तस दीपता । अनुक्रमें कहूं नामो हो । श्री
धर मनोरज भलो । अंगेज मैदन अभीरामोहो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ रुप कला गुण आगलो
। विद्या चतुर्धा पुराहो ॥ धर्म कर्म जाणे सहु । सुखद विनीत सनूराहो ॥ पुण्य ॥ १७ ॥
योग्य स्थान देखी करी । कन्या वय सम रुपेहो ॥ लज्जा विनयादी गुण भरी । परिक्ष

हो ॥ होण ॥ २ ॥ कृष्ण्या तस जाणने हो । आसण छोड्यो तत्कालहो ॥ अजाण अपराध जे
कियोहो ॥ नग क्षमा वक्षो माय हो ॥ होण ॥ ३ ॥ किण कारण पधारीया हो ॥ किस्यो कीठो
ज्ञान माय हो ॥ कृपा करी फरमावीये हो । जिम मुजने सुखथाय हो ॥ होण ॥ ४ ॥
[illegible] कर्मथी हो । उबर न कोइ जग मांय हो ॥ हरीहर इन्द्र चन्द्र किसरु
हो । कोइ न [illegible] विने भुक्तवाय हो ॥ होण ॥ ५ ॥ अनादी कालथी जीवके हो । लार
लाग्या [illegible] हो ॥ शुभा शुभ काम करायने हो । पुनरपि दुःख ते देय ॥ होण ॥
६ ॥ जड पण [illegible] जीवथी हो । जैसे नशानो स्वभाव हो ॥ हर्पीने संचे प्राणीयां
हो । [illegible] विन उन्माव हो ॥ होण ॥ ७ ॥ जिहां लग निज गुण भणी हो । चैतन्य
[illegible] हो ॥ मनुष्य होवे नहीं कर्मके हो । तिहां लग दुःख न टलत हो ॥ होण
॥ ८ ॥ [illegible] दिन तुम भणी हो । होतो सुकर्मको जोग हो ॥ तेहथी आहो निश
[illegible] हो । मिल्यो सु भोग संयोग हो ॥ होण ॥ ९ ॥ सुख भोगवीया सहू परेहो।
पण [illegible] गृह हो ॥ जिण पीवी मीठी भांगने हो । तेहीज लेहरां लेह हो ॥ होण
॥ १० ॥ उण कारण आइ इहां हो । तुमनें चेतावण काज हो ॥ पहलां जे चेते गुणी
हो । [illegible] जग लाज हो ॥ होण ॥ ११ ॥ आजथी दिन तीन अंतरे हो । तुमने

[illegible] ॥ महला हो। हुशार होयाने हो । बढोतन्न करो घरमांयहो ॥ वस्त्र भुषण जापत [illegible] । जिम रतन एक टाय हो ॥ होण ॥ १३ ॥ पुत्र वधुन पायेर हो ॥ पहराड भूष [illegible] ॥ धाने विश्वास्नर मणी हो । घरमाल मनल्हाय हो ॥ होण ॥ १४ ना [illegible] पत [illegible] हो । रहो परदेशे जाय हो ॥ नाहम रायजी मन विषे हो ॥ दुःख [illegible] हो ॥ होण ॥ १५ ॥ नेटा कहे रहजो मनो हो । जिम न ओलख कोइ [illegible] रहजो बगला हो । जिम नहीं हावो विख्यात हो ॥ होण ॥ १६ [illegible] नायेन हो ॥ भिलणो करिह मिलो जाग हो ॥ सुख मणन पासा घणा हो [illegible] भाग हो ॥ होण ॥ १७ ॥ इम उपाय किया थकां हो ॥ लाज [illegible] माट हो ॥ [illegible] भाग्य परवारको हो । कही जगतमें कहवाय हो ॥ [illegible] ॥ १८ ॥ [illegible] करग चनावा या हो । हितकारक थाणी थाय हो ॥ मान सो तो सु- [illegible] । आग नुमार्ग इच्छाय हो ॥ होण ॥ १९ ॥ वयण प्रमाण कयों सेठजी हो । मानधा घणो उपकार हो ॥ सुरी अदशी हुइ तदा हो ॥ सेठ करे नमस्कार हो ॥ होण ॥ २० ॥ ढाल दूजी देवी साखकी हो । सेठने हुवो विचार हो ॥ अमोलख ऋषी कहे

...रो ॥ आगल रसिक अधीकार हो ॥ ढोण ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ चिंतातुर ...
... । ऊंडो करे विचार ॥ अण चिंतो या आपदा । किम आइ किरतार ॥ १ ॥ नुरो
... में ॥ अन्यथा तो नहीं थाय ॥ मुज कुल लज्जा रक्षवा । पहलां गइ चेतान
॥ २ ॥ ... कारण दिन तीन में । करी थंडो वस्त सब ॥ निज कुटम्ब साथे लही ।
... आय ॥ ३ ॥ इम अपसोस विचार थी । निद्रा गइ रिसाय । सूता छे ...
... । पण ते तो नहीं आय ॥ ४ ॥ जेजे युक्ती योजवी । निश्चय कीनो शाह ॥ ...
... कार्य ... । ... दिन का नाह ॥ ५ ॥ ढाल ३ ॥ थारो गयोरे जोबन पाछो
... आवे ॥ यह० ॥ प्रांत ... मजन सहू । भोजनादि कर हुवा लहू । निश्चि-
... शेठ आवे ॥ पूर्व संचित जैसा फल पावे ॥ सेठजी सारा कुटंब
... । ... एकांत मांइ । ... में बेठावे ॥ पूर्व ॥ २ ॥ कहे सुणजो सहू चित लाइ
... वेरी आइ । आपणा हितकी चेतावे ॥ पूर्व ॥ ३ ॥ इत्ता दिन था सुख लो-
... । ... पूर्व पुण्य कीना । तिणे पाप दिशा आवे ॥ पूर्व ॥ ४ ॥ चेतो तीन दिवस मां-
... ॥ सहूवां पीयर दो पाठांचाइ ॥ घर धन अन्य ने भालावे ॥ पूर्व ॥ ५ ओर कुटम्ब
... । दूर देशे जायां रेइ । तो लज्जा अपणी रहावे ॥ पूर्व ॥ ६ ॥ में तो मानी ...

वेनी अरजी । अब कहो थांरी मरजी । नारी पुत्र तब फरमावे ॥ पूर्व ॥ ७ ॥ कीजे आप की जे इच्छा । हम तिणने नहीं करां मिच्छा । करो जिम सहू सुख पावे ॥ पूर्व ॥ ८ ॥ इम सुणी सेटजी हरख्या । सज्जन गुण वक्के परख्या । देवी कह्यो जिम करावे ॥ पूर्व ॥ ९ ॥ घणा नेणा दे वहुवा तांइ । पीयरी ये दी पहोंचाइ । फिर मुनीम ने वोलावे ॥ पूर्व ॥ १० ॥ हम सहू देशाटन जावां । पर देशे फिरी पाछा आवां । घणा दिन वीतसी दावे ॥ पूर्व ॥ ११ ॥ थांरो पूरो विश्वास आणी । घरकी मालकी करां थाणी । इम कही सहू भोलावे ॥ पूर्व ॥ १२ ॥ पाछली राते निकलवा तणो । संकेत कीयो सहू सज्जनें । एकही ठिकाणे पोडावे ॥ पूर्व ॥ १३ ॥ गर्गी महूर्त जब आयो । धन्न घणो लेइ साथ मांयो । पंच पर्मेष्टी समरावे ॥ पूर्व ॥ १४ ॥ चाल्या मन मानी दिशा मांइ । छेइ जीविण वल्लाइ । घर धन सज्जन छिटकावे ॥ पूर्व ॥ १५ ॥ गामांतरे जाइ रहीया । भोजन कर सुख सोइया । राते चोर धन लेजावे ॥ पूर्व ॥ १६ ॥ जागी देख्यो धन नहीं पायो । मनमें पस्तावो घणो आयो । सुरी वयणथी धीरप लावे ॥ पूर्व ॥ १७ ॥ जो घरके मांही रहता । तो सर्व गमाइ दुःख सहता । इणी परे मन समजावे ॥ पूर्व ॥ १८ ॥ इत्यामें नरको धरया । संतोष कर हम रहीया । आगे गमन सब करावे ॥ पूर्व ॥ १९ ॥

[illegible]

वाट पड़ा मागें मिल्या । धन वस्त्र सहू लूंट लिया । निराधार हुइ घवरावे ॥ पूर्व ॥ २० ॥ कर पग्नाचो आगे चल्या । काँटा भाटा वहू दुःख फल्या । किहां ग्राम किहां वन रहावे ॥ पूर्व ॥ २१ ॥ चारी पुल ग्राम मे जाइ । मेहनत कर धन उपजाइ । खान पान वस्त्र लावे ॥ पूर्व ॥ २२ ॥ मांजी देवे लिपाइ । छेड़ जीमी वस थाइ । मन चायो नो यथार्थ लावे ॥ पूर्व ॥ २३ ॥ इम करतां नित्य गुजारो । दुःख तणा दिन परहागा । कृत कर्म इम क्षपावे ॥ पूर्व ॥ २४ ॥ ढाल तीसरी अमोल भणी । जोवो करणी कर्म तणी । [illegible] रंवे ते सुखी थावे ॥ पूर्व ॥ २५ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ इम फिरतां [illegible] । काल कलाइ मांय ॥ वटपुर ग्रामज देखीयो । शहर वडो सुखदाय ॥ १ ॥ [illegible] कर [illegible] । आया आपण दूर ॥ अब फिरवा शक्ति नहीं । इहां करां उदर पूर ॥ २ ॥ काम काइ लगर्मा इहां । औलख से नहीं कोय ॥ दिन खुटाया पाप का । सहू [illegible] होय ॥ ३ ॥ शक्ती न भाडो देणकी । झोंपडी कर ग्रामचार ॥ मृत्तिका [illegible] । [illegible] पग्विार ॥ ४ ॥ चारुं भाइ वैपारने । फिरता ग्राम मझार ॥ अं- [illegible] । मांचन्न व्याप्यो अपार ॥ ५ ॥ ढाल ४ ॥ गौतम गमा की देशी ॥ [illegible] । नव करे इमो विचार ॥ देखो कर्म गती आपणी । कैसी उदय

हुइ इण वारजी ॥ करता मोटा २ वेपारजी । उपराजता द्रव्य अपारजी । फिरता वस्त्र गेणे भार जी । हिवे थइ रह्या निरधार जी ॥ भवी भव्य नव्य ना सांभलो ॥ आं ॥ १ ॥ पूरो पेट भरे जितो भाइ । कमा सका नहीं धन्न ॥ अन्न वस्त्र रा मांसा पड्या । तेहथी दुःखी हुयोछे तन्नजी ॥ रह्या ने पूरा न जतन्नजी । किम कर समजावा मन्नजी । किण रीत पालां इत्ता जन्नजी । इम किण पर खूटसी दिश जी ॥ भवी ॥ २ ॥ कोइ तुच्छ वेपार थी जी । पालां अपणो परिवार ॥ द्रव्य लागे नहीं तेहमां । एसो करिये विणज इणवार जी ॥ नहीं चहीये बीजारो आधार जी । नरवां कर्धा लाचार जी । नहीं कष्टसे जायां हार जी । एसो कोइ एक करो निराधार जी ॥ भवी ॥३॥ सेठ कहे भाइ सुहवो तो । छे कठीयारा नो काम ॥ नित्य काष्ट लावो वन थकी । तिणरा नहीं लागे दाम जी ॥ कोइ खुशामदी नो नहीं काम जी । आपणी पण पुगसी हाम जी । पण कष्ट पडे घणो चाम जी ॥ चारुंचन्धू धरी ते हाम जी ॥ भवी ॥ ४ ॥ कोइक कष्ट करी तिहां जी । कमायो थोडो वित्त ॥ रस्सी कुदाली खरीद ने ।का छडी धान्धी चारुं मित जी । जावे वन मांहे धर हित जी । दारुक भारी लावे नित्य जी

नवो नाणो गुणी जी । निरये नवो लागे भान ॥ निरय पीसी निपजायवू । सकला मधू कर मान जी । इम दिन आगे सन्मान जी । क्षुधा व्यापे असमान जी । मूल छोडे धी पान जी । इम करतां गुजरान जी ॥ भवी ॥ ६ ॥ एक दिन गया चारि जणा जी । मोटी के था वन मांय ॥ सविता उलंघी नीकल्या । केसरी झाडीये जाय जी ॥ काशी काष्ट ने भारी बंधाय जी । तब मेघ घटा उमंगी आय जी । तपेण लागी मोटी धाराय जी । चारो आयंन पिंता भराय जी ॥ भवी ॥ ७ ॥ सूर्य पुर आवे नदीनीर जी । रूपा आंपा वृष जाय । माल नाल तृषा संग । उतरयानो जाय लाग जी । चाल्या वहु दिशां धी भाग जी । मोटो निरधर धोज अथाग जी । पण न गिणे पिंता नो लागजी । आगो नदी दे पाणी अथाग जी ॥ भवी ॥ ८ ॥ कांठे एक भवीने भरी जी । पडजाणा जोइ वेण ॥ भवना पाच्यां छाती पिंपे । तब करना लाग्या पेण जी ॥ इणथी अलगा रहो सेण जी ॥ पलटनी बहु गंरण जी ॥ क्षुधा भी लागी दुःख देण जी । किरयो करणो कांइ रहेण जी ॥ भवी ॥ ९ ॥ समय २ चाले नहुं जी । आगो चावांने पग ॥ पाछा फिरया लाग्या । नदी तीरे जाणा क्रम जी ॥ पाछा आवे तिहां भाग जी । जल उछाला खाय अथग जी । मग आग सूतो लागो जग जी । तप जोवण लाग्या सगे जी ॥ भवी ॥ १० ॥

व॰ कुछ पांसे आवीया । वेर्यो पड्या उतंग ॥ मोती पान्धी एक डालवे । पडे नहीं नि-
॥ [illegible] जी ॥ टन्डथी पूजे घर२ अंग जी । बेटा चारुंही धरत उमंग जी । डाल चौथी
[illegible] जी । फही अमोलख अभंग जी ॥ भजी ॥ ११ ॥ दुहा ॥ अब्वी पूर उतर
[illegible] आव्यां अपणे गेह ॥ तात मातने भेटस्या । इम चउ कल्प तेह ॥ १ ॥ कृष्णपक्ष
[illegible] रहा । कृष्णोमस पूछा नित ॥ नेणार निज करना लखे । विसर्यो ते निज हित ॥ २
[illegible] नहीं उतरे हिये । शीतल थाजे थाय ॥ मरण एक तरु डालनां । वीजलियां झबका
[illegible] पाक तणा संजोग थी । सुरनी व्यापी अंग ॥ आपसमें चारों वदे ॥ रहो हुंशारी
[illegible] ॥ ४ ॥ प्राम फल खुटाश था । फोइक छडो थान ॥ जिमए काल अ-
[illegible] मिले मातने तात ॥ ५ ॥ ढाल ५ ॥ धण जारारे यह० ॥ सुणो भाईरे ॥ श्री
[illegible] दुःख मां थान मी आवडे ॥ सुणो भाईरे ॥ सुणो भाईरे ॥ जीव चिंतामें
[illegible] ॥ अन्य काम तिम प्रयडे ॥ सुणो भाईरे ॥ १ ॥ सुणो भाईरे ॥ मतारज पहे ताम
[illegible] मांहे उपजे केही ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ तेही कहो इणवार । जे जे मनमां आवही
॥ [illegible] ॥ २ ॥ सुणो ॥ अंगज पहे साहटीक । किमही काल खुटाडवो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥

इण सरखी दूजी नहीं ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ कहो पहली थे तीन ॥ पछे म्हारी कहस्यूं नहीं ॥ सुणो ॥ ४ ॥ सुणो ॥ श्री धर कहे भ्रात । शरम आवे कहतां मनरही ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ दुःख में ऐसी बात । न करवी पण कहूं सही ॥ सुणो ॥ ५ ॥ सुणो ॥ इण चिरियांर मांय । मेहल होवे सत खंडीयो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ रोशनी सुख सेज । भोग जोग मह मंडीयो ॥ सुणो ॥ ६ ॥ सुणो ॥ कुंवरी राजारी होय । रूपे रुडी संग करूं रली । सुणो ॥ सुणो ॥ यह मुज हिवडां विचार । प्रभू कृपा ए जासी फली ॥ सुणो ॥ ७ ॥ सुणो ॥ दूजो कहे ठीक बात । तुमने इण वेला आवइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ म्हारा मननी वात । तुमने देवुं दरशावइ ॥ सुणो ॥ ८ ॥ सुणो ॥ ऊनी चन्द्रावली होय । घृत प्रागन्न दर्भान संगे ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ मशालाए जगमग । गरमा गरम खावूं मन-रंग ॥ सुणो ॥ ९ ॥ सुणो स्त्रियादी परिवार । बेठुं गादी तकीया भरी ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ आइ शाल दुशाल । यह होवे तो मन रली ॥ सुणो ॥ १० ॥ सुणो ॥ तीजो कहे भ्रात । मुज मन यह नहीं चाहावइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ इच्छू मात्रिननी सेव । जो आग वाड मिलावइ ॥ सुणो ॥ ११ ॥ सुणो ॥ नित्य करूं माघिव भक्ती । नमं वी-णापाणी ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ इच्छित भोजन वस्त्र । मांगे जोवेवुं अर्पण करी ॥ सुणो ॥

.. ॥ सुणो ॥ मावित्र पावे सुख । तो फिर मुज दुःखको नहीं ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ कच मिथ्या ... आग । अब मनमा स्थिर हो रही ॥ सुणो ॥ १३ ॥ सुणो ॥ मदन कहे मुज विचार । मोटा ... मह् थी बणो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ कह्यांस्यु हँस सो सर्व । मूर्ख रहो मु ... हणो ॥ सुणो ॥ १४ ॥ सुणो ॥ नेह थी किम कहवाय । सहू कहे तूं कपटी घणो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ सुणो हमारी वात । दाखे नहीं मन तुज तणो ॥ सुणो ॥ १५ ॥ सुणो ॥ मदन कहे सुणो तघ । मुज मनरी अश्चर्य चरी ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ जो कृपा कर ईश ॥ तो मैं ... इच्छित वरी ॥ सुणो ॥ १६ ॥ सुणो ॥ अधीपती होवूं मेय । मोटा २ चार राजनां ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ हय गय दल परिवार । उठे वरूदावली गाजनां ॥ सुणो ॥ १७ ॥ सुणो ॥ वली राज पुत्री चार । परणु रूपे सुन्दरी ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ मिले अक्षय मुज ऋद्धि । तो सब इच्छा छूं भरी ॥ सुणो ॥ १८ ॥ सुणो ॥ ऋद्धि सिद्धि नव निध । लइ मिलु जो तात ने ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ तो देवुं सर्व सुख । शावासी दीजो जातने ॥ सुणो ॥ १९ ॥ सुणो ॥ इम सुणी ॥ तीनों वात । हड २ कर हँसी पड्या ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ वहावा मदन तुज मन । इम कहतां कर तस अड्या ॥ सुणो ॥ २० ॥ सुणो ॥ मदन वात धुंद माय ॥ असावध बेठा हुंतो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥

धक्के सलाग्यो तास। पडीयो पाणी मा खुतो॥ सुणो ॥ २१ ॥ सुणो ॥ उपको ते तत्काल। वही चाल्यो मजधार ते ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ तीनों चमक्या ताम। करवा लग्या हा हा कार ते ॥ सुणो ॥ २२ सुणो ॥ हिवे जोवो वक्त की वात। कह्यां सहूं सिद्ध थावइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ ढाल पंचमी सुविचार ॥ अमोलख ऋषि गावइ ॥ सुणो भाईरे ॥ २३ ॥ ० ॥ दुहा ॥ हाक सुणी भाइ तणी। वहता मदन कहे एम ॥ कह्या कार्य सहू सिद्ध कर। फिर मिलस्यूं भर क्षेम ॥ १ ॥ चल्या आगे मज्झ धारमें। चिंते जो आवे ग्वाड ॥ कदाक तिण माहे पडू। तो भांगे मुज हाड ॥ २ ॥ तव तिहां दामनी तेजमें। काष्ट वहतो जोय ॥ साहस धर तेहने ग्रह्यो। आधार अधिको होय ॥ ३ ॥ चड बेठ्यो तस उपर। जिम घोडे असवार ॥ पावडी बांधी काष्ट मुख। साही वाग तुखार ॥ ४ ॥ जल थल रचना देखता ॥ गाता जावे गीत ॥ हिवे सानिध करता मिले। ते सुण जो धर प्रीत ॥ ५ ॥ ढाल ६ ठी ॥ कामणगारो कूकडोरे ॥ यह० ॥ तिण अवसर श्री पुरसारे। पद्म ग्याती गुण वंतरे ॥ रहे करे कुल वेपारनेरे। सोभा नारी सोहंतरे ॥ १ ॥ आखडी आइ खडी रहेरे ॥ आं ॥ पण पूर्व अंतराय थीरे। द्रव्य घणो नहीं पासरे ॥ दुष्कर करे आजीविका रे इम दिनवीते तासरे ॥ आखडी ॥ २ ॥ एकदा सूभाग्यो

देयरे । धर्म घोष ऋषिराजरे ॥ बहू साधू संग परिवर्यारे । तारे जग जल झाजरे ॥ आं ॥ ३ ॥ आया श्री पुर उध्यान मांरे । उतर्या आज्ञा लेयरे ॥ तप संयम रत्त मुनीवरारे । मोक्ष साम्हे चित देयरे ॥ आ ॥ ४ ॥ माली लेइ भेटणारे । आया रिपुजय दरबाररे ॥ वोधी वधाइ मुनी आवीयारे । हर्ष्या सुणी अपाररे ॥ आ ॥ ५ ॥ चतुरंगणी शैन्या सजीरे । राणी कुँवर सहू साथरे ॥ अन्य घणा चाल्या हर्ष थीरे ॥ दर्शण करण सनाथरे ॥ आ ॥ ६ ॥ खाती काष्ट लेवा जावतोरे । जाता देखी बहू लोकरे ॥ मुनी उपदेश सुणवा तणोरे । पद्मने जायो सोकरे ॥ आ ॥ ७ ॥ आया सहू मुनी वंदीयारे । धर्म श्रवण ने काजरे ॥ जग हित करवा कारणेरे । दे उपदेश मुनीराजरे ॥ आ ॥ ८ ॥ धर्म एक सुख दाय नोरे । जेहनो दया छे मूल रे ॥ ओलखो जीव अजीव नेरे । ज्यों होवे सुख को सूलरे ॥ आ ॥ ९ ॥ जीव कह्या छे कायना रे । पृथवी अप तेउवायरे ॥ विना शपति ने त्रस छेरे । सुख दिया सुख पायरे ॥ आ ॥ १० ॥ निजातम सम जाणी ये रे । जीव भरी जह देहरे ॥ चार स्थावर में असंख्य छेरे । हरी में अनंता लेहरे ॥ आ ॥ ११ ॥ विनाशपति नर सारखी रे । कही श्री भगवान रे ॥ उत्पन तरुण ने वधता रे । रोग

थी तेवलाबरे ॥

और अनेक हरी विपेरे । मनुष्य शादेष्य जणायरे ॥ आं ॥ १२ ॥ तिण कारण नहीं दुह वियेरे । जो इच्छो निज हितरे ॥ पद्म सुणी ने चमकियोरे । चिंते ज्ञान ते चितरे ॥ आ ॥ १४ ॥ मुज जाती कर्म एह छेरे । किजीये कांइ उपायरे ॥ ऋषिजी कहे हरीया काष्ट नेरे । बन्धन काटणो नायरे ॥ आ॥ १५ ॥ तेहीज लीधी आखडीरे । द्रढ चडेत प्रणामरे ॥ आगे चाल्यो कंतार मेरे । एकदेव सोन्नेतामरे ॥आ॥१६॥ जात सुतारके एहनीरे । किम पालीसके करारे ॥ परिक्षा करनी सही एह नीरे । तेलाग्यो तस लाररे ॥ आ ॥ १७ ॥ अन्य मनुष्य देशाना सुणीरे । करी शक्ते पच्चखाण रे ॥ आया तिणही दिशा गयारे । मन माहें हर्ष आणरे ॥ आ ॥ १८ ॥ अवसर जोइ मुनीश्वरारे । कियो जिनपदे विहाररे ॥ तारे भव्य उपदेश थीरे । करे आतम उद्धाररे ॥ आ ॥ १९, ॥ परोपकारीं साधूजीरे । तीरे तारे संसार रे ॥ लघु कर्मी मारग लगेरे । जेसे पद्म सुताररे ॥ आ ॥ २० ॥ हिवे द्रढता त्याग कीरे । सुणीगों सहू नर नाररे ॥ ढाल छट्टी अमोलख कहेरे । आखडी होवे तैयार रे ॥ २१ ॥ दुहा ॥ त्याग परिक्षा पद्मनी । करण लग्यो सुर लार ॥ सहु काष्ट हरिया किया । शक्तिये वन मझार ॥ १ ॥ पद्म फिरे पण नामिले । सुखी लकडी तास ॥ रीतोही आयो घरे । सांज समय उदास ॥ २ ॥ नारी पूछे नाथ जी । खावन लाया आज ॥ तेक-

... गुरु दिया । मिलिया गुरु महाराज ॥ ३ ॥ हरीयो [redacted] न काटवो । हरीय
... ॥ सूको न मिल्यो लाकडो ॥ जोयो वन फिर ग्राम ॥ ४ ॥ तेहथी रीतो
... फिर प्रभात ॥ भूखा सूता दंपति ॥ व्यतिक्रमी ने रात ॥ ५ ॥ ढाल
... समकित मन स्थिर करो ॥ यह० ॥ त्याग निभावे वैरागीया । कष्ट द्रढ र-
... निश्चय दुखीया हुवे । दोनो भव माय ॥ त्याग ॥ १ ॥ पञ्च प्रभाते चालीया
... हाथ ॥ जाता घनो जोवता । हृदय जग नाथ ॥ त्याग ॥ २ ॥ निर्जीव
... भगना हुइ श्याम ॥ अंमर हाथ आया नेनहीं । हार्या तव हाम ॥ त्याग ॥ ३॥ ति
... पाताने घर ॥ भारज्या ओलंभो दीयो । किस्यो फंद भर्यो हेर॥ त्याग॥ ४ ॥
... भोगवू । काटी दो दिन भूख ॥ अवतो रहवाये नहीं ॥ गयो तन सूकू
... ॥ ५ ॥ काल तो जरूर लावजो । जे जातां लग हाथ ॥ नही तो घर
... थाना एक वात ॥ त्याग ॥ ६ ॥ पञ्चतो चुपको सुइ रह्यो । दूजे दिन
... २ धारीयो । बेठ्यो उत्तर वदन ॥ त्याग ॥ ७ ॥ चिंते घर जाइ
... करसी क्लेश ॥ सूतो तिहांइ तरू तले । चित जपनो जिनेश ॥ त्याग
... जोर इदता । चित्र रूप पसाय ॥ अती वध त्याचा लटकती । [redacted] काठी

। शिव तिलक छे भाल ॥ त्याग ॥ १० ॥ शंकर नाम उच्चार तो । आयो पद्मने पास ॥
आशीर्वाद देइ कहे । किम बेठयो उदास ॥ त्याग ॥ ११ ॥ पद्म कहे मैं ली आखडी ।
जैन मुनीवर पास ॥ हरीयो वृक्ष छेदूं नहीं । तीन दिन हुवा तास ॥ त्याग ॥ ११ ॥
सूक्यो लकड न मिल्यो । क्षुधा पीडे छे मुज ॥ तिण थी तन दुर्बल भयो । कह्यो वीतक
तुज ॥ त्याग ॥ १३ ॥ विप्र कहे मुख बन्धीया । फरेवी घणा होय ॥ दुःखी करे संसार
न ॥ जगकां बीज खोय ॥ त्याग ॥ १४ ॥ भोगोपभोगनी वस्तु जे । सरजी मानव
काज ॥ नर देह नारायण समी । सुख दीजे घटणाज ॥ त्याग ॥ १५ ॥ खान पान सुख
भोग में । नहीं पाप लगार ॥ आपणो शास्त्र इम कहे । छोड फंद निसार ॥ त्याग ॥
१६ ॥ सूतार कहे भूदेवजी । न कहो कूडो वचन ॥ जो शास्त्र इम उच्चरे । तो
किम हुवा वामन ॥ त्याग ॥ १७ ॥ भक्षा भक्ष गिणवा तणो । रह्यो नहीं काम ॥ माता
पत्नी एकसी । विष अमृत तमाम ॥ त्याग ॥ १८ ॥ जोसरज्या नर कारणे । वे स्वादी
कम ॥ स्वर्ग नर्क कुण जावसी । झूठा शास्त्र नेम ॥ त्याग ॥ १९ ॥ जैन विना मत फेनसो
। निग्रन्थ विन पाखंड ॥ दया विवेक धर्म छे । ए मुज श्रधा अखंड ॥ त्याग ॥ २० ॥

१ आकाश

मृर्णा विबुध चुपको रह्यो । पाम्यों चित चमत्कार ॥ ढाल सात अमोलख कही ॥ धन्य २ पद्म सुनार ॥ त्याग ॥ २१ ॥ ❁ ॥ दुहा ॥ नभ में घुघरी घम घमी । दशो दिश हुयो प्रकाश ॥ देव आइ चरणें नम्यो । करे नम्र अरदास ॥ १ ॥ अज्ञ अधर्मी अजाण में । आयो डिगाबा काम ॥ जेहथी तुम उपजीविका । तेमा धरी द्रढ हाम ॥ २ ॥ तीन दिवस कष्ट धां मह्यो । पण न चलायो मन ॥ उत्तर पण योगज दियो । थोडेही ज्ञान रमन ॥ ३ ॥ क्षमो अपराध कृपा करी । मांगो जे तुम चहाय ॥ धन्य जनक जननी जेह । तुम सरीखा जन्याय ॥ ४ ॥ पद्म प्रक्षी अचंभीयो । प्रत्यक्ष धर्म के फल ॥ रंगाणो धर्म रग रगे । भइ श्रधा निश्चल ॥ ५ ॥ ढाल ८ मी ॥ राम आया जमाना म्वोटा ॥ यह ॥ भाइ धर्म सदा सुख कारी । पूरे इच्छा पाले ज्यांरीरे ॥ भा ॥ आं ॥ पद्म कहे देव हूं किम्यो मांगू । हुइ मुजपर गुरु कृपारीरे ॥ भा ॥ १ ॥ सर्व मनोर्थ पूर्ण हार्ग । या आखडी अछे हमारीरे ॥ भा ॥ २ ॥ देव दर्शन निर्फल नही जावे । तेहथी हुकम दो कांइ उच्चारीरे ॥ भा ॥ ३ ॥ इम अग्रह सुरतणो जाणी । पद्म कहे जो इच्छा [illegible]

गगाम गयो निज ठामे । पक्ष नी नित हर्ष्यारीरे ॥ भा ॥ ७ ॥ दिन उगा गुरु दर्शन समरीया । द्रव्य ते साथ लीधारी रे ॥ भा ॥ ८ ॥ आयो निज घर मन्थी वताइ । करी जोड घर नारी रे ॥ भा ॥ ९ ॥ कांइक तो आज लाया दीसे । उभी होइ सत्कारी रे ॥ भा ॥ १० ॥ रात रह्या था आप किहां जा । निज बालाने विसारी रे ॥ भा ॥ ११ ॥ घर अंदर जाइ पोटली खोली । अपार द्रव्य देखाडी रे ॥ भा ॥ १२ ॥ धर्म पसाये दुःख दूर टलीया । देव संतुष्ट थयारीरे ॥ भा ॥ १३ ॥ अब कोइ मेहनत करनी न पडसी । थास्यं मन चिंत्यारीरे ॥ भा ॥ १४ ॥ सूतारणी घणी हर्षानंदे । करे भोजन तयारीरे ॥ भा ॥ १५ ॥अष्टम तप को परणा कीधो । रस हुइले इच्छारीरे ॥ भा ॥ १६ ॥ सूखे समाधे सूता निद्रामें । तब देव स्वपन दिधारीरे ॥ भा ॥ १७ ॥ दिनउगा नित्य सूखो लगाड । नदीमें अवसी वह तारीरे ॥ भा ॥ १८ ॥ कर लम्बायां हाथमें आवसी । इच्छित लीजो घणारीरे ॥ भा ॥ १९ ॥ जाग्रत हुइ सत्य स्वपन संभार्यो । देवता दीधा जाणगारी रे ॥ भा ॥ २० ॥ चल आया सरीताने कांठे । पूर जातो जोयो वारीरे ॥ भा ॥ २१ ॥ लोक घणा जोवाने आया । तमाशा अश्चर्य कारीरे ॥ भा ॥ २२ ॥ आगल सूणीयों मदन चरित्र । ढाल आठ अमोल उच्चारीरे ॥ भा ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा

[illegible] अवसर मे नहीं दिये । काष्ट तुरी ज्यों स्वार ॥ मदन जी अल्प क्रिड़ा करन ।
[illegible] गया पार ॥ १ ॥ धी पुरने हिय आवतां । नव उग्यो दिन कार ॥ दाट
[illegible] रूपं । ओगे मदन कुंवार ॥ २ ॥ [illegible] साद करे कहाडीयो । कोडक
[illegible] ॥ उपकार होसी अती घणो । मान रयूं मैं अभार ॥ ३ ॥ हा हा कार सहुकार
[illegible] नर नाथ ॥ जीवित वाहलो सहु नणीं । मरण मुखे कुण धाय ॥ ४ ॥
[illegible] यह करे ॥ जोइ मदन पुण्यवंत ॥ नल कुंवर ने सारीखो ॥ साहस वंत
[illegible] ॥ ढाल ९ मी ॥ इण सरवरीयारी पाल ऊभी दोइ नागरी ॥ यह० ॥ पन्न
[illegible] दीर्घ करतव कियो ॥ हो सुजाण ॥ दीर्घ करतव कियो ॥ सहायक देवने
[illegible] पे चित दियोहो ॥सु०॥ ते काष्ट ॥ तित्क्षिण मुडीयो काष्ट । आया कर
[illegible] ॥ सु० ॥ आयो ॥ उतरी मदन तत्काल । रह्या तस कंठने हो ॥ सु० ॥
[illegible] ॥ मात जी महा उपकार । आज मुजपे कियो हो ॥ सु० ॥ आज ॥ मरण
[illegible] छुडाय । दान जीतव दियो हो ॥ सु० ॥ दान ॥ तुम सम अवर न कोय । म्हारे
[illegible] मे हो ॥ सु० ॥ म्हारे ॥ विनय वचन सुणी पद्म । हुयो मोह रक्त मे हो ॥सु॥

ने मिल्यो पुत्र । सकल गुण युक्त यो हो ॥ सु० ॥ सकल ॥ आंणंदी चांप्यों उर । घर
ले आवीया हो ॥ सु० ॥ घरे ॥ कहे नारीने ए पूत । पुण्य जोग पाइया हो ॥ सु० ॥
पुण्य ॥ ३ ॥ माता कही लाग्यो पाय । सुतारिण ने तदा हो ॥ सु० ॥ सुता० ॥ चिरं-
जीवो दी आसीस । मस्तक कर ठवी यदा ॥ होसु ॥ मस्तक ॥ जीमायो सु अन्न ।
भोजन निपावइ हो ॥ सु ॥ भोज ॥ उत्तम वस्त्र भूषण । तस पहरा वइ ॥ होसु ॥
तस ॥ एकांत बेठा सुनार । पूछे मदन भणी हो ॥ सु ॥ पूछे ॥ किम पडीयो जल धार ।
उत्पति कह तुज तणी हो ॥ सु ॥ ४ ॥ मदन कहे हूं वाणिक। कर्म उदय आवीया हो ॥
सु॥कर्म॥ कर्या कठीयारा को काम । काष्ट शिर वाहीया हो ॥ सु ॥ काष्ट ॥ ५ ॥ एकदा
भारी काज । गयो कंतार मे हो ॥ सु ॥ गयो ॥ वृष्टि अणाचिंती थाय । पड्यो जल धार
मे हो ॥ सु ॥ पड्यो ॥ लाग्यो हूंडो हाथ । तिरी इहां आवीयो हो ॥ सु ॥ तिरी ॥
आप किया उपकार । सुख सहू पावीयो हो ॥ सु ॥ सुख ॥ ६ ॥ सुनार सुणी हर्षाय ।
कहे सुण नंदना हो ॥ सु ॥ कहे ॥ ए छे तुज घर धन । जाणे मति फंदना हो ॥ सु ॥
जाण ॥ निज इच्छा जिम तूं । इहां सदा राहीयेहो ॥ सु ॥ इहां ॥ सीखो हमारो कर्म ।
चर्हाये मां वणाइय ॥ होसु ॥ चाहीं ॥ ७ ॥ आणंद माहे मदन । रहे पदम घरे ॥ होसु ॥

गंह ॥ बुद्ध जोग ग्रही काष्ट । केइक वस्तु घडे ॥ होसु ॥ केइ ॥ देखी हर्षे सुतार । अहो बुद्ध सागर ॥ होसु ॥ अहो ॥ थोडा में सीख्यो सर्व । हम काम कीनो सरु ॥ होसु ॥ हम ॥ ८ ॥ जाणवा तुज प्रतित । में काम कराइहो ॥ होसु ॥ में ॥ अपणे छे देव सहाय । करेते चावीयो ॥ होसु ॥ करे ॥ छोडीने सब कर्म । धर्म अब कीजीये ॥ होसु ॥ धर्म ॥ करो सद्गुरुकी भक्ती । अर्हंत स्मरीजीये ॥ होसु ॥ ९ ॥ ए थइ दशमी ढाल । पुण्यवंत पग २ सुखी ॥ होसु ॥ पुण्य ॥ मदन तणी परे जोवो । कहे अमोलख ऋषि ॥ होसु ॥ कहे ॥ रसीलो मदन चरित्र । आगे भव्य सांभलो ॥ होसु ॥ आगे ॥ कारण थी धर्म काज । न रखीये आमलो ॥ हो ॥ सु ॥ १० ॥ दुहा ॥ एक दिन मोटो काष्ट ले । पद्म मदन बोलाय ॥ तूं कहे सो इण काष्ट की । देउं वस्तु वणाय ॥ १ ॥ मदन कहे म्हारे मनं । गगन उडनरी आय ॥ शक्ती होवे तो करो । धारूं जहां ले जाय ॥२॥ पद्म नाग नीपाइयो । गरुड खंग शिरदार ॥ कला रखी तिणरे विषे । उडे जे इच्छा चार ॥ ३ ॥ मदन कृष्ण का नंदना । थारो नाम मदन ॥ कृष्ण वाहन ए गरुड छे । कर तूं नहरी चमन ॥ ४ ॥ कला सहु देखाइ तस । मदनजी हर्ष्या अपार ॥ अयं म्हारा

[illegible]

गा माहरा मंन कुंवार ॥ पुन्यवंत पग २ लक्ष सत्कार ॥ आ ॥ मदन कहे मुं [illegible]
ह । अर्धा अंतरिक्ष मझार ॥ पूंछ करुं मुज मन की पुरी । तत्क्षिण हुवा तैयार ॥
[illegible] ॥ १ ॥ कर प्रणाम सुतार नाल ने । हुवा गरुड असवार ॥ यथा विधी से कला
[illegible] । उड्यो गगन मंझार ॥ देख्यो ॥ २ ॥ वन गिरि ग्राम अनोखा जोतो । फिर
[illegible] बार ॥ सांइ पुर के पासज आया । दीठो शेहर मनोहार ॥ जो ॥ ३ ॥ ति-
[illegible] एक वनीं उतर्यो । गरुड कला संवार । वड की कोतर मांही छिपाइ । आया
[illegible] मझार ॥ देख्यो ॥ ४ ॥ देव पुरी सम नगरी देखी । भवन विचित्र प्रकार ॥ अलि
[illegible] पुरी । सुशोभित बजार ॥ देख्यो ॥ ५ ॥ एक हाट देखी अति मोटी । माल
[illegible] सार ॥ काम करे तिहां मानक बहुला । श्रृंगार अलंकार ॥ देख्यो ॥ ६ ॥
[illegible] नगीना टेंक । मेठा शेठ सिरदार ॥ कुंदाला रूपाला रंगीला । भूषण वस्त्र
[illegible] ॥ देख्यो ॥ ७ ॥ मदन जी ऊभा रह्या तिहां आ । जाणी श्रेष्ठ उदार ॥ सेठ
[illegible] पास बेठाया ॥ जोड विनय अनुसार ॥ देख्यो ॥ ८ ॥ मदन पुण्य प्रताप हाटे
[illegible] मझार ॥ खपीयो माल घणा ते अवसर । उचित नफे वैपार ॥ देख्यो ॥
[illegible] सेठ चिन्ते । भयो अचर्य अपार ॥ इसो माल कदी नहीं खपीयो । आज

किरतार ॥ देखो ॥१०॥ यो पुण्याइ इणीं कुँवर फी । पगतणे श्रन्गार ॥ जो सदा
मुज पासे । तो भराय भंडार ॥ देखो ॥ ११ ॥ प्रेम धरीने पूछे कुँवर थी । किणी
जात पांत थाणी प्रकाशो । इहां आया किण द्वार ॥ देखो ॥ १२ ॥ म-
प्रदेशी । माणिक घर अवतार ॥ पेट भरणने फिरुं प्रदेशे । इहां न ओलख-
णहार ॥ देखो ॥ १३ ॥ विधामो जोयु इण मामे । जो मिले कोइ रखनार ॥ तो तिहां
रही दिवस गुजारुं । आयो इहां इम धार ॥ देखो ॥ १४ ॥ इम सुणी शाहजी हर्पाया ।
फिर बोले धर प्यार ॥ किस्यो पदलो लेइने रहस्यो । ते करो शिघ्र उच्चार ॥ देखो ॥
॥ १५ ॥ किस्यो काम करास्यो मुजस्युं । ते करो पहला जहार ॥ नहीं गुलामी करवा
। फिर कहुं मे पगार ॥ देखो ॥ १६ ॥ सेठ कहे यहू काम करनारा ॥ फिकर न
लगार ॥ सदा म्हारे पासज रहजो । साथ चलो दरवार ॥ देखो ॥ १७ ॥ सुणी म-
हर्षाइ बोले । लोभ न मुज लगार ॥ उत्तम अन्न नित्य पेट भरी दो । सजू सारो श्रृं
गार ॥ देखो ॥ १८ ॥ यह कबूल जो आप करो तो । रहस्यु आपके लार ॥ मानी सेठ
रख्या । मज़न ने निज आगार ॥ देखो ॥ १९ ॥

२० ॥ पुण्य पसाय मदन सुख पाया रहे तिहां सुख मझार ॥ दशमी ढाल अमोल प्रका-
शी । आगे मन्योग अधीकार ॥ देखो ॥२१॥@॥दुहा॥ तेहीज मेहंद पुरी तणा । राजा केतु
मण ॥ प्रमला नमे सुन्दरी । नमण खमण मधू वेण॥१॥ तस उदरसु ऊपनी। कन्या रति अनुहार
॥ रंभा मंजरी रंभासम । मोहन गारी नार ॥ २ ॥ उपवय मद माती थइ । चहाय हुइ भ-
रतार ॥ जोगी जोडी ना मिल्या । रही अवस्था कुँवार ॥ ३ ॥ एक दिन न्हाइ सज थइ
। कर मोले सिणगार ॥ इच्छित नर वरवा भणी । बैठी गोख मझार ॥ ४ ॥ सहेली सा
। थिमां । जोवती पंथा चार ॥ जे जोगो आइ मिले । तस आगे अधिकार ॥ ५ ॥
... ११ मी ॥ तूं जाय कहीये मांय ॥ यह ॥ तिण वेला राज मांय । वस्तु जोइ ए ॥
... यो श्रेष्टी घरेग ॥ नृपत जी मंग्गाए । ते ले चालीये ॥ सुणी हर्ष सेठजी धरे ए
॥ सज पोते सिणगार । राज सभा जिस्यो ॥ मदन ने पण सजावीयो ए ॥ नोकर
न मिर माला । दे इवहु परे ॥ ठाट वहु धरावीयो ए ॥ २ ॥ चाल्या मध्य वजार । मराय
भवन तले ॥ मदन जी लारे संचरे ए ॥ राय कन्य तिण वार । कंतने कारणे ॥ देखती
मार्गे जे फीरे ए ॥ ३ ॥ जोइ काम कुँवार । योवन मद भर्यो ॥ सुन्दर सोम्यता मन व-
सी ए ॥ ए पर देशी कोय । राय कुँवर अछे ॥ फिर न मिले जोडी इसी ए ॥ ४ ॥

। लिखी तत्काल । मननी घातडी ॥ थोडामें ध्रिती पणी ए ॥ देवे सहेली हाथ । हा
ीपे । शिघ्र जाइ कुँअर भणी ए ॥ ५ ॥ ततले आया नजीक । मदन मोहन तिहां
जे ऊंचो जोइयो ए ॥ मार्यो नेणना बाण । रायनी कन्या का ॥ सेन करी ऊभो रह्यो
६ ॥ समजो चतुर सुजाण । कहे तव सेठने ॥ आप आगे पधारी ये जी ॥ मुजने व
। एथ । इमणा नीवेड ने ॥ शीघ्र आवूं अवधारीये जी ॥ ७ ॥ लघूनीत करता जा
आगे चल्या ॥ इथी कुँअर ऊभा रह्या ए ॥ सहेली दोडी आय । पल ते करदीयो ॥ द
भेद मदन लह्यो ए ॥८॥ कहे दासी ने तेह । जाइने की जीए ॥ तुज बाइने इण
ए रात ॥ गयां एक जाम । वार सहू बन्ध करी ॥ रहजो मेहल ने उपरे ए ॥१०॥
ड की खुशि राख । रहजो जागता ॥ हूं आस्यू अंतलिख थी ए ॥ झूठी न मानो
। अर्था जाउं छुं ॥ काज थसी ए सीख थी ए ॥ १० ॥ मदन फिर्या तत्काल । ह
सहेलडी । अश्चर्य करती ते गइ ए ॥ कहे कुँवरी थी उमंग । बाइजी सूणो ॥ करामा
ए नर सर्ग ए ॥ ११ ॥ सुर विद्या धर एह । भरीयो गुण नीलो ॥ बल रूप बुद्धि
पुणो जी ॥ कहीं अचंभ की वात । प्रिती थी भरी ॥ जेतो चित स्थिरे सुणो जी ॥ १२

बन्दोवस्त सहू । जोगो जोडो जग जुवेजी ॥ १३ ॥ सुण कुँवरी हपोय । वलग घडी गिणे । चट पटी लागी मिलण कीजी ॥ कंन्या व्यावनी ताम । सामग्री सजी । गुप्त पणे पतिहां छिलणकी जी ॥ १४ ॥ ऊपर गोखडा मांय । मित्राणी संगे । प्रेम तणी वातां करे जी ॥ दिन लगे जुग सुमान । मुशकले आथम्यो । सहू दार वन्ध किया वंर जी ॥ १५ ॥ सजीया सहू सिणगार । छिपके सहू तिहां ॥ वणी रती अनुहारसी जी ॥ धेठी गोखे आये । व्रंग नभ मे ठवी । आषाढ मेघ जल धार सी जी ॥ १६ ॥ लागी लग्न अनीमन ॥ कच आइ मिले । घडी जावे वर्षा समीजी ॥ जो जोवे सणकार । चमके चित मे ॥ नेणा जावे तिहां रमीजी ॥ १७ ॥ हिवे मदन करामात । श्रोता सांभलो ॥ ढाल थइ एकादशीजी ॥ जेहवो जेहनो लेख । तेह थो नीपजे । अमोल कहे हुइ जिशी जी ॥ १८ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ दरवारे दीधो घणो ॥ सेठजी तवही माल ॥ लाभ घणो उपराजीयो । मदन पुण्ये ते काल ॥ १ ॥ हर्ष्या सेठजी अती घणा । जाणी मदन पुण्य वंत ॥ पाछा आया निज घरे । मदन साथ धर खंत ॥ २ ॥ सन्ध्या समय सेठथी । मदन करे प्रकाश ॥ आज जामनी जाइने ॥ रहस्यूं देवी आवास ॥ ३ ॥ साधन करस्यूं मंत्रनो ॥ छे जरुरी काम ॥ आज्ञा दीजे मुज भणी । प्राते आस्यूं आम ॥ ४ ॥ सेठ

१ और
२ भाग

मुणी सो वीजीये ॥ जिम सुख तुमने थाय ॥ दिमही प्राते आवीये । जिन हममन हर्पाय ॥ ५ ॥ ढाल १२ मी ॥ आठ कृवा नव वावडी पणी हरीरे ॥ यह० ॥ शिव आया नव गामां ॥ मदनेश्वरजी ॥ मनमें परी आणंद ॥ हो मन मोहनजी ॥ अम्य कोन्वर थी उतराया ॥ मदनेश्वरजी ॥ वेणु देव वसु नंद ॥ हो मन ॥ १ ॥ क्ला जमाड तेहनी ॥ मद ॥ यथा योग्य तत्काल ॥ हो मन ॥ आरुढ हुवा सावध पणे ॥ मद ॥ गया गगन मन चाल ॥ होमन ॥ २ ॥ आया राय सदन पर ॥ मद ॥ चौगिरदा फिर जोय ॥ हो मन ॥ पंदोबस्त पुरुक देखीयो ॥ मद ॥ ज्यों भेद न प्रकट होय ॥ हो मन ॥ ३ ॥ ग्वाहो गारीने मारगे ॥ मद ॥ पेठा मांय मदन ॥ हो मन ॥ कुँवरी झट ऊभी हुइ ॥मद॥ थाभित हर्प वदन ॥ हो मन ॥ ४ ॥ सत्कारी मधुरी लये ॥ मद ॥ पावन कीधो भवन ॥ हो मन ॥ कृतार्थ करी मुज भणी ॥ मद ॥ देभछभ दर्शन ॥ हो मन ॥ ५ ॥ जब थी दीदार पेखीया ॥ मद ॥ तब थी आश अपार हो ॥ मन ॥ अब ते पूर्ण कीजीये ॥ मद ॥ कर गृही सफल अवतार हो ॥ मन ॥ ६ ॥ सामग्री सहू सज्ज छे ॥ मद ॥ लग्न तणी इण ठाम ॥ हो मन ॥ गंधर्व लग्न करी उहां ॥ मद ॥ पुरी जे शिघ्र हाम ॥

हूं गाणिक कुंठे उपनों ॥ सुणो ॥ कुँवरी ॥ विस मयो जावे हात ॥ हो मन ॥ ८ ॥
तागी जोडी जो मिले ॥ सुणो कुँवरी श्री ॥ तो जिनित सुख पाय ॥ होमन ॥ राय पुत्र
राजा घरे ॥ सुणो ॥ रमाथी सोभा भाग ॥ होमन ॥ ९ ॥ तिण कारण पहली कहुं ॥
सुणो ॥ मन मूको जोडू रूप ॥ होमन ॥ गाणिक नै वर कुंन घणो ॥सुणो कौ॥ कहुंते सु-
णीने करम ॥ होमन ॥ १० ॥ उठणा पालखी रातरा ॥ सुणो ॥ धान चूरेणी फेर ॥ हो
म ॥ विरम कुंगे जेनले ॥ सुणो ॥ लेवट जावे जलनेर ॥ होम ॥ ११ ॥ नीर लाइ अ-
र्थादिक ॥ सुणो ॥ कहो निपजावो अन्न ॥ होमन ॥ जीमावो परिवारने ॥ सुणो ॥ रखी
प्रगट बहु मत ॥ होमन ॥ १२ ॥ सासू सुसरा जेठाणी दी ॥ सुणो ॥ भोलावसी घणा
काम ॥ होमन ॥ ते तो सहु करना पडे ॥ सुणो ॥ विसामो नहीं नाम ॥ होमन ॥ १३
॥ मांजणों लीपणों रांधणों ॥ सुणो ॥ इत्यादी घणा काज ॥ अहो निशी करवा पडे ॥
सुणो ॥ तिहां विसरो तुम लाज ॥ होमन ॥ १४ ॥ पाछे पसतावो पडे ॥ सुणो ॥
जन्म गो सूरतां जाग ॥ होमन ॥ तेहथी मुजने मोकलो ॥ सुणो ॥ जाइ रांनूं
निज ठाम ॥ होमन ॥ १५ ॥ उपजगे तुम आवीया ॥ सुणो ॥ पिता नहीं पर-
णाय ॥ होमन ॥ तिणथी इच्छो मुज भणी ॥ सुणो ॥ घणा उतावला थाय ॥

१ भमी

होमन ॥ १६ ॥ उतावला ते वावला ॥ सुणो ॥ धीरा गंभीरा हो ॥ होमन ॥ तिण कारण समता धरी ॥ सुणो ॥ कुल घर लज्जा जोय हो ॥ मन ॥ १७ ॥ राजा जी गुण वंतछे ॥ सुणो ॥ परणासी थोडे काल ॥ होमन ॥ जोगी जोडी मिलावसी ॥ सुणो ॥ अवसर जोयो हाल ॥ होमन ॥ १८ ॥ तुम हमनी औलख नहीं ॥ सुणो ॥ वली नहीं संबन्ध ॥ होमन ॥ शुभ कार्य करतां थकां ॥ सुणो ॥ हृदय होवे अन्ध ॥ होमन ॥ १९ ॥ हूंआयो तुम संकेत थी ॥ सुणो ॥ पदीधो हित सीख ॥ होमन ॥ रखे माठो लागे मन विषे ॥ सुणो ॥ नधरजो कोइ तखि ॥ होमन ॥ २० ॥ शिघ्र जवाब हिवे दी जीये ॥ सुणो ॥ जाउं निज ठिकाण ॥ होमन ॥ अमोल कही ढाल चारमी ॥ सुणो ॥ देखो मदन गुण ज्ञान ॥ होमन ॥ २१ ॥ ० ॥ दुहा ॥ रंभा सुणो वचनए । अश्चर्य पाइ अपार ॥ उभय तरुण एकांतमें ॥ मन राख्यो इण वार ॥ १ ॥ सरल संतोषी सील वंत ॥ इण सम अवरन नर ॥ चिंतामणी मुज कर चड्यो । कोइ पुण्य अनुसर ॥ २ ॥ रुप अनोपम काम सम । अमृत वयण उचार ॥ सुसंस्थान संथित तन । बुद्धिप्रबल गुण धार ॥ ३ ॥ जाती कुलथी काज स्युं । मुजने गुणथी काम ॥ जो पहवा करथी गया ।

मधुरस्वरे ॥ पभणे सुणजा सांय ॥ ५ ॥ ढाल ॥ १३ मी ॥ हूं तुज आगल सी कहूं क-
नैया ॥ यह० ॥ कर जोडी विनंती करूं ॥ वालेश्वर ॥ लुली २ करूं अरदास हो ॥ केस
रिया लाल ॥ निठुर वचन इन उच्चरी ॥ वालेश्वर ॥ नहीं कीजे नीरास हो ॥ केसरिया
लाल ॥ १ ॥ अबला नी अर्ज अवधारीये ॥ वालेश्वर ॥ आं ॥ मुजने तुमचो आधार
हो ॥केसरी॥ धन सुख राजमेंनहीं चहूं ॥वाले॥ हूं गुणीने इच्छनारहो ॥ के ॥ अब ॥ २ ॥
यथा जोग जोडी मिली ॥वाले॥ धैर्यकिम धरे मनहो ॥ के ॥ पुनर्पी ते किम पामीये ॥वाले॥
परदेशी नो वतन हो॥के॥अ॥३॥ जाती कुलगुण थी लह्यो ॥वाले॥ पूछवा नो नहीं कामहो ॥के॥
हूं लो भाणी गुण देखने ॥ वाले ॥ अवर नहीं मुज हाम हो ॥ केस ॥ अब ॥ ४ ॥ कहे सो
म्हा करस्यूं सही ॥ वाले ॥ यथा शक्त में काज हो ॥ केस ॥ काम थी सुरती ना रहे ॥
वाले ॥ ते मांहे किसी लाज हो ॥ केस ॥ अब ॥ ५ ॥ अण विचार्यो जे करे ॥ वाले
॥ ते पाछे पस्ताय हो ॥ केस ॥ हूं तो परिक्षा कर चहूं ॥ वाले ॥ चिंतामणी जाणी
पाय हो ॥ केस ॥ अब ॥ ६ ॥ हूं गुण जोइ आपका ॥ वाले ॥ निश्चय कर्यो मन माय हो
॥ केस ॥ बीजो नर वांछूं नहीं ॥ वाले ॥ जाणुं तात ने भाय हो ॥ केस ॥ अब ॥ ७ ॥
हिवे ताण नहीं कीजीये ॥ वाले ॥ ली मुज परिक्षा पुर हो ॥ केस ॥ वातां में वक्त घणी

[illegible] ॥ [illegible] ॥ हिवणा उगारी मूर हो ॥ केस ॥ अंच ॥ ८ ॥ वरस्यों तो औषस्यूं सही ॥ चाले ॥ [illegible] पातां एक वात हो ॥ केस ॥ इणापर छिटकाव सो ॥ चाले ॥ तो प्राण [illegible] हो ॥ केस ॥ अंच ॥ ९ ॥ जब थी मुज दर्शन भया ॥ चाले ॥ तब थी तर [illegible] ॥ केस ॥ हिवे इन्द्र पुरी करो ॥ चाले ॥ पावन कीजे घदन हो ॥ केस ॥ [illegible] १० ॥ इत्यादी गुणी मदन जी ॥ श्रोता जन ॥ चिंते ऊंडो अपारे हो ॥ विवेकी [illegible] ॥ निश्चय थइ रागणी ॥ श्रोता ॥ ताण्यामें नहीं सार हो ॥ विवेकी लाल ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ इच्छित लक्ष्मी आ मिली ॥ अपतो विलम टेलाय हो ॥ विवेकी ॥ हुं-कारो तदा भयों ॥ श्रोता ॥ तव कुँवरी हर्षाय हो ॥ विवेकी ॥ अंच ॥ १२ निलाणी की [illegible] ॥ श्रोता ॥ [illegible] आप समाय हो ॥ विवे ॥ वरमाल मदन कंठे ठवी ॥ श्रो ॥ मदन मुद्रा पहराय हो ॥ विवेकी ॥ अंच ॥ १३ ॥ इणाविध लग्न समाचरी ॥ श्रोता ॥ तिहां रह्या रोप जामहो ॥ विवे ॥ कोल कयों काल आवस्यूं ॥ श्रोता ॥ गरुड [illegible] जाम हो ॥ विवे ॥ अंच ॥ १४ ॥ होश्यारी से रहजो तुमे ॥ श्रो ॥ वात रखे प्रगटाय हो ॥ विवे ॥ अवसर उचित करस्यां सही ॥ श्रो ॥ इणपरे मदन पेलाय हो ॥
[illegible]

कर्म ॥ जोडी जिम निरवाह जो ॥ वाले ॥ जन्म भर एकतार हो ॥ कस ॥ अव ॥
अग्नाम्नन देठ संचर्या ॥ श्रो ॥ व्योमे मार्ग मद्नेश हो ॥ विवे ॥ प्रेमातुर कंन्या भइ ॥
श्रोता ॥ नेणा नीर वरसेश हो ॥ विवेकी ॥ अव ॥ १७ ॥ सहेली हाँसी करे ॥ श्रोता ॥
मिश्र हुया मह काम हो ॥ विवेकी ॥ हिवे हूं जावूं मुज धरे ॥ श्रोता ॥ दोपहेरे आव-
स्युं आमहा ॥ विवे ॥ अव ॥ १८ ॥ सहेली गया पछे ॥ श्रो ॥ उजागराने जोग हो ॥
वीव ॥ आलम्न आयो अंगमें ॥ श्रोता ॥ लोटी सेजमें छोग हो ॥ विवे ॥ अव ॥ १९ ॥
निद्र आइ घरा दियो ॥ श्रो ॥ करती उटण विचार हो ॥ विवे ॥ परवस हुइ ते तत्क्षिणे ॥
श्रो ॥ होव ज होणहार हो ॥ विवेकी ॥ अव ॥ २० ॥ गम नहीं क्षिण अंतर तणी ॥
श्रोता ॥ ज्ञानी वचन प्रमाणहो ॥ विवे ॥ ढाल तेरे अमोलख कही ॥ श्रो ॥ ते सुणो
आग बयान हो ॥ विवेकी ॥ अव ॥ २१ ॥ ⊛ ॥ दुहा ॥ जक्त विपय प्रकाशतो ॥
उगा नव दिनराय ॥ राणीं चिंते मन विषे । रंभा जागी नाय ॥ १ ॥ धाय ॥ मात भेजी
तिहां । ला चाहने जगाय ॥ सिरावणी वेला हुइ ॥ ते किम आइ नाय ॥ २ ॥ धाली
आइ जोइयो । गइ मनमें धस्काय ॥ हाय २ यो रातमां ॥ कुण कीधो अन्याय ॥३॥ एकरात रही
यहां । नमां थयो अकाज ॥ राय राणीने दाखवुं ॥ जिम रहे म्हारी लाज ॥४॥ थर २ अंग

भुजावर्त ॥ आइ राणीने पास ॥ नेण नीर वर्षावती ॥ ऊभी न्हांख निश्वास ॥५॥ ढाल१४मीं ॥ राघव आवीया हो ॥ यहदेशी ॥ देख राणी धावरी कहे ॥ छेवाइने कुशल ॥ इम किम ... थइ तूं ॥ कारण कांइ कले ॥ १ ॥ सुगणा सांभलो हो । होणहार स्वरुप ॥ आं ॥ ... कहे ने कांइ दीठो । पाछी आइ केम ॥ काल जो मुज घर २ छे । छे वाइ ने क्षेम ॥ सुगणा ॥ २ ॥ तोतलाती बोले दासी ॥ मा मुजथी न कहाय ॥ आप निजरे जोयो ... ॥ वाइ कियो अन्याय ॥ सुगणा ॥ ३ ॥ धस्को पडीयो धाय वचेन । शिघ जाइ ... ॥ कुवरी का कूचेन देखी । हीये प्रजालित होय ॥ सु ॥ ४ ॥ कहे वेगी ला राजा- जी । देखावो महाल ॥ पापणी पडदा में रेइ । किया कर्म चंडाल ॥ सु ॥ ५ ॥ दासी ... गइ भूपंप । राणी साथ बुलाय ॥ वाइजी का मेहल माही । शिघ चलो महाराय ॥ सु ॥ ६ ॥ राजा सुण आश्चर्य पाइ । शिघता तिहां आय ॥ राणी कुँवरीने बताये । देखो किया अन्याय ॥ सु ॥ ७ ॥ राज मुक्ष दृष्टे जोइ । विम चारी ना चेन ॥ प्रजल्यो नय क्रोधानल थी । रक्त थइया नयन ॥ सु ॥ ८ ॥ अंग रक्षक धायथी कहे । वोल स- च घधार ॥ किण साथे इण कार्य कीया । नहींतो खारो मार ॥ सु ॥ ९ ॥ धाय कहे सं राजा केइ । गइ पिछाणीं नेह ॥ ... ने । ... ॥ सु ॥ १०॥

महारी देखत बाई स्वपन । न जाण या वात ॥ एकां एक किम वणीयो ॥ अचंभो मुज आन ॥ सु ॥ ११ ॥ गुन्हेगार हूं नहीं मालक । पूछो बाइ थी आप ॥ झूठ साच की खबर पडसी । जणासी सह साप ॥ सु ॥ १२ ॥ क्रोधातुर नरेश्वर तब । ठोकर [illegible] न मार ॥ जगाइ कुँवरी भणी । घबरी ऊठी ते वार ॥ सु ॥ १३ ॥ अती शरमाइ [illegible] । दूर ऊभी जाय ॥ वस्त्रथी अंग ढांक धूजे । नीची द्रष्ट ठहराय ॥ १४ ॥ राव [illegible] कुल स्वप्पन । कलंकित निर्लज्ज ॥ किणरे साथे कर्म फोड्या । बोल सत्यकू [illegible] ॥ सु ॥ १५ ॥ उत्तम कुल में होइ उत्पन्न । किम सूज्यो ए काम ॥ पवित्र कुलने [illegible] [illegible] कीधो शाम ॥ सु ॥ १६ ॥ जन्मतां जो मरी होती । अथवा इत्ता [illegible] वक्त रांड रहना । न होतो ए रिने ॥ सु ॥ १७ ॥ इत्यादी बहू कटु [illegible] धिक्कार ॥ कुँवरी उत्तर देत नाहीं ॥ रही ते मौन धार ॥ सु ॥ १८ [illegible] कन्या । सांपण सम देखाय ॥ जीवनी नहीं काम की । दो यम सदन [illegible] सु ॥ १९ ॥ दास ने राय हुकम देवे । न्हांख खाडी माय ॥ कुँवरी कहे हूं [illegible] । जिम सब सुख पाय ॥ सु ॥ २० ॥ महल पाछल खाइ ऊंडी । गोखे ऊभी- [illegible] प्रमाद जप प्रमेष्टी । छूटी मूकी देह ॥ सु ॥ २१ ॥ पडी कूंवरी रोइ माता ।

[illegible] निज ठाम ॥ राजाजी पण गया सभामें ॥ पस्ताइ मन ताम ॥ सु ॥ २२ ॥
[illegible] प्रभाते । आज न आयो रंच ॥ ढाल चउदे कही अमोलक । आगे जोवो
[illegible] ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ राय तेलार बुलाय ने । कहे धमकाइ एम ॥ जुल्म
[illegible] मे । तुं नहीं जाणे केम ॥ १ ॥ रात परण्या नर तणी । चौकस कर पुरमांय
[illegible] माहे ॥ जेणे कियो अन्याय ॥ २ ॥ कोटवाल प्रणाम कर ॥ आयो
[illegible] ॥ सगला मार्ग रोकीया । भागे नहीं को जाण ॥ ३ ॥ सुभट गुप्त पठा
[illegible] ॥ करो चौकस पुरमांय ॥ राते परण्या नर भणी । दो मुज कर झट लाय ॥ ४ ॥
[illegible] दीठाइयो । प्रगट करी इनाम ॥ जो हम चोर छिपावसी । तस करस्यां वदनाम
॥ [illegible] ढाल १५ मी ॥ तावड़ा धीमोसो पडजे ॥ यह ॥ कर्म गत टाली नहीं जाइ हो ॥
[illegible] ॥ आयु पुन्य प्रबल जिनोका ॥ वाल वांको न थाइ ॥ आं ॥ मदन रयण पाछली
उईने । आया बाग मांही ॥ वणु देव नी कला संकोची । वड कोचर ठाइ ॥ कर्म ॥ १
॥ दिन उगंता सेठ नणे घर आया चलाइ ॥ मदन वदन शाहजी अवलोकी । अश्चर्य अती
[illegible] ॥ कर्म ॥ २ ॥ देखी प्रजा विध अनोखी । तुज अंग देखाइ ॥ परण्यो दीसे कोइ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] पक्षोपाड़ नृपने पासे । चोर जे पकडाइ ॥ आप कहो तो हाजर लांवा । ६
[illegible] ॥ कर्म ॥ १६ ॥ नृप कहे हम ऐसे दुष्टका । मुख न देखांइ ॥ परवारो बध
[illegible] । गुनीशे पडाइ ॥ कर्म ॥ १७ ॥ नृप हुकम जाणी भट पासे । मदनने
[illegible] मदन कहे पर्यो पन्थो कहा तिहां । चालू हूं भाइ ॥ कर्म ॥ १८ ॥ कणेर माल
[illegible] । रक्तांसणी लगाइ ॥ फूटो ढोल तस आगे वाजे । मशाणे लेजाइ ॥ कर्म ॥
[illegible] जोवा ने मिलिया । देखी विलखाइ ॥ मदन मनमें फीकर न किंचित
[illegible] मुलकाइ ॥ कर्म ॥ २० ॥ पुण्य पसाये जोग वण्यो शुभ । ते सुणो चित
[illegible] पसाभी ऋषि अमोलिक । कर्म गती गाइ ॥ कर्म ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥
[illegible] जप ऋषि । करण चरण गुण धार ॥ मांस२ तपस्या करी । करे आ- २०
[illegible] ॥ १ ॥ कानन में सदा रहे । मांस लग करे ध्यान ॥ पारणे आवे ग्राम में ।
[illegible] अन पान ॥ २ ॥ संतोषे मनु देहने । पुनः जावे वन मांय ॥ इम हिज तिण
दिन आवीया ॥ महेन्द्र पुरीने पाय ॥ ३ ॥ गौचरी वक्त हुइ नहीं । जाणी रह्या तरु तल १ मास
॥ ज्ञान ध्यान मे रम रह्या । मेरु परे अचल ॥ ४ ॥ तिण अवसर तिण मारग । मदन

श्री जिन आया हो सोरठ देश मझार ॥ यह० ॥ मुनीवर दीठा हो ॥ तब तिहां मदन कुँवार ॥ रोम २ हुलसित थया ॥ धन्य घडी महारी हो । दीठा दीन दयाल ॥ चरण धरण मन उमग्या ॥ १ ॥ तब तलवरने हो ॥ कहे थंभो इण ठाम ॥ दर्शन लेवू गुरु राजना ॥ ते संग रहीयो हो । आया ऋषिवर पास ॥ पहली ही कीजे धर्म काज ने ॥ २ ॥ सविनय वंदन हो । नमन कियो तीन वार ॥ कर जोडी ऊभा रह्या ॥ धन घडी म्हारी हो । अंत समय महाराय ॥ दर्शन दीठाजी सहु पापजगया ॥ ३ ॥ इम सुण वाणी हो । साधु अश्चर्य पाय ॥ ध्यान पारीते इम उच्चरे ॥ अंतः सन्यो भाइ हो । किम वाल्यो इणवार ॥ किम ए मनुष्य गम किहां चेरे ॥ ४ ॥ मदनजी वीती हो । कही सहु माणी जी वात ॥ जजे पोते अनुभवी ॥ दया सागर हो । पर उपकारी महंत ॥ तहने वचावा इम उच्चरे ॥ ५ ॥ सुणो कोतवाल जी हो । पामी मनु अवतार ॥ अक्रम थी यांरा आत्मा ॥ किंचित आयु हो । शेर आधा अन्न काज ॥ पापे चुडा वो भ्रात मा ॥ ६ ॥ सहु जीव मांही हो । मोटो पंचेन्द्री जाण ॥ मनुष्य हित्या हो जबरी घणी ॥ नर मगयनो हो । मार दयाहो वखाण ॥ जे उपजे हो हलु कर्मी भणो ॥ ७ ॥ अहिंसा लक्षणहो । परम धरम दया होय ॥ मरम पेछाणो धर्म नो ॥ वेर विरोधहो । जीव

नरक में जाय ॥ भारो बान्धीहो मोटो कर्म नो ॥ ८ ॥ जिन रीते वान्धेहो । जीव कर्म
अज्ञाण ॥ भोगवे तिम दश भवलगे ॥ ऋणन हीं छूटे हो ॥ कदी बदलो त्रिन दीध ।
दृष्टांत जाणो ज्यों भरम भगे ॥ ९ ॥ खन्धक जीवे हो । तेरा क्रोड भव मांय ॥ सराइ
फलवरो चीरीयो ॥ साधूने वेसेहो । तस भमीनो जी कंत ॥ चर्म उतारी बदलो लीयो ॥
१० ॥ गज सुख माले हो लाख निन्याणु भव मांय । शोक सून रांट बन्धावीया ॥ सो-
मल सुसरे हो ॥ सिर धर्या खेर अंगार । कर्म काटी मोक्ष सिधावीया ॥ ११ ॥ इम
घणा छ हो ॥ उदारण शास्त्रने माय । श्री महाभारत अध्या तरमें ॥ मांडव ऋषि हो ।
टीनांडी मारी कुशाग्र । सूली चडाया भव फेरमे ॥ १२ ॥ जीव हिंशाथी हो ॥ दालिद्री
कुष्ट जी थाय । दोनु भवे संकट लहे ॥ इम सुणी कम्पो हो । दो भव दुःखथी हो
भ्रात दया लावो हो जो निज हित चहे ॥ १३ ॥ जो कोइ देवे हो । दान सुवर्ण
सुमेर । पृथवी भरीने हेमे थी ॥ कोइ छुडावे हो । मरतो एकही प्राण दयांके ते तुल्ये
नथी ॥ १४ ॥ जिम निज आत्मज हो । सदा जीवणो चहाय ॥ तिमही ज जाणो सहू
प्राणीया ॥ जो पोतापे हो । कधी संकट आय ॥ तो घबरावे तिम सहू जाणीया ॥ १५

१ सूग

अंतरमें हो पेलो ज्ञान थी ग्रष ॥ ए अवसरे आइ अणी ॥ १६ ॥ मुणी उपदेशज हो ॥ चमरयों चित कोटवाल ॥ दीन दयाल धन्य आपने ॥ भलो बचायो हो । अनर्थथी मुज आज ॥ मरम जाण्योंजी धर्म पाप नो ॥ १७ ॥ जाणी जोइ हो । नहीं करुं मोटो अकाज ॥ धर्म धन्यत गयन मोहरो ॥ आप पसाये हो । दीधो अभय पठाय ॥ उपकार मानो यांनू थांयरो ॥ १८ ॥ फिरे नहीं करस्यूं हो । कोइ पचेन्द्री की घात ॥ ए प्रतिज्ञा मुजने खरी ॥ आज थी आपने हो ॥ मान्या में गुरु देव । धर्म दयामें देव जिनवरा ॥ १९ ॥ मदन जी लीधा हो । ते पेलो पचग्वाण । पर नारीने जाणू बेनडी ॥ तस मात नातज हो । खुशी थी मुजने परणाय ॥ तहीज मुज प्रिया खरी ॥ २० ॥ दोनो प्रनशा हो ॥ लीनी इम उल्लसाय । वंदणा करी दोनु भावस्युं ॥ मदन पसाये हो ॥ समकिती थया कोटवाल ॥ दया धर्मी उल्लसास्यूं ॥ २१ ॥ मुनी पधार्या हो । ग्राममें गोचरी काज ॥ तलवर मदन आगे चल्या ॥ लौकीक रावण हो । मदन बन्धन मांय ॥ अंगम धर्म प्रेमे मल्या ॥ २२ ॥ धन्य २ मुनीवर हो ॥ करे मोटो उपकार ॥ मरण अणी थी उगारीया ॥ बोइने तार्या हो ॥ ढाल सोलमीरे माय ॥ अमोल वंदे गुण रागीया ॥ २३ ॥ ० ॥ दुहा ॥ थोडा दूरा जाय ने । सहू थी कहे कोटवाल ॥ देर घणी

हुइ गाभे । हिव थोडो रह्यो हाल ॥ १ ॥ आज घात नहीं होवसी । देख्यो जासी काल ॥ सहु आयो निज स्थान के । सहू गया होइ खुसाल ॥ २ ॥ कोटवाल कहे मदन थी । थे मुझ उपगार ॥ दोनो भणी उगारीया । मेटी सहू विषवाद ॥ ३ ॥ हिवे जा- वा मुझ बंगला ॥ फिरीने आवो ए धाम ॥ मदन कहे अवसर विना । नहीं आस्युं इण ठाम ॥ ४ ॥ ए उपगार थांसो हुयो । भवो भव न भूलाय । रात्री आया फेडस्युं ॥ इम कही मदन सिधाय ॥ ५ ॥ ढाल ११ मी ॥ उमंगन की लली ॥ यह ॥ देखो धर्म प्रभाव । पुण्य प्रबल जीव सब सुख पाय ॥ आं ॥ कोटवाल खुशी हुइ । गयो निज धाम ॥ धर्म भेद जाणी तो पायो आराम ॥ देखो ॥ १ ॥ वक्र गुजर्यां मारग । भूल पडी तेह ॥ सत्य सुख रखा पंत । कुण लेवे छेह ॥ देखो ॥ २ ॥ धर्म ध्यान नित्य कर । रह कोटवाल ॥ इम नेहने सुखे तिहां । पीते काल ॥ देखो ॥ ३ ॥ हिवे मदन जी आया । बाग मझार ॥ गरुड निकाली । तस लीयो सुधार ॥ देखो ॥ ४ ॥ हुइ स्वार तव फेरी कल ॥ खग गयो गगन मे गयो ने चल ॥ देखो ॥ ५ ॥ रात्री पड्या थी आ- पा डेरी के मेहल ॥ सहेली खडनी देखी । पूछे खेल ॥ देखो ॥ ५ ॥ तिवारे दीनक

टाली । टल्ल नाय ॥ प्रकाश करी जाइ । खाडो म जाय ॥ देखो ॥ ७ ॥ पता नेहा
लाग्यां पाछा । बाहिर आया ॥ श्री पुर भणी चाल्या । मन समजाय ॥ देखो ॥ ८ ॥
पत्र स्वामी तणे । आया घर ॥ उतरीया मदन जी । देखे चउ फेर ॥ देखो ॥ ९ ॥
स्वामी स्वानणने । ते लागा पांय । दंपती देखी तस । घणा हर्पाय ॥ देखो ॥ १० ॥
आता २ प्यारा पुत्र । लीनो उठाय ॥ उरथी चांपी घणां । प्रेम जणाय ॥ देखो ॥ ११ ॥
दिन घणा किहां तुम । लगाया भ्रात ॥ तुम नहीं सांज आया । हम घबरात ॥ देखो
॥ १२ ॥ रत्न मरुड थी पड । छोकज स्वाय ॥ ओलंभा दीया घणां । कारीगरजी तां-
य ॥ देखो ॥ १३ ॥ लाय लागी पेट मांही । दुःख्यो घणो मन ॥ रंग संग छूटयो ।
नहीं भायो अन्न ॥ देखो ॥ १४ ॥ आज मोटा भाग । पाया तुज दर्शन्न ॥ हृदय कमल
हुयो । परम प्रसन्न ॥ देखो ॥१५॥ मदनजी कहे । महंत पुरगयो मेय ॥ सुखमांहे रह्यो
नितां । लक्ष्मी वस्त गेह ॥ देखो ॥१६॥ राज मांहे जातां । मुज लेगया संग ॥ राज कन्या
दर्वी मुज । हांगड दंग ॥ देखो ॥ १७ ॥ गर्न गुप्त परण्यो । प्रात जाणी नृप वात ॥
काटणा माय भज्यो । करवा घात ॥ देखो ॥ १८ ॥ माधूजी महाराज मिल्या दीनो
छोडाय ॥ नाठो ने गरुड चढी आयो इण ठाम ॥ देखो ॥ १९ ॥ साची वात कही ।

...मदन [illegible] ॥ वांछित द्रव्य ले । पाम्या चमत्कार ॥ देखो ॥ २० ॥ मिटी मोग ... अैसे [illegible] काम ॥ इहाँ हुआ रहा । नहू पासो आराम ॥ देखो ॥ २१ ॥ ... मदन जी । रहे निज घर ॥ स्वाती स्वामीणरा भक्ती । कर बहु पेर ॥ देखो ... पूरो हुवो । मतेर हाल ॥ अमोलख कहे । मदन पुण्य विशाल ॥ ... ॥ २३ ॥ ॥ प्रथम खान्ड सारांश हरीगीतच्छंद ॥ प्रथम खन्ड सम्मास मंन्डन । ... मदन नगीना पुरे सहाइ । पद स्वाती घर रहया ॥ गरुड ... पुर पधीनी । कंन्या वर केरी थया ॥ मुनी गज साजे उगर्या । इत्यादी ए... कथा ॥ १ ॥

परम पुज्य श्री खूबानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री अमोलख ऋषिजी रचित पुन्य प्रकाश मदन श्रेष्टी चरित्रस्य

प्रथम खन्डम् समाप्तम् ॥ १ ॥

॥ दुहा ॥ सिद्ध साधुकों नमन कर । सिद्ध करनको काज ॥ द्वितीय खन्ड प्रारंभू
दो शुभ बुध को साज ॥ १ ॥ चंद्र पुरीमें उपन्या । चंद्र प्रभू महाराज ॥ चंदचरण प्रणमू
सदा ॥ सारो इच्छित काज ॥ २ ॥ चंचल स्वभावी जे नरा । ते तो स्थिर नहीं रेय ॥
जे करवा निश्चय कियो । उपाय करे ते तेय ॥ ३ ॥ श्री पुरु में ख्याती नरे । रह मदन
कुवार ॥ बेठा चेन पडे नहीं । करी कांइक विचार ॥ ४ ॥ फिरवा निकल्या शेहर में ॥
जोवे कांइ उपाय ॥ जेहथी इच्छित सिद्ध हुवे । देखे चित लगाय ॥ ५ ॥ विश्वेश्वर नामे
तिहां ॥ कलाचार्य प्रवीन । राज पुत्र पढावतो । करीने विद्या लीन ॥६॥ पाठकशालाने
विषे ॥ छत्र बकुला आय ॥ मदन तिहां आइ खडा । जोवे दृष्ट लगाय ॥ ७ ॥ दो
विभागनं शालना ॥ पट अंतर में डाल ॥ कुँवरी कुँवर भेगा भणें । राज कुल ना
बाल ॥ ८ ॥ तिण में मतलब आपनो । होतो दीठो मदन ॥ चुप चाप फिर आवीया
स्वार्ता केर सदन ॥ ९ ॥ ढाल १ ली ॥ दया धर्म पावे तो कोइ पुण्यवंत पावे ॥ यह
देशी मदन कुँवर निज कार्य साधनने । तुर्त ही बुद्धि उपावे जी ॥ जिम कोइ ओलखवा
नहीं पावे । तिम निज रूप पलटावेजी ॥ मदन ॥ १ ॥ मेला फाटा लीरा लटकता । वस्त्र
धार्या निज अंगोजी ॥ राख रज मले डील लगाइ । बहु तरह लगायो रंगोजी ॥ मदन

॥ २ ॥ ग्याती ग्यातण ए तमाशो जोइ । आपसे हँसवा लागा जी ॥ आज किस्यो प
रगण पणायो । के भूत झोटिंग कोइ जागाजी ॥ म ॥ ३ ॥ हँसतो मदन कहे हूं गेलो।
कृम [illegible] भग जावे जी ॥ ये फिकर आप घर में विराज्यो । करूं जिम लेहर मुज आवे
जी ॥ म ॥ ४ ॥ इम कही आया बजार के मांही । लोक देख अश्चर्य पाइजी ॥ गम्म
जभ्यो पुछे नाम तेहनो । ते 'मूर्ख' बतलाइ जी ॥ म ॥ ५ ॥ मूर्ख २ सहू बतलावे ।
[illegible] पाले हर्पाइ जी ॥ हँसे कूदेने ख्याल बणावे । लोक भणी हँसाइ जी ॥ म ॥ ६ ॥
इम भमतो ने गया शाळ में । पंडितसे इम बोले जी ॥ मुजने भणावो तो शाबाशी ।
कृग [illegible] गुजतोले जी ॥म॥७॥ हँसी आचार्य भणवा बेठायो । दीधी हाथमें पाटीजी
॥ [illegible] भोलो ते कहे हूं भोलो । पाटीपे पडि चीरांटीजी ॥म॥८॥ पाठक सहू सुण हँसवा
लाग्या । सहूंने लागे गमतोजी ॥ मूंडे लाग्यो पांड्याजीने । नित्य तिहां आइ रमतोजी ॥म॥९॥
जो कांइ तस काम भोलावे । जाण ने समज नाहींजी ॥ पांच सात वार तेह थी कहवा
वे । फिर शिघ्र देवे निपाइ जी ॥ म ॥ १० ॥ तेहथी सहूने प्यारो लागे । देवे जेते मां-
गे जी ॥ सहूने सहातो करे मस्करी । जिम जागे अनुरागे जी ॥ म ॥ ११ ॥ तिणही

[illegible]

[illegible] ॥ २३ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ २४ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] । [illegible] रान धी तुरो चाहूंजी ॥ जब्र मिलो एकांते आइ । इरजो मत [illegible] ॥ २२ ॥ दीसे मृर्ख ते गुस दे धुँतरने । मूर्ख पाहिर आइजी ॥ वांसी [illegible] । उत्तर पोते लिम्पाइजी ॥ स ॥ २३ ॥ आइ बेठो प्रगान पुस्तकने। [illegible] ॥ नेहनो वडू भेदन पायो । मदन कुँवरी कने जाइजी ॥ स ॥ २४ ॥ [illegible] । चोली निणने वांच्योजी ॥ में पण चाहूं अवसर मिलस्यूं । [illegible] ॥ स ॥ २५ ॥ तेतले हुई हुइ शालकी । पोताना कफनार लड [illegible] घर पहोंता । मदन पुरमे फिरइजी ॥ स ॥ २६ ॥ बीजा खण्ड की प्रथम [illegible] । कही अमोल रसालोजी ॥ देखो मदन केसो परपंची । करे नव नव [illegible] ॥ स ॥ २७ ॥ दुहा ॥ राज पुत्री तगी छगी । सचीव पुत्रस्युं आंण ॥ ते [illegible] पडे नहीं ॥ अरर ईर्षा राख ॥ १ ॥ मोटा घरको दोइए । तरुण पणो मदमस्त ॥ इहां जो अकृत्य करे । होवे नम सुज अस्त ॥ २ ॥ हिवे लालच छोडी करी । सीख दहु [illegible] नांय ॥ तो [illegible] शालकी । इस निश्चय चितठाय ॥ ३ ॥ जुदा जुदा [illegible] मणी ॥ लगय निज नान पाम ॥ भण्यो गुण्यो चताइयो ॥ राय प्रधान हुद्धार ॥

... सदर ॥ ५ ॥ ढाल दूसरी ॥ पाडव पाचूं वदना । म्हारामनडानीयाजी ॥ व ॥ ... पुत्रः गुण सुन्दरी । प्रधान पुल विशेगजी ॥ तडफडती अति मन विषे । हि- ... जोग ॥ १ ॥ भविकजन सांभलो । बुद्धि पुण्य मदन कासवाय ॥ च- ... । बुद्धि० ॥ आ ॥ रूप वय बुद्धिसारखी । सुजसचीव तनुज हित दाय- ... न अन्य गमे नहीं ॥ राज घरे दुःख घणो थाय ॥ चतुर ॥ २ ॥ शोकाने पर- ... जोगी दुःख होयजी ॥ वाणिक घर रहतां थकां । मुज हुकम न उल्लंघे ... ॥ मनहर वसे सदा मनमें । क्षिणक नाहीं भूलायजी ॥ ते पण इम ... कांइक मिलण उपाय ॥ च ॥ ४ ॥ बीजो कांइ सूजे नहीं । सूख्यीने ... ॥ तिण हाथे पत्र मोकलो । हूं तो पूरूं म्हारी आस ॥ च ॥ ५ ॥ रजा ... । ते तो आइ तव तिण पासजी ॥ प्रणमी पद उभीरही । ते कहे ... ॥ च ॥ ६ ॥ साकहे मुज काज करणने । चाहीये छे माणस एकजी ॥ ... । पली अन्य कार्य छे अनेक ॥ च ॥ ७ ॥ अरीविंद कहे तुज चा- ... दासजी ॥ कहो तो भेजूं दरबारसे ॥ जे सदा रहे तुजपास ॥ च ॥ ८ ॥ ... र अछे । आज ... रेयजी ॥ फरमावोतो राखूं तेहने । तव रायजी

आदेश देव ॥ च ॥ ९ ॥ हर्षी जाइ निजघरे । भेजी दासी शाळरे मायजी ॥ मूर्ख्यो
तिहां मन्त्री हामी । लावो तेह ने इहां बुलाय ॥ च ॥ १० ॥ मदन आयो शाळा त्रि-
पे । राजपुत्री देखी नायजी ॥ पूछे पण्डित थी तदा ॥ राय कुँवरी कहां महाराय ॥च॥
११ ॥ काम करायो मुजथकी । पइसा आपण्या चारजी । आज देवण तणो कह्यो । तेह-
थी मिल्यां इणवार ॥ च ॥ १२ ॥ पण्डित कहे ते घर गइ । अब नही आवे इण ठाण
जी ॥ चिन्ता हुइ चित मदनने । अब कीहां जोवूं ठिकाण ॥ च ॥ १३ ॥ बेठो बाहिर
आयने । तब दासी आइ तस पासजी ॥ चल शिघ मूर्ख मुजसंगे । बाइ बोलवे रखवा
रास ॥ च ॥ १४ ॥ कहे मदन हूं तब चलू । चार पइसा मुजने अपायजी ॥ दासी हूं-
कारो भर्यो । साथे हुयो अति हर्षाय ॥ च ॥ १५ ॥ नाच तो कूदतो मरगे । वली उ-
डातो धूळजी ॥ चेटी जोइ विचारे । बाइ किन चाले लग्या भूल ॥ च ॥ १६ ॥ राय
कुंवरी मारग रही । मूर्ख आवंतो जोयजी ॥ खुशी हुइ मनमें घणी । इण थी कारज
म्हारो होय ॥ च ॥ १७ ॥ हर्षे बुलाइ फने लियो । दीया खावाने पक्वानजी ॥ कहे
सदा तुम इहां रहो । तुज कह्यो करस्यु प्रमान ॥ च ॥ १८ ॥ मूर्ख कहे हूं रेवस्यु । जो
... मारे पेसा [illegible] ॥ [illegible]

भुक्काया समाचार ॥ च ॥ २० ॥ खुशी हुइ मदन रह्यो । करवा इच्छित कामजी ॥ दुजी ढाल हुजा खडकी । कहे अमोल पुगे किम ह्राम ॥ च ॥ २१ ॥ दुहा ॥ गुणसुंदरि-एकांत मे । मूर्ख ने इम केय ॥ मुज मननी तुजने कहूं । ज्यों भेदन दुजो लेय ॥ १ ॥ मूर्ख मानजो कहे । नहीं तुम हुकमने वार ॥ कहस्यो सो कहस्यूं सही । नहीं किहां करूं उचार ॥ २ ॥ कुँवरी कहे प्रधान को । ओलखे छे तूं गेह ॥ मूर्ख कहे जाणु अछु । ते दिन दाख्यो नेह ॥ ३ ॥ हां तेहीज कुँवर तणे । छाने जाइ पास ॥ ये पत्र लिखने देवुं । तूं गुम दीजे ताम ॥ ४ ॥ दो तीन वा समजाइयो । तव भरीयो हूंकार ॥ प्रेम पत्र लिखवा लगी ॥ गुण सुदरी तेयार ॥ ५ ॥ ढाल ३ री ॥ में मुख देख्यो गोडी पारस को ॥यह०॥ देखो चतुरनर मदन परपंचने । करे है कैसो उपाय जी ॥ आं ॥ अहो प्राणेश्वर आप गह थी । तरशे म्हारो तन जी ॥ परवश पण हूं घरमे रही छूं । पक्षी ज्यों उडे मन जी ॥ देखो ॥ १ ॥ पांड्याजीने वैम पड्याथी । पहोंचाडी मुज गहजी ॥ तुम मुज मन मन्दिरमा रमीयां । कैसे निभावुं नेहजी ॥ देखो ॥ २ ॥ आज लगण दिल खोल बोल णगं । अवसर मिलियो नाथ जी ॥ हिवगा वातता छे कागदथी । सोदो कोइ उपाय

... ॥ ३ ॥ दीधो कागद मूर्ख ने हाथे । ते आयो निज गेहजी ॥ वांचीने प्रमा-
... । उत्तर इण विध देयजी ॥ देखो ॥ ४ ॥ तुम विरह मुज साल समाणे ।
... मांय जी ॥ तुम उपाय बतावो ते करूं । मुजने न मूझे उपायजी देखो॥५॥
... कर धर्यो ग्रीशे । नाणो ले कर मांय जी ॥ आया राज पुत्री ने पासे ॥ कू-
... आप जी ॥ देखो ॥ ६ ॥ कहे मुजने इनाम दीधो ए । बुलायो नित्य एम जी
... उत्तर किण्यो लायो । छे किस्यो मुज पे प्रेमजी ॥ देखो ॥ ७ ॥ मूर्ख
... पूरो । कागद दीनो हाथ जी ॥ कह्यो एकांत जाइने वांचजो । मनमें राख
... जी ॥ देखो ॥ ८ ॥ प्रेम पत्र ज्यो कुँवरी हुल्लसाइ । खोली हृदय लगाय जी
॥ ... सरीखा अक्षर । मतलबी शद्ध जणाय जी ॥ देखो ॥ ९ ॥ सुभाग्ये मुज
... पनामिले । जन्म जासी सुख मांय जी ॥ मुजने अंतःकरण नी चींते । शिघ्र करूं हूं
उपाय जी ॥ देखो ॥ १० इहां स्यां मेलो नहीं होवे । रहणो प्रदेशे आप जी ॥ तोमन
मानी मजा भोगवो । पुनरपि पत्र लिखाय जी ॥ देखो ॥ ११ ॥ प्यारा प्रेम सदाइ नी-
... । ... जी ॥ पर ... मुख भोगवो । दाखो आप को मनजी

[illegible] मला नाहर [illegible] । [illegible] प्रवेश जाय जी ॥ तोमनें
[illegible] मजा [illegible] । [illegible] जी ॥ देखो ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible] । सुणो [illegible] मिलाप जी ॥ देखो ॥ १३ ॥ सुन्न घर तपत तात न
[illegible] । पगर्था नहीं [illegible] जी । मोज मजा [illegible] धनर्थी होवे । तेहथी सुणो चित लाय
जी ॥ देखो ॥ १४ ॥ मुगल अश्व नड्या मे [illegible] । खरच्या बहुलो धन जी ॥ चलवाको
[illegible] कायम । किसे कथान मिलन जी ॥ देखो ॥ १५ ॥ इण प्रश्न का उत्तर
[illegible] । [illegible] हूं इणवार जी ॥ मनसा होवे तो दरशावो । तो होवूं हूं तैयारी जी ॥
देखो ॥ १६ [illegible] कागद नवी धोती ॥ आयो कुँवरी पास जी ॥ नाचे कूद धोती बतावो
[illegible] [illegible] ल्याय जी ॥ देखो ॥ १७ ॥ और समाचार किस्या तूं लायो । तेतो
[illegible] बताय जी ॥ नम पत्र मेल्यो मुख आगल । प्रेमोल्सुख हो उठाय जी ॥ देखो ॥
१८ ॥ [illegible] वांची आनंद पाइ । पाछो देवे जवाब जी ॥ धन तणी तो फिकर न
[illegible] । [illegible] सुरंग मिले अब जी ॥ देखो ॥ १९ ॥ अन्धारी चउदस प्रहर राते ।
[illegible] [illegible] स्थानजी ॥ मुर्ग पत्र घर आइ वांची । हर्षायो अस्मान जी ॥ देखो ॥
२० ॥ [illegible] उतर नगार हमेलां । लेइ मांहर कर मांय जी ॥ पाछो कुँवरी पासे आइ ।
[illegible] बताय जी ॥ देखो ॥ २१ ॥ पत्र दीयो कुँवरी लियो झपकी । वांची मन
[illegible] जी ॥ उपाय करवा लागी चटपटी ॥ [illegible]

...म सहू आयां मदन जी ॥ ढाल तीसरी मांय जी ॥ दूजा खन्डकी कही अमोलख ... गुणी भिमराय जी ॥ येगो ॥ २३ ॥ ० ॥ दुहा ॥ गुण सुन्दरी घुड शालधी । ... उत्तम ओघ ॥ लाइ निज घर बान्धीया । मूर्ख हाथे सोय ॥ १ ॥ गुप्त कर ... । स्थान पान संभाल ॥ मूर्ख पास करावै ॥ निजरे निज निहाल ॥ २ ॥ ... रत्ना मणा । गणा नगदी धन ॥ अल्प भार बहु मोलका । संग्रह कियो ... ॥ ३ ॥ तपोरशी ने पत्र लिख । मूर्ख हाथ पठाय ॥ काल गनका निश्चय । ... का ठाय ॥ ४ ॥ तुम अज्ञा प्रमाण में । कियो बंदोबस्त सब ॥ पाछो उत्तर ... म्हारे अब ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ कुंवर अभय बुद्ध को भडारी ॥यह०॥ ... रत्नावंत भारी । निज कारज संपदन कारन । केर केर्मा हूशीयारी ॥ आं ॥ ... आइ ज़िण दिन । मदन जी विचारी ॥ आज निशा कुंवरी आ- ... हुशारी ॥ मद ॥ १ ॥ हूं पहली जा रहूं तिहां अब । करी सहू तैयारी ॥ ... मे यहतो स्वामी । मुज कमी कछु नारी ॥ म ॥ ॥ ग्यानी ध्यानी ने ... । स्वजो हूशारी ॥ थोडा दिनमें पाछो आस्यू । काम छे इणवारी ॥ म ॥ २ ॥ ... आज्ञा ... । ... ॥ ... कार्यीका ... । ... ओलो नारी

॥ म ॥ ४ ॥ महल में कुँवरी अवसर जोड़ । कीनी तेयारी ॥ गेणो नाणो भया तोवरे ।
... थय धारी ॥ मद ॥ ५ ॥ मरदानी सिरे पाव सज्यो तन । धामंजो अतिकारी ॥
... वस्त्र सज हुइ अश्वपर ॥ कीनी सवारी ॥ म ॥ ५ ॥ गली गुंची गुप्त मार्ग फिरती
। ... गाम धारी । देवालय पासे ऊभी रही । मधुरी पुकारी म ॥ ७ ॥ चालो वल्लभ
... । पुरो इच्छा सारी ॥ हुकम प्रमाणे आइ ऊभी । नाथजी अवलारी ॥ म ॥ ८॥
... मदन चुप चाप उठीयो । आयो कुँवरी यारी ॥ रीते घोडे आइ वेठो । बोल्यो न
... ॥ ९ ॥ आगल मदन पाछल कुँवरी । चाल्या आगारी ॥ कुँवर मन रीझावण
... । कुवरी उच्चारी ॥ १० ॥ दुहा छंद चोपाइ गुढार्थ । कहे छे तेवारी ॥ पहेली में
प्रश्नोत्तर पुछे । बुद्धि दखाडी ॥ ११ ॥ मदन चिंतवे चुप्प रेवणो । इहां छे गुण कारी ॥
... उत्तर न दे ॥ कुँवरी विचारी ॥ म ॥ १२ निशा घोर तमे दीसे नांही ।
... आहारी ॥ न जाणे कोइ नेडो माणस । सुणे बोली थांरी ॥ म ॥ १३ ॥
... आ कहे राज सचीवने । क्कोइ आगारी ॥ तो कोइ लार आइ पकडले । कर
न ... ॥ म ॥ १४ ॥ इम जाणी बुद्धवंत कुँवर ए । रह्या मून धारी ॥ में मूर्खणी
... । विगर विचारी ॥ म ॥ १५ ॥ नेडो घोडो लेइने पूछे ॥ हुइ जिम

१ ग्रामी
२ आगे

इच्छारी । पाछो जवाप न आपे तवंत । रही चुप्प धारी ॥ म ॥ १६ ॥ आज भाग धन म्हारा थाइ । तूठा कर्तारी ॥ वल वृद्धि वय रुप पुरंदर । पाइ भरतारी ॥ म ॥ १७ ॥ कोइक प्रामें जाइ रहस्यूं । होस्व इच्छारी ॥ इम अनेक तरंगा उपजे । ज्यों सिन्धूवारी ॥ म ॥ १८ ॥ कव दिन उगे कव मुख निरखूं । इम रही उमंगारी ॥ लार २ अश्व च-लावे । करती विचारी ॥ म ॥ १९ ॥ मदन जी चिंते दिन उगाथी । थासी मजारी ॥ फिरनो घर जावण नहीं पावे । थासे मुज प्यारी ॥म॥२०॥ ढाल ए दूजा खंडकी चौथी । अमोल उच्चारी ॥ विचार, दोन्यारा सिद्ध होण को ॥ दिन छे वहुलारी ॥ मदन ॥ २१ ॥ ५ ॥ दुहा ॥ उभय जणा एकण दिशे । शिघ्रते चाल्या जाय ॥ खाड पहाड गुलंघना । साहस मन सवाय ॥ १ ॥ कार्य अर्थी मनुष्य ते । दुःख सुख गिणे न कांइ ॥ दुःख ने सुख करी लेखता । कामी काम उमाय ॥ २ ॥ इच्छा अती मुख दर्श की । कुँवरी ने मन मांय ॥ तेहना दुःख ने दाबवा । जाणे रवी दवाय ॥ ३ ॥ संध्या रंग जव प्रगट्यो । कुंवरी अश्व कुदाय ॥ आगे आइ मुख प्रेक्षतः ॥ जोइ मूर्छे धस्काय ॥ ४ ॥ वृक्ष शाख छ्या थकां । जिम पडे धरणी आय ॥ तिम कुँवरी पडी अश्वथी । वे शुद्ध

[illegible] मदनेजो अश्चय पायरे ॥ मुजने जोइ मुरजा गइरे ॥ चित्यों न मिल्या
[illegible] ॥ जोवो करामात मदन कीरे ॥ ओं ॥ करे अचिंत्य उपायरे ॥ मूर्ख
[illegible] ॥ जिहां लग ए नहीं चाहायरे जो ॥ २ ॥ दिशी विदिशी अवलोक
[illegible] तनु भींजोयरे ॥ लेइ आयो कुँवरी कनेरे । मुख पर छांट्यो तोयरे ॥ जो
[illegible] ॥ जाग मावध हुइरे । बेठी करत विलापरे ॥ हाय देव किस्यो कर्युरे । प्रग-
[illegible] पायरे ॥ जो ॥ ४ ॥ किणने धार्यो कुण आवियो रे । एतो मूर्ख सिरदार
[illegible] किहां रह्यारे । जे देता नित्य समाचार रे ॥ जो ॥ ५ ॥ हिवे आगल कि-
[illegible] ॥ जन्म कुँवारिइ जायरे ॥ मननी इच्छा मनमें रही रे । हूं गइ पूरी छला-
[illegible] ॥ जो ॥ ६ ॥ कुंवरीनें रोती देखनेरे । मदन बेठो आइ पास रे ॥ मूर्ख पणो भ-
[illegible] ॥ गेव टस्का भरी सास रे ॥ जो ॥ ७ ॥ मूर्खने रोतो देखनेरे । कुँवरीने
[illegible] ॥ किस्यो दुःख तुज जक्त मांरे ॥ जिमतूं पाडे चीसरे ॥ जो ॥ ८ ॥ ठसका
[illegible] । मुज पण आया रोजरे ॥ थांरा सुख थी में सुखी रे । तुम दुःख मुजने हो
[illegible] ॥ जो ॥ ९ ॥ कुंवरी कहे रोवुं तुज भणीरे । किम लाग्यो मुज लाररे ॥ दगा करी
[illegible] । वोल्यो न पहली गंवाररे ॥ जो ॥ १० ॥ ते कहे दगो सगो नहींरे ।

२ पाणी

[illegible] अपार रे ॥ मैं [illegible] किनके नहीं लग्यो रे ॥ सुणो वीत्या समाचार रे जे
॥ ११ ॥ तुम मुज [illegible] दिन [illegible] ॥ सीख दीधी घर जाणरे ॥ मुज घर ना पूछो स-
[illegible] मैं [illegible] कहाड्यो मुज हाण रे ॥ जा ॥ १२ ॥ सहू लडवा लाग्या मुज थकीरे
॥ [illegible] मुज शिरवार रे ॥ कोइ स्थान टिके नहींरे । जाव तिहां दे कहाडरे ॥ जो
॥ १३ ॥ [illegible] कोडी नहीं रे । ग्याचा दोडी आयरे ॥ मुफत में माल आवे नहींरे ।
[illegible] धी वको नी जाय रे ॥ जो ॥ १४ ॥ कूटी कहाड्यो घर बाहिरे रे ॥ मैं
[illegible] ध्यानरे ॥ काली देखी देवालयरे । सूतो जा एकांत ठाणरे ॥ जो ॥ १५ ॥
[illegible] आइ नहीं जी । जितरे थे आया तिण जागरे ॥ थोली में धाणी ओल-
[illegible] मुज अधागरे ॥ जो ॥ १६ ॥ मैं जाण्यो बुलावा आवीया रे । उठ आयो
[illegible] रे ॥ तुम हुकम अश्व दड्यो रे । साथ हुयो घर हुल्लास रे ॥ जो ॥ १७ ॥
[illegible] नहीं रे । तिण थी आयो इहां चाल रे ॥ तुम दड दड्या खारी छाछ
[illegible] नहीं समझ्यो ख्याल रे ॥ जो ॥ १८ ॥ तो उत्तर किस्यो देवूंरे । मैं जाण्यो
[illegible] रे ॥ म्हारो एमो दीठो किस्यो रे ॥ ते तो करो प्रकाश रे ॥ जो ॥१९॥

... भांत तीन नार । तहँथी पांमी प
... थईर । किणने दुःखाडूं सुन्दर ॥ जो ॥२२॥ दान होती तो पाछी
... नहीं अवतार ॥ किस्यो लिख्यो छे मुझ दैव मेरे । भोगवूं ते हिवे
... ॥ इण्यादी आमन करे । गुण सुन्दरी ते वार ॥ बीजा खंड की
... ढाल उचारे ॥ जो ॥ २३ ॥ ७ ॥ दूहा ॥ गुण सुन्दरी नित चिन-
... भाव ॥ प्र सुणे हिर डावरो । दुःख सुख समजे नाय ॥ १ ॥ गढ
... आगे को उपाय ॥ नसीब मूक्यो लिख्यो । मोहन क्यां थी आय
... गुणेन । मिल २ मुज अवतार ॥ छूट्यो गज सजन सहु ।
... ॥ ३ ॥ तिहां किणहीक पास में । एकांत स्थानक जोय ॥ रही जिं-
... आधार सोय ॥ ४ ॥ इम निश्चय करने कहे । बाल जिहो तुज
... मांगवी । इसदीन होसी मरन ॥ ५ ॥ ढाल ६ ठी ॥ वेडे घर
... ॥ सुणो भाइ मवम कहानी जी ॥ कन्या चंग गुणखाणी जी ॥
... आवोसा जी । पुर पलटाण सुथान । गढ मढ महल थी सोभ तो
... ठाण ॥ सु ॥ १ ॥ शुभ महोल तिहां पेमीनाजी । गन कंन्या शरमाग

॥ न तु धा अग ढांकने । मदन नी लारे जाय ॥ सु ॥ २ ॥ मध्य बजारे आवीयाजी ।
वार वहु मिल्या जाय ॥ विके जागा पंच खंडनी । मोल घणो न लेवे कोय ॥ सु ॥ ३ ॥
मदन तिहां उभा रह्या जी । कुँवरी थी पूछे एम ॥ कहो तो ए जोगा लेवू । सव वात-
नो पार ना क्षेम ॥ सु ॥ ४ ॥ कुँवरी मुद्रा दी तेहने जी । वेंची जवेरीने जाय ॥ चाहीता
दाम लेइ करी । वच्या ते जमा कराय ॥ सु ॥ ५ ॥ मोल लीवी तेह जायगाजी ।
शुभ महुरत ने वार ॥ छेली मजले सुंदरी ने । सुखथी दी वेठाय ॥ सु ॥ ६ ॥ जे माल
... मगाव्या जी । ते तुर्त दीयो लाय ॥ दास दासी राख्या घणा । जे पोताने आ-
... ॥ सु ॥ ७ ॥ सवाइ नोकरी दीवी सवने । सहूने एकांते लेय ॥ मधुर वयणे
... दिने । वली लालच अधिको देय ॥ सु ॥ ८ ॥ काम करजो इच्छा जिसो । रह
जो नम हुकमंग मांय ॥ महारी वात तिण आगलें । किंचित ही करनी नाय ॥ सु ॥
९ ॥ मागन करा पखी करी । फिर आया दूजे मजल ॥ वेटक राखी आपणी । जिहां
कुँवरी न आवे चल ॥ सु ॥ १० ॥ थापण राखी रकम थी जी । लाया सिरे पोशाक ॥
... जी । लेव ... पाक ॥ सु ॥ ११ ॥ होय दास माथे लेउ जी ।

नवकाया जमा ड्या जी ॥ राख्या मुनीम हुँशार ॥ माल घणो खरीदियो । सहू शोभा
... अकार ॥ सु ॥ १३ ॥ महिमा फेली शेहर मे । कोइ आया जवेरी कुँवार ॥ के
... धनना घणा ॥ वली निया वाज सिरदार ॥ सु ॥१४॥ वहोल कला में सीखीया
... पेछाण ॥ तिण जोगे पुन्य प्रबलेजी जमी चौखी दुकान ॥ सु ॥ १५ ॥
... मूळा करोड़नी जी । धन कमी नहीं कोय ॥ द्रव्य तिहां सर्व संपजे जी । पोलो
... माहय ॥ सु ॥ १६ ॥ दुकान थी आइ निज घरे जी । दूजी मजलके मांय
॥ ... वश परहरी । लेवे मूर्ख स्वांग घणाय ॥सु॥ १७ ॥ पंचम महाले कुँवरी आगे।
... आय ॥ गेलायां करे घणी । पोते हँसने तास हँसाय ॥ सु ॥ १८ ॥ भोजन
... घणा ने । ते धरे सन्मुख लाय ॥ शाक पेहली आरोग ले । पाछे
... खाय ॥ सु ॥ १९ ॥ घडी दोघडी तिहां रही ॥ इम ख्याल करे बहू पेर ॥
... ने नीचा उतरी ते । आछा वस्त्र ले पेहर ॥ सु ॥ २० ॥ उत्तम भोजन खाय ने
जी । आइ चलावे दुकान ॥ उत्तम ज्ञान की पुस्तकां जी । देवे कुँवरी ने आन ॥ सु ॥
। २१ ॥ कहे तुमने तुमारे घरे निल्य । पढता ऐसी किताव ॥ तेहवी मिलती लाइ दी ।
... नहीं समज्यूं साव ॥ सु ॥ २२ ॥ यों वात भोळ पे डालने जी । कुँवरी ने कामें

लगाय ॥ इम सुखे काल अति क्रमें । ढाल छट्ठी अमोलक गाय ॥ सु ॥ २३ ॥ ❀ ॥
दुहा ॥ तिण अवसर कोइ देशथी । जोहरी माल बहु संग ॥ आया ते पयठाण पुर ।
व्यवसाय धर रंग ॥ १ ॥ मक्र केतू मही पाल ने । नमी निजराणो कीध ॥ सत्कारी
नृपने हने । योग्य स्थान तस दीध ॥ २ ॥ माल बतायो भूपने । मुक्ता[1] फल बहु तेज ॥
विविध वरण अवलोकी ने । धृप्यो नृपनो हेज ॥ ३ ॥ दो दाणा नृप छांटीया । पूछे तेह
नो मोल ॥ सवा क्रोड तिण उच्चर्या । अटल एक ही बोल ॥ ४ ॥ अश्चर्य पाइ राजवी
। ग्राम जवेरी बुलाय । देशां मोल चौकस करी । जे सहु जन ठेहराय ॥ ढाल ७ मी ॥
नारदा तिको मां पडजे ॥यह०॥ दीपती मदन नी पुन्याइ जी॥दी०॥मुक्त फळकी साची
किम्। सभामांही॥ आं ॥ सामंत माथे शाह बुलाया । जवेरी कह चाइ ॥ नृप भे
ले बला सहु । मनमें हर्षाइ ॥ दी ॥ १ ॥ मदन अने पुरना सहु जोहरी । वि-
न विन आइ ॥ आया सभामें नम्या नृपने । नम्र अति थाइ ॥ दी ॥ २ ॥ सत्कारी
सहु ने बेसाड्या । तिहां योग्य ठाइ ॥ मोती ताशक धरी तस सन्मुख । ते दोइ मिलाइ
॥ दी ॥ ३ ॥ इण सर्था उत्तम जोडी एक । कहाडी दो मुज सांइ ॥ साचो मोल विचा

[1] मोती

[illegible] सुभे शुभ ठाइ ॥ दी ॥ ५ ॥ तहीज दोनों मोती छांटी
[illegible] ॥ उत्तम थी उत्तम ए आमी । हम निजरे आइ ॥ दी ॥ ६ ॥ जे
[illegible] हूंता । नेहीज दीठाइ ॥ खुशी हुइ शाबासी दीनी । कीमत कहो भाइ
[illegible] ॥ परिक्षा करो छे दोनू सरीखा । के कांइ जुदाइ ॥ दीर्घ विज्ञाने जोया
[illegible] फरमाइ ॥ दी ॥ ८ ॥ ए दोनू सम सीप तनुज छे । फरक नहीं कांइ
[illegible] कीमत दीजे । दीजे जे इच्छाइ ॥ दी ॥ ९ ॥ मदन जी बेठा मून
[illegible] न बोल्याइ ॥ पिन बोलायां उत्तम नरतो । दाखे न चतुराइ ॥दी॥१०॥
[illegible] चिंत । ए दीसे सुगुणाइ ॥ इन की मती महू थी हे वेगली । पूछां
[illegible] ॥ ११ महू मदने पूछे भूधव । ये कोइ नवाइ ॥ किहां थी आया किस्यो
[illegible] किम नाहीं ॥ दी ॥ १२ ॥ वृद्ध जवेरी कहे नरसाइ । प्रदेशी आयाइ ॥
[illegible] इणारे । शिखणा उम्याइ ॥ दी ॥ १३ ॥ कुलवंत धनवंत इण सम ।
[illegible] कम मथाली छे शरमाल्ड । तिणथी न बोल्याइ ॥ दी ॥ १४ ॥ धराधव
[illegible] । मदन ने पूछाइ ॥ करी परिक्षा कीमत दाखो । जे तुमें जणाइ ॥
[illegible] कहे महू पुण्य पुरुष हैं । सांचीज फरमाइ ॥ में बालक अधिको सी

जाणू । भे दन इण मांही ॥ दी ॥ अने वृधने आगे बोलनां । अशातना थाइ ॥ सहू फरमाव नहीज कीजे । ये मुज इच्छाइ ॥ दी ॥ १७ ॥ इन सुणी राय शंकित हुयो । भेद्ज दीयाइ ॥ अती अग्रह कर पूछे नरवर । कहो ज जणाइ ॥ दी ॥ १८ ॥ जुदा क पाले जुदा है वुद्धी । न मोटा छोटाइ ॥ सहू जौंरा कहे कहोजी । खुशी हम सगलाइ ॥ दी ॥ १९ ॥ सहू नी रजाले कहे मदन जी । मुज ज मुज्याइ ॥ एक ए मोती छे जी अमोलय । दूजा निकमाइ ॥ दी ॥ २० ॥ सुणी रायजी अश्चर्य पाया । ढाल सात मांइ ॥ ए नो मनुष्य दीसे करमाती । अमोल ऋषि गाइ ॥ दी ॥ २१ ॥ दुहा ॥ सुणी वाणी इम मदनकी । सहू शाह भया उदास । ईर्षा लाइ इम कहे । आपां जमावे खास ॥१॥ घान कियां थी म्यूं हुवे । दो प्रत्यक्ष धनाय ॥ ए अनुन्य ए कोडीनो । कीमत किण गुण पाय ॥ २ ॥ मदन कहे साची कही । एमाजिलनी रीत ॥ वालकने सुधारवा । धारे नारेली प्रीत ॥ ३ ॥ आज्ञा लेइ आपकी । मे प्रकाशी वात ॥ नैसेही कर दाखवुं । सहू समक्ष साक्षात ॥ ४ ॥ निकमा मांनी वींदता । फूटसी ए तत्काल ॥ तीजा पडमां रेत छे । जोवो सहू कृपाल ॥ ५ ॥ ढाल ८ मी ॥ मथुरा आवी माधवी । हेक सजनी ॥पद॥

[illegible]

हके राजन ॥ आया परतीत आय ॥ क चतुरा सांभलो ॥ हके साजन ॥ मदन बुद्धि
प्रत्यक्ष ॥ आं ॥ १ ॥ अती चतुर सिकली गरा ॥ हेकेसा० ॥ राजा लिया बुलाय ॥ क
हे छेदो इण मोतीने ॥ हेकेसा० ॥ जिम फूटया नहीं पाय ॥ के ॥ चतु ॥ २ ॥ तो इ-
नाम देस्यूं घणो ॥ हेकेसा० ॥ कारीगर हर्षाय ॥ विविध मशाला लगायने ॥हेकेसा०॥
सार उपर चडाय ॥ केच ॥ ३ ॥ चतुराइ कीनी घणी ॥ हे० ॥ पण लंछ्यो तत्काल ॥
सिकलीगर मुख उतर्यो ॥ हेके ॥ हर्षो तब नृपाल ॥ केच ॥ ४ ॥ ले रूपानी थालीमें॥
हेकेसा० ॥ जोया पड उघाड ॥ चालू तृतियो पडमें ॥ हेकेसा० ॥ निकली देखी काहाड
॥ के च ॥ ५ ॥ अश्चर्य पाया सहूजणा ॥ हेकेसा० ॥ नृप कहे शाबास ॥ साचा जवेरी
ए सही ॥ हेकेसा० ॥ सभाजन करे प्रकाश ॥ केच ॥ ६ ॥ राजेश्वर कहे मदनने
॥ हे केसा० ॥ आश्चर्य मोटो एह ॥ रेती किम मोती विषे ॥ हे केसा० ॥ दाख्वो कारण
तेह ॥ केच ॥ ७ ॥ नरसाइ मदन भणे ॥ हे केसा० ॥ अवधारो महाराज । मुक्ताफल
नी उत्पती । हे केसा ॥ होवे पांच जगाज ॥ केच ॥ ८ ॥ चक्रवती राजा तणी ॥हेकेसा॥
पटन श्री देवी होय ॥ पुत्र न होवे तेहने ॥ हे केसा ॥ मोती प्रसवे सोय ॥ केच ॥ ९ ॥
जातिवंत ज वंशनी ॥ हे केसा ॥ गांठ में मोती थाय ॥ तीजा उत्तम नागनी ॥हेकेसा॥

स.श्रे. फण में मोती पाय ॥ ले ॥ १० ॥ मयंगेल उत्तम मस्तके ॥ हेकेसा० ॥ मोतीनो भं खण्ड
डार ॥ ए चउस्थान किंचित मिले ॥ हेकेसा० ॥ इण हीज जक्त मझार ॥ केच ॥११॥
३४ पंचमी जग प्रसिद्ध छे ॥ हेकेसा० ॥ सीप तणी पेदास ॥ तिणमें पण जाती धणी ॥
हार्थ। हेकेसा० ॥ करी ग्रन्थ प्रकाश ॥ केच ॥ १२ ॥ हिवे इणमें रेती तणो ॥ हेकेसा० ॥का-
रण देउं बताय ॥ स्वांत नक्षेत्र समती ॥ हेकेसा० ॥ सीप जलचर आय ॥ केच ॥१३॥
तिण अवसर कोइ पक्षीयो ॥ हेकेसा० ॥ सागर पर उडजाय ॥ घंन बूठे तिण उपरे ॥ २ पर्या... यरो.
हेकेसा० ॥ नीचे पडे रडकाय ॥ केच ॥ १४ ॥ ते झेले कदा सीपडी ॥ हेकेसा० ॥ तेह-
नो मोती थाय ॥ पक्षी पाँखनी रज ते ॥ हेकेसा० ॥ मोती पडमें रहाय ॥ केच ॥१५॥
इत्यादी संजोग थी ॥ हेकेसा० ॥ इणमें रहगइ रेत्त ॥ हे ए उत्तम जातीनो ॥हेकेसा०॥ ३५
पण संग विगड्यो पेत ॥ केच ॥ १६ ॥ वींध्या विन ए सोभतो ॥ हेकेसा० ॥ वींध्या
प्रगट्या गुण ॥ गुरु गम जे विद्या ग्रह ॥ हेकेसा० ॥ तेहीज जगमें निपुण ॥केच॥१७॥
इण कारण इण स्वांतीने ॥ हेकेसा० ॥ में निकमो कह्यो नाथ ॥ रूप देखी म राचीये ॥
हेकेसा० ॥ परखो ज गुण जात ॥ केच ॥ १८ ॥ क्षमा करीयो सहू जेए जन ॥हेकेसा०॥
१ आपकी [illegible] ॥ सहू कहे [illegible] ॥ हेकेसा० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ हेकेसा० ॥ [illegible] आगल [illegible] ॥ [illegible] ॥ २० ॥ मदन दिल बुद्धि
[illegible] ॥ हेकेसा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] आठमी ॥ हेकेसा० ॥ कही
[illegible] ॥ [illegible] ॥ २१ ॥ दुहा ॥ प्रमुदित नरवर भणे । अहो श्रेष्ठी सिरदार
॥ [illegible] ॥ [illegible] उच्चार ॥ १ ॥ अमुन [illegible] कारणे । इ
[illegible] ॥ [illegible] प्रकासीये ॥ [illegible] निपुण ॥ २ ॥ मदन कहे
[illegible] । [illegible] ॥ [illegible] नहीं । [illegible] संजोग जब थाय
॥ ३ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] पुनम [illegible] । भाये पुण्य
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] हुआ । [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ [illegible] गुणी ॥ यह ॥ राजाजी ने
[illegible] । [illegible] ॥ पुण्यना फल मीठा ॥ [illegible] मदन ने
[illegible] ॥ [illegible] ॥ पुण्य ना फल मीठा ॥ १ ॥ इम करतां शरद पू
[illegible] । [illegible] ॥ पुण्य ॥ [illegible] फल पुण [illegible] । तुम मन-
[illegible] ॥ पुण्य ॥ २ ॥ [illegible] । [illegible] ।

॥ पुण्य ॥ कहे जोहरी आजरी राते । मोती गुण थासी विख्याते हो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ तांबा ना पत्रा मंगाइ । देवो चांदणी उंची मां बीछाइ हो ॥ पुण्य ॥ रज मेल कलंक हरीजे । बरोबर शुद्ध जाय पाथरीजे हो ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ सहु मध्ये रजेत घट मेलो । स्वच्छ सूघाट उदक भरेलो हो ॥ पुण्य ॥ इम सामग्री जमवावो । इष्ट पूरसी आपणो उमावो हो ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ जेजे मदन बताइ । राय ते ते सहु कराइ हो ॥ पुण्य ॥ तब अस्त थया दिन राया ॥ नृप मदन ना मन उमाया हो ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ दोनो आया आकाशी मांइ । सहु दरवजा बंध कराइ हो ॥ पुण्य ॥ सुखासन त्या बिछाइ ॥ दोनो आनंद घर निसीजाइ हो ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ बुद्धी गुण वृधी मांड्यो ख्यालो । जेहथी प्रमाद को होवे टालो हो ॥ पुण्य ॥ पूनम पूरा चांद प्रकास्या । भूमी व्यास तम सहु न्हासया हो ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ जिम २ शशी उंचो आवे ॥ तिम २ सौम्य प्रकाश बढावे हो ॥ पुण्य ॥ क्रांतीजमी मोती पे आइ । दोन्यारी एक जोती थाइ हो ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ तब मोती वधतो देखावे । जिम २ इन्दु उयाज आवे हो ॥ पुण्य ॥ मध्य अंतलिखे [illegible] आवे । मोती [illegible]

खण्ड २

१ चांदणी

२ अंधारा

३५

वायु फेलाया हो ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ तब मदन जो अवसर जोइ । ते घडो सरको लो
धेइ हो ॥ पुण्य ॥ तब मूल रूपे मोती थइयो । नृप मन अश्चर्य भइयो हो ॥ पुण्य ॥
१२ ॥ तब जवेरी कहे राय तांइ । रात्र बहू गइ निद्रा आइ हो ॥ पुण्य ॥ दोनो सूता
निण ठामो । सुखे निद्रा आइ जामो हो ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ निशा वितिक्रंत थाइ ।
दिन कर तब प्रगटाइ हो ॥ पुण्य ॥ जाग्रत हुवा ते जामो ॥ मदन अने नरश्यामो हो
॥ पुण्य ॥ १४ ॥ जोवे चांदणी मांइ । सब पीली २ देखाइ हो ॥ पुण्य ॥ नरवर
अश्चर्य पाया । ताम्र पत्र लिया करम यां हो ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ उत्तम कंचन जोइ ।
अति हियडे हर्षित होइ हो ॥ पुण्य ॥ मदन कहे नरमांइ । एतो एकही गुण देखाइ
हो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ एहवा गुण छे एमा सोला ॥ ते किम जाणे नर भोला हो ॥
पुण्य ॥ मे सीख्या गुरु पासे । ते आप आगे करूं प्रकाशे हो ॥ पुण्य ॥ १६ ॥ पांचो
इन्द्रि ना रोग गमावे । स्थावर जंगम विष न्हशावे ॥ हो पुण्य ॥ पांचो स्थावर उपद्रव
टाले ॥ क्षुद्री जीवनो जोर न चाले हो ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ स्त्री शत्रु मोहवावे । सहू इष्ट
कार्य सिद्ध थावे हो ॥ पुण्य ॥ ते कारण अमोलक एह । बहू पुण्य संचित जन लेह हो
॥ पुण्य ॥ १०. ॥ इण कारण इने गुप्त राख्यो । भरी सभाने भाव न भाख्यो हो ॥

॥ ५ [illegible] पुण्य ॥ [illegible] ए भेद न किण ने दीजे हो ॥ पुण्य ॥ २० ॥ कीमत
[illegible] शेजे ॥ दसी नेह रहे सो कीजे हो ॥ पुण्य ॥ पण इण ने मती गमा
[illegible] अगमा पाशे हो ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ ए दूजे खन्डे सुखदाइ ॥ ढाल नव
[illegible] गाइ हो ॥ पुण्य ॥ देखो बुद्धि मदन जी केरी । आगे पुण्याइ फेले घणे
[illegible] पुण्य ॥ २१ ॥ ० ॥ दुहा ॥ मदन जवेरी जे कह्या ॥ चन्द्र कान्तका गुण ॥
[illegible] राय जी । जाण्या मदन निपुण ॥ १ ॥ मंत्री ऐसा चाइये । म्हारा राज
[illegible] मुज कांइ कामरी । फीकर न रहे लगार ॥ २ ॥ इम निश्चय मनमें
[illegible] अपर्यो ग्रंन ॥ सीक दीधी मदन भणी ॥ वसीया ते नृपचित्त ॥ ३ ॥
[illegible] आरजा । छ तुम थी बहु काम ॥ राने ज फोर दुःख हुयो । तेक्षमगो गुण धाम
॥ ४ [illegible] मदन जी । पहोंता निज दुकान ॥ खुशी हुवा मन में घणा । जे
[illegible] निज जपान ॥ ५ ॥ ढाल १० मी ॥ तूं हीर यार प्रभू आवेरे दर्दसें ॥ यह ॥ मदन
[illegible] पुण्य [illegible] दर्शाया । निर्मल बुद्धि मे [illegible] ॥ आं ॥ पूरी मंडले नृप
[illegible]

नृपनी [illegible] कम्भाया ॥ म ॥ ४ ॥ देव सभा सम ते रही दीपी । राज चल
[illegible] दर्शाया ॥ म ॥ ५ ॥ मोटा सन्मान थी मदन बुलाया । सामा भे-
[illegible] ॥ म ॥ ६ ॥ ठाट पाट जाइ लाया जवेरी तांइ । ते पण आया हर्ष
[illegible] ॥ म ॥ ७ ॥ नृपादि सहु आदर दीधी । नम्र वयणे अति सत्कारीया ॥ म ॥
॥ ८ ॥ [illegible] पास नृप मदन बेठावे । न बेठे जवेंरी उभा नमी ठरीया ॥ म ॥ ९ ॥
[illegible] प्रधानो । पण इण सम नही एक अवतरीया ॥ म ॥ १० ॥
तिण कारण [illegible] उपर । प्रधन पदका दीधा जरीया ॥म॥ ११ ॥ मोहर स्मरपी
[illegible] बठाया । [illegible] में मदन अनुसरीया ॥ म ॥ १२ ॥ मदन कहे हूं नहीं पद
[illegible] । पण [illegible] ना उचरीया ॥ म ॥ १३ ॥ जेसा चढाया वेसाही चढाया ।
[illegible] ॥ म ॥ १४ ॥ नमन करी बेठा संचीव आसने । सजा-
[illegible] ॥ म ॥ १५ ॥ हर्षा नन्दकी बटी वधाइ । दुशमण नो हृदय
[illegible] ॥ म ॥ १६ ॥ मुक्ता फल ना वेपारी बुलाया । पास बेठाया नृप प्रेम
[illegible] ॥ म ॥ १७ ॥ कहो मोती नी कीमत भाइ । नीती वंत तब इम उचरी-

पा ॥ म ॥ १८ ॥ एतलीं कीमत लख क्रोड दीनार । शिघ्र दीराबो अब जावो हम घ-
रीया ॥ म ॥ १९ ॥ राय कहे फुटा मोतीनो कांइ छो । ते कहे फुट्यो गयो तेनो कचरी-
या ॥ म ॥ २० ॥ मनमें संतोषी जोइ राय हर्ष्यो । मदन न कहे देवा थी जोग
धरीया ॥ म ॥ २१ ॥ तप सचिव कहे सुणो विदेशी भाइ । अमुल्य मोतीना न जाय
दाम भरीया ॥ म ॥ २२ ॥ पे निकल्या छो विदेशे कमावा । घरका धन तो न जावे
परीया ॥ २३ ॥ फुटा जे मोती हम लीया फिर । तिणरी हीं कीमत देस्या हम भ-
रीया ॥ म ॥ २४ ॥ पांच क्रोड सोनैया दीलाया । दाण माफ सहु तेहना करीया
॥ म ॥ २५ ॥ मार्ग खाजण खरच सहु दीना । अति हर्ष गया ते निज घरीया ॥ म ॥
२६ ॥ २७ इसीमा असोल आपि गाइ । इण गुणे मदन ना यश परसरीया ॥म॥२७॥
॥ दुहा ॥ पुन्य पसाये मदन जी । पाया निर्मळ बुद्ध ॥ राजा प्रजा मोहीया ॥ कीर्ती
पसरी शुद्ध ॥ १ ॥ पुरषटाल ना नृप नो । पाया पद प्रधान ॥ प्रिती वधी घणी राय
की । करे मदन गुणगान ॥ २ ॥ क्षिण अंग थावे नहीं । करे एकांत सहवास ॥ स-

र्मा ॥ आघा आम पधारो पुज्य ॥ यह० ॥ सुण जो होणहार गत भाइ । ते अचिंत्य
गुर्जर आइ ॥ आं ॥ तिण अवसर वसंत ऋतु आइ । वन वाडी फुलाइ ॥ कंद्रप मिल
अहलाद वधावा । वन किडाने जाइ ॥ सुण ॥ १ ॥ राजा राणी सामंत सहेली ओर
पुर का नर नारी ॥ हिल मिल आया बागके मांही । करे भोजन तैयारी ॥ सुण ॥ २ ॥
गाल्ला मोटा बाटी बाफला । घृते पूर्ण भरीया ॥ तेज मशाले दाल झोलकी । चतुराइ
स्यूं करीया ॥ सुण ॥ ३ ॥ और केइ पका नज लाया । जवेरी झारा वणाया ॥ गटकाइ
लोटा भर २ ने ॥ कफ मगनज थाया ॥ सुण ॥ ४ ॥ रंग गुलाल उडाइ गेरी । मिल
वर्गावर्गीका साथे ॥ चंग मृदंग झालरी बाजे । गावे धमाल लटकाते ॥ सुण ॥ ५ ॥इम
रमंता नशोज उतर्यो । क्षुधा तब प्रगटाणी ॥ माल मशाला जीम्या सहु मिल । मन
मान्या उगताणी ॥ सुण ॥ ६ ॥ लेइ तंबोल बेठा एक स्थाने । मिल सहेली परवरीया ॥
वचन विनोद की करी मरकरी । मधुर गायन उच्चरीया ॥ सु ॥ ७ ॥ मकर केतू भूप केतू-
मतिराणी । रूप सुन्दरी बाइ । रूपे रंभा दीठा अचंभा ॥ सुर नर ने उपजाइ ॥ सु ॥
८ ॥ सुकुमाल वाला मोहन माला । सहेली संग संचरीया ॥ नाचे गावे नवरंगे । हेत

ग.धं हिवाले भोगिया ॥ ६ ॥ ९ ॥ साहेल्या विचपी रायनी पुत्री । अदर्श थड ते बारो ॥ स-
हेल्या नही देखंती कुंवरी । विस्मय पाइ अपारो ॥ सु ॥ १० ॥ बाइजी २ सहु पुकारे।
१८ उत्तर नहीं कछु पावे । आस पास सहु ढूंढी जागा । तो पण नहीं देखायो ॥सु॥११॥
घबराइ सब सहु सहेली । हाहा कार मचायो ॥ दोडो २ बाइ किहां गइ । केइक रूदन
कराया ॥ सु ॥ १२ ॥ के सुमति राणी आइ दोडी । आतुरी आइ पूछे ॥ किहां गइ
म्हारी पुत्री प्यारी । रोवानो कारण स्यूं छे ॥ सु ॥ १३ ॥ हम सहु मिल इहां खेलती ।
किहां दृष्टी पाइ ॥ रमती २ अदर्श हो गइ । एकाकी न देखाइ ॥ सु ॥ १४ ॥ नजाणे
पृथ्वीमें पेठी । की आकाश उडाइ ॥ गइ होवे तो ठाम बतावां । अश्चर्य येही आइ
॥ सु ॥ १५ ॥ घबराइ मुरछाइ राणी । दास्या भागी जाइ ॥ अर्ज करी राजाजी आ-
गल । किहां अनर्थ निपजपाइ ॥ सु ॥ १६ ॥ रंगसे भंगथयो तिण अवसर । सहु दोडी
तिहां आइ ॥ किहां गइ बाइ पतोन पाइ । सहु रक्षा घबराइ ॥ सु ॥ १७ ॥ पुस प्रसि-
द्ध गांया सहु स्थानक । ग्राम जंगल के मांइ ॥ स्वार प्यादा घणा दोडीया । मिली
नहीं किम काइ ॥ सु ॥ १८ ॥ आने तो

[illegible] । हू गण घणा ज्यावणु ॥ [illegible]

॥ [illegible] ॥ [illegible] भारी राहू परिणारी । गैहल में आडू रहीमार ॥ श्राव गण गरी

[illegible] आवै । केना आचर्य गाहुगा भाया ११ ॥ श्री ॥ गुहर ॥ गूढो जिन गजगावू हुणा

[illegible] ॥ गगन अंगे शालेल राहू । बैठा हो हेलिमार ॥ १ ॥ बीजो पैर

[illegible] गाड़ [illegible] गीर ॥ ज्यावे कुँवरी भावरी । घर उगम गर गीर ॥ २ ॥

[illegible] । परणायू री पाल ॥ उगवार प गुहे नहीं । जावत जीलित काल

॥ [illegible] ॥ [illegible] । बीजे पूर्जी काज ॥ बैठा ग्याड़ भावरी । परीने रोह गणि

[illegible] ॥ [illegible] बीहो फिरै । राहू रखा बीजो जाय ॥ मबार नाहि गिलो भाड़

[illegible] ॥ ५ ॥ श्राव १४ गी ॥ श्री गगाजी आगन पाहुंता ॥ गाह० ॥

[illegible] हामा री री ॥ मूहूर्त गुराङ्ग जगाड़ हो ॥ आे ॥ इग जोड़ राग

[illegible] । किला गढ गहू श्री गुराङ्ग हो ॥ ऐसा किल कोड़ नहीं जोवां । जिन रखा

[illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥ भाग अगासो न हों गुण भी । तो जिन गढ़ीर ज्यावडू

[illegible] महाग गोही आवों । रीपि रोहणा ग्याड़ गो ॥ उत ॥ २ ॥ गगा

[illegible] आया । पूर्वी ह्मारो गगाडू हो ॥ लिग जिन राजा पाट ए रागली।

नो मुज देखाइ हो ॥ उत ॥ ३ ॥ में जाणतो बहू सज्जन म्हारे । म्हारे कमी नहीं
हो ॥ वत पड्या सहूना गुण जाण्या । मनलधी महूनी मगाइ हो ॥ उत ॥ ४ ॥
नृप वयण सुणीने । सभा सहू अकलाइ हो ॥ निजथी काम न होतो देखी ।
गुडाइ हो ॥ उत ॥ ५ ॥ तुम प्रकामी, तुम गुण वंता । तुम छो नृपने
॥ तुमने नृपने प्रिती घणेरी ॥ तुम जागीरी पाइ हो ॥ उत ॥ ६ ॥ इम कर
विहाणी । तब ज्यूंना मंत्री अकुलाइ हो ॥ इर्षा लाइ मदनने उपर । दावी
मुज टकुराइ हो ॥ उत ॥७॥ चिंते इणने दुःखमें न्हाखु । राय राख्यो छे फुलाइ
॥ मुज थी एह मरोड घणी करे । पण अब थासी सीधाइ हो ॥ उत ॥ ८ ॥ उठ
मह थी अपणी सभामें । मदन जवेरी सवाइ हो ॥ वलमें पूरा काम में सुरा । मुख्य
प्रधान कहाइ हो ॥ उत ॥ ९ ॥ ए वुद्ध वंता पत्तो लगासी । निश्चय लांसी थाइ हो ॥
हां छ इण काम ने जोगा । जावे सो काम थाइ हो ॥ उत ॥ १० ॥ इम सुणी मदन
जी समज्या । ए बोल्या इर्षे भराइ हो ॥ मुज ने दुःखमें न्हाख्या चावे । उंचा एम
॥ उत ॥ ११ ॥ पण आपने तो सीधी रूणी । काम जिन थी सिध थाइ

समस्या मनमें। करे जवेरीनो इपांइ हो॥ परदेश भंज दुःख मे न्हासवा। पण धन्य जवेरी नांइ हो ॥ उत्त ॥ १३ ॥ नामही लेता ततक्षिण उगा थया। डरन जरा लागाइहो ॥ ॥ वृद्ध वंना काम सिद्ध करसी। जोड़ ए आगेसीं थाइ हो ॥ उ ॥ १४ ॥ मुजरो करने मदनजी। आसी दो आज्ञाइ हो ॥ थोडा दिनमें कुँवरी सोदी। लाइ देस्यू तुम नाइ हो ॥ उत्त ॥ १५ ॥ नरपत भाखे तुम पर देशी। इहां आइ ने रह्याइहो ॥ गहुल्कार न न मन उल्कक। रजा किम देवाइ हो ॥ उत्त ॥ १६ ॥ माता पिता पण दूरा तुम थी। साथ छे नहलाइ हो ॥ एकली छोडी किम जवाय। विचारो मन मांइ हो ॥ उत्त ॥ १७ ॥ नमन करीने मदनजी बोले। सहु नी छे कृपाइ हो ॥ मुजने ऐसो काम भाल्याया। निश्चय थी ते थाइ हो ॥ उत्त ॥ १८ ॥ आप सहू के आसिरवाद। अने मुज पुन्य सहाइहो ॥ तिणथी दुःख जरा नहीं थासे। सब संकट विरलाइ हो ॥ उत्त ॥ १९ ॥ इम सुणी राजाजी हर्षाइ। कहे धन्य २ तुम नांइ हो। म्हारी सभामें तुमसो मदनजी। प्रत्यक्ष गुण दीठाइ हो ॥ उत्त ॥ २० ॥ शिघ्र जावो वाद ले आवो। छे प्रभाव म्हाइ हो ॥ धार्यो कार्य सिद्ध तुम थासी। मुज मन इम दरशाइ हो ॥ उत्त ॥ २१ ॥ इम सुणी हर्षाया मदनजी। ढाल द्वादश मांइहो॥ पुण्य यंतने सहू काम सुलभ ॥

ऋषि अमोलख गाई हो ॥ उत्तम॥२२॥०॥दुहा॥ रजा लेइ नृपात तणी । करी छुली प्र-
णाम ॥ वहु परिवारे परिवर्या । आया होटे ताम ॥१॥ भोलवे मूनीमने । राखजो पूरी संभाल ॥
जोगा जोग विचारने। लेजो देजो माल ॥ २ ॥ हूं राजानी रजा थकी । जावूंछूं परदेश
॥ पुनी लास्यू रायनी । करी चोकस धरी रेश ॥ ३ ॥ मुनीम कहे अश्चर्य करी । एतो दु-
कर काम ॥ पुद्धी पल साहस करी । पूर्ण करजो श्याम ॥ ४ ॥ फिकर न कीजो पाछली
। नराइ जोजो आय ॥ होट वंदोवस्त सहू करी । फिर निज सदने जाय ॥ ५ ॥ ढाल
१३ मी ॥ उग्रसेणकी टली ॥ यह ॥ सुणो सभा चित लाय । मदन कुँवरी ने इम सम-
जाय ॥ आं ॥ आया हवेली निज औरी मांया ॥ मूर्खको तव रुप वणाय ॥ सुणो ॥१॥
फटी चिंदी का लीरा लटकाय । माथे वांधी वाल विखराय ॥ सुणो ॥ २ ॥ एक पांय
फाटी एक मूल नाय । फाटी अंगरखी घाली तन माय ॥ सुणो ॥ ३ ॥ ज्युंनी फाटी
टोपी लीवी पेर । सरीरे लगायो धूल राख केर ॥ सुणो ॥ ४ ॥ इत्यादी भेप सज्ज
दरपण जोय । श्रृंगार माहे खामी नहीं कोय ॥ सुणो ॥ ५ ॥ शिघ्र चड आया पांचमें

एक आपो मुज मात की आत ॥ मु ॥ ८ ॥ तिण पूछ्या इहां तूं आया कैम । [illegible]
घर रहे । मुज मरीरने [illegible] ॥ मु ॥ ९ ॥ में कह्यो म्हारा तात दीनों निकाल । रील
[illegible] हुआ आइ । रहूं सुख हाल ॥ मु ॥ १० ॥ एक राज कंन्या पासे रह्यो छुं नोकर ।
[illegible] आवे पेटभर ॥ मु ॥ ११ ॥ फिर ते मुजसे कहे धापीर [illegible] ।
[illegible] करे घणोसोग ॥ मु ॥ १२ ॥ एक वार तिणाथी तूं मिल जरूर जाय
। [illegible] भाय ॥ मु ॥ १३ ॥ में कह्यो पूछस्युं हूं मालकणीने जाय ।
[illegible] मिलस्युं हूं आय ॥ मु ॥ १४ ॥ तिहां थकी दोडी आयो तुमारे
पास । आपनी जे इच्छा ते कीजे प्रकाश ॥ मु ॥ १५ ॥ कहो तो हूं जाइ मिलुं कुटंब
[illegible] । [illegible] मिलुं पाछो आय ॥ मु ॥ १६ ॥ इम सुण कुंवरी ने
[illegible] । एक [illegible] मुज छोड जाये तीर ॥ मु ॥ १७ ॥ महारी उम्मर
[illegible] । [illegible] में किहां पाउं ऐस ॥ मु ॥ १८ ॥ सूर्य नि-
[illegible] आंसू नेणे त्याग । सोगन खा कहे पाछो आस्युं इण ठाम ॥ मु ॥ १९ ॥
[illegible] मिल पाछो आवजो सही । महारी पास किणने केवणी नहीं ॥ मु ॥ २० ॥
[illegible] मास कोइ आस्युं पाछो सही ॥ वचन केहने चाल्या सजन जी तहीं ॥ स ॥

२१॥ नीने आइ मद्द दाम दासी ने ॥ । विश्रामां कह एक धारा महारा राय ॥
सु ॥ २२ ॥ थोडा दिन काज हूं तो जावूं प्रदेश । वंदोवस्त पाछलो राखजो विशेष ॥
सु ॥ २३ ॥ बाहीर कोइ तरह जाणे नहीं पाय । घर मांहे अन्य नहीं आवे चलाय ॥
सु ॥ २४ ॥ महारी कोइ बात जगा जो करी मत । हुकम में रहजो दुःख न धर चिन
॥ सु ॥ २५ ॥ छ महीना की पहली दी नोकरी चुकाय । नीती सर रह्यां देस्यूं इनाम
हूं आय ॥ सु ॥ २६ ॥ इम पुक्त वंदोवस्त कीनो मदन ॥ शुभ महुर्त चाल्य छोड सुवैन
॥ सु ॥ २७ ॥ हलका भार को लियो द्रव्य घणो लार ॥ जिम सह सुख रहे विदेश
मझार ॥ सु ॥ २८ ॥ ढाल त्रयोदश अमोलख ऋषि कहे । पुण्य पसाय जीव मन
सुख लहे ॥ सुगो ॥ २९ ॥ ० द्वितीय खन्ड सारांस हरीगीत छंद ॥ दूजे खंड श्री पुर
पत्तिनी । फरामाते कंन्या हरी ॥ पुर पयठाणे जवेरी होइ । मुक्ताफल परिक्षा करी ॥
पयठाण पुर राजाकी कंन्या सोभवा वीडो गीर ॥ चालीया आगे जवेरी। अमोल गती धड
चरी ॥ २ ॥ परम पुज्य श्री कहान जी ऋषि जी । महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्म
चारी मुनी श्री अमोल ऋषि जी रचित पुण्य प्रकाश मदन कुँवर चरित्रस्य द्वितीय

खण्ड २
१ वचन
१ घर
४१

[illegible] तीर्थंकर [illegible] को । वारंवार नमस्कार ॥ शांती नाथ स्मरण करी ।
करूं तिउ खन्ड उच्चार ॥ १ ॥ मदन चरी छे मनहरी । अधिकाधिक सवाद ॥ ते
सुणीयों श्रोता गणों । छांडी सहू विखवाद ॥ २ ॥ सत्य वडो संसारमें । आराधे
पुण्यवंत ॥ प्राणांते हटे नहीं । तस होवे सहू कंत ॥ ३ ॥ पुर पयठाण थी मदन जी।
करी सहू वंदोवस्त ॥ चाल्या आगे पीदेश में । पुण्य महूर्त परसस्त ॥ ४ ॥ आय ग्रामं
ने वाहीरे । सिद्ध करण ने काज ॥ वाणिक वेश छिपाइयो । वण्या जोगी महाराज ॥५॥
भगवा वस्त्र पहरीया । गले रुद्राक्ष की माल ॥ अंनन भभूती ओपती । काप्या सिर का
वाल ॥ ६ ॥ झोली घाली वगल में । कर में सांटी सहाय ॥ कम्बल खन्धे लटकती ।
शिर शिव तिलक लगाय ॥ ७ ॥ विन आडंवर शांत चित । फिरे भूमंडल मांय ॥ ग्रामा
रण्य शिखरी गीरी । ढूंढता सहूजाय ॥ ८ ॥ साधू रुपथी तेहने । हटकी न सके कोय ॥
वात घणी हाथे लग । आदर सहू जगे होय ॥ ९ ॥ ढाल १ ली ॥ जंवू द्वीपरे भर्त
वखाणीयेरे ॥ यह ॥ मदन कुँवर जी वुद्धि आगला जी ॥ कुँवरी सोदण काम ॥ जोगी
रुप हो पृथवी उल्लंघाता जी । रहता शुभ जोइ ठाम ॥ मदन ॥ १ ॥ वहू पुर घहू
स्थान चोकशा घणी करे जी। किहांइ पता नहीं पाय ॥ तो पण साहस रति नहीं खन्डीयो

जी ॥ आप आगे जी आय ॥ म ॥ २ ॥ आगल जातां ते मार्ग मूलीया जी । पड्या
चलार मे आव ॥ पन्थ भिनाही ते विशानुसार थी जी ॥ जोता पन्थ कमाय ॥ म ॥
३ ॥ पहाड़ झाड़ तिहां मोटा आवीया जी । द्रुम रट महनिल सर्व ॥ कुश काँटाने
निशाण ... जी । लागे मन तिक्ष पर्व ॥ म ॥ ४ ॥ उतंग चडीने ते नीचा आवता
जी ... मांय ॥ वनेचर ग्वचेर क्षुद्री जीवडा जी । वहुला द्रष्टी जी आय
॥ म ॥ ... आगल पांगाल वन रलीया मणो जी । सुन्दर वृक्ष उतंग ॥ ताल तमाल
... वाजां । शाडिम लिंबु सू चंग ॥ म ॥ ६ ॥ रायण केला सेतूत ने आम
जीओ । ... फल फूल ॥ गहरी सुखदा शीतल छांयडी जी । लागे मन अनुकूल
॥ म ॥ ७ ॥ पाजहां उ पंच रंग पहाणमें जी । केइ आसण आकार ॥ मध्य पुष्करणी
... जी । ... मे ते सार ॥ म ॥ ८ ॥ निर्मळ नीर स्फटिक समजिहां
भयों जी । कमोदनी थी फेर ॥ मध्य कमल बहू पद्म ने पुंडरीका जी । बहू रंग दीपे छे
सुंदर ॥ म ॥ ९ ॥ ... कारी ठाम ते आण न जी । दंड कमंडल ठाय ॥ थाक उता-
... [illegible] ॥ म ॥ १० ॥

१ वार्ता
४२

पूर्व[illegible]णी वे आन ॥ म ॥ ११ ॥ कनता भोगवी जन्त आरोगीयोजी । पाछै बेठा मन
[illegible] ॥ जिम हुण [illegible] जिम भीषणाजी । गाजी पृष्ठ मृदंग ॥ म ॥ १२ ॥ झांझी दुडी
[illegible] ॥ [illegible]ओकाजी । कोण करी हुण ठाय ॥ निश्चय संचरे इहां कोइ मानवीजी । पण
[illegible] ॥ म ॥ १३ ॥ इम तरंगा अनेक मन उपजेजी । चारांही कानी ते जो
[illegible] उतरतोजी । जोगी देख खुश होय ॥ म ॥ १४ ॥ प्र-
[illegible] पणोजी । रोम घणा तस अंग ॥ दाढी मूंछ जटा जुट तेहनेजी ।
[illegible] ॥ म ॥ १५ ॥ लोह कडा कर खडावां पगमेंजी । सिन्दूर तिलक
[illegible] कारणे जी । आवे नहीज दाद ॥ म ॥ १६ ॥ मदन
[illegible] आहुणाजी । नाशाग्र दृष्ट ठाय ॥ प्रमेष्ठी नाम जपतो मन चिंयेजी ।
[illegible] ॥ म ॥ १७ ॥ तेतले जोगी ते तिहां आवीयोजी । देखी मदन
[illegible] गुण निलोजी । ध्यानस्त शांत स्वरूप ॥ म ॥१८॥
[illegible] बांधी । जल छोलन्दी किनो अंघोल ॥ वन धोनो ते ईश्वर
[illegible] रहो मोन ॥ म ॥ १९ ॥ मदनजी चिंते एकांत परगमेंजी ।
[illegible] ॥ मानो जोगी के कोइ परपंची थोजी । आवे मन संदेह ॥म॥२०॥

चित धरणा हो ॥ श्रो ॥ ४ ॥ आप जैसे असंगी देखके । पाया मैं आणंद ॥ गुरु जी मुज एसे चाहीये । सदा सुखदाइ सम्बन्ध हो ॥ श्रो ॥ ५ ॥ जोगी कहे हमतो नहीं रखते । चेला मेला कोइ ॥ और जोगी हे बहोत जक्त में । करना गुरु तूं जोइ हो ॥ श्रो ॥ ६ ॥ मदन कहे सामे आइ गंगा । छोड दूर कोण जावें ॥ चेला तो गुण देख के करणा । मठ देखण मन चावे हो ॥ श्रो ॥ ७ ॥ एक दो दिन सेवा कर के । कहोगे तो फिरजास्यूं ॥ पुण्य जोग मिल्यो संत समागम । मूकथो जाय न महास्यूं हो ॥ श्रो ॥ ८ ॥ जल कुम्भ ए मुज ने आवी । मठ लगे पहोंचावूं ॥ महारे सामे आप उठावो । मैं तो घणो शरमाउं जी ॥ श्रो ॥ ९ ॥ बल जोरी घट लियो छोडाइ । करी घणी नरमाइ ॥ जोगी देख के अश्चर्य पाया । चिंते करणो कांइ हो ॥ श्रो ॥ १० ॥ यो थाल न वली इके लो । करेगा क्या उस्रातो ॥ राते इसका मन समजा के । कल करूंगा जातो हो ॥ श्रो ॥ ११ ॥ महा विपम झाडी में चाल्या । मोठा शैल मझारे ॥ आगे पाछे फिरता आया । एक गुफा ने द्वारे हो ॥ श्रो १२ ॥ जोगी आगल माहे पेठो । मदन जी तस लार ॥ पंक्तीया थी नीचा उतर्या । महान्ध कार मझारे हो ॥ श्रो ॥ १३ ॥ अन्ध गुफा में आगे चाल्या । थोडी दूर जातां ॥ प्रकाश देख्यो चौगान आयो । सुन्दर सदन देख•

॥ २ ॥ दाल बाटीने चूरमो । किया तदा तयार ॥ घृत पुरित सजा साजरा । ऋखी कर विचार ॥ ३ ॥ दो हमतो प्रत्यक्ष छां । करया भोजन भोग ॥ किम निपाइ तीन की । देखूं ए संयोग ॥ ४ ॥ तीजाने देख्या विना । जाग्रत होणो नाय ॥ इम निश्चय कर सो रह्या । जो वो तीजो कुण आय ॥ ५ ॥ ढाल ३ जी ॥ आउखो टूटा ने सान्धो को नहींरे ॥ यह ॥ भुक्त तेयार हुयां थकांरे । जोगी मदनने जगायरे ॥ उठरे भोजन करी लहरे । सरल सादे चतलायरे ॥ १ ॥ पत्तो लागो कुँवरी तणोंरे ॥ आं ॥ मदन मन हर्षायरे ॥ उठायो उठे नहींरे । रह्यो नींद घुररायरे ॥ पत्तो ॥ २ ॥ उठाइ बेठो करेरे । तेतो पड२ जायरे ॥ बड २ करे जोगी मनथीरे । एतो दारिद्रि देखायरे ॥ पत्तो ॥ ३ ॥ मांथा फोड इण थी कियांरे । कांइ न निकस ली साररे ॥ जड मुंढ ए कोइ जंगलीरे । उठसी मनथी कांइ वाररे ॥ पत्तो ॥ ४ ॥ भोजन शीतल क्यों करूंरे । लेवूं शिघ्र थी भोगरे ॥ उगयों ते मूकी देउंरे । इण पर कर मन्योंगरे ॥ पत्तो ॥ ५ ॥ उठी गयो गुफा विषेरे । जोवे मदन द्रष्ट पसाररे ॥ गुफा माहें थी सुणावीयोरे । जाणे रोवे कोइ नाररे ॥ पत्तो ॥ ६ ॥ अरे दुष्ट मुज छीवे मतीरे । क्यों लाग्यो म्हारे लाररे ॥ प्राण लवण इच्छा दिलरे ॥ नहीं करूं तुज संग प्याररे ॥ पत्तो ॥ ७ ॥ दूर रहे म्हारा थकीरे । जो जरा म्हारी

वागर ॥ जोगी कहे मंग मतीरे । तुज खुशी करूं कोइ वारेरे ॥ पत्तो ॥ १८ ॥ पुनर्पि मला गुफा विषे । भिक्षा मजबूत लगायरे ॥ विचार केइ करता थकारे । अहार पेट भरनायरे ॥ पत्तो ॥ १९ ॥ बच्यो अहार पात्तल विपेरे । मेली दियो गुडालरे ॥ जाणे ग दृढ मारमेरे । मदन पास ते डालरे ॥ पत्तो ॥ २० विद्याके प्रभावसेरे । उड गयो जोगी अकाशरे । आगला खन्ड की तीसरीरे ॥ डाल अमोल प्रकाशरे ॥ पत्तो ॥ २१ ॥ ० दुहा ॥ जोगी । गइनंतरे । मदन हुवा सावधान ॥ हर्षित चित में चिंतवे । हुगो भाग्य प्रमाण ॥ जहने जोवा नीकल्यो । ते कुँवरी इण ठाम ॥ हिवे लेइने चालीये । निज पाताल गाम ॥ २ ॥ क्षुधा पण लागी अछे । ल्ल ग भुक्त तैयर ॥ अन्न तणो आदर करूं । भुक्त यह प्रकार ॥ ३ ॥ जीमी ने लस हुइ । कुँवरी लेवा काम ॥ आया गुफाने बारणे । मिलपट नेडा जाम ॥ ४ ॥ लंबा कर करवा लग्या । मत २ शद्व सुणाय ॥ चमकी कर पाछो लियो । जोता को न जणाय ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ चार पहेर को ... लाल ॥ यह ॥ फिर तिहां छातथी चोलीयोरे लाल । भले पधार्या मदने ... ॥ मार्ग जोतां तुम तणोरे लाल । वीत्या घणा दिनेश हो ॥ जवेरी ॥ १ ॥ ... विचार ... काजीयेरे लाल ॥ आं ॥ देखी पहलां निज जोर हो । जवेरी ॥ तो सगलो

जाय हो ॥ ज ॥ असूरत्त क्रोध भयोरे लाल । कहे चोरी ऐसी होय हो ॥ ज ॥ का ॥ ॥११॥
जाणे नहीं तूं मुज भणीरे लाल । आयो लेवा माल हो ॥ज॥ मार मारी मुजने घणीरे लाल
में जाण्यो आयो काल हो ॥ ज ॥ का ॥ १२ ॥ विनवणी कीनी घणीरे लाल ।
नहीं आइ तम पीरे हो ॥ज॥ ततक्षिण विद्या प्रभावथीरे लाल।मुज ने वणाव्यो कीरे हो ॥ज॥
॥ का ॥ १३ ॥ मंत्र थकी मुज बान्धीयोरे लाल। न जवाय चन्हीं उलंघ हो ॥ज॥ फिर आइ वेढ़
... ॥ ध्यान तुमारो अभंग हो ॥ज॥ क ॥१४॥ मदन आसी मुज छो डसीरे लाल ।
... दाय उपाय हो ॥ ज ॥ आज पुण्य प्रभाव थीरे लाल । तुम भेटया मुज आ-
य ... ज ॥ का ॥ १५ ॥ ना कह्यो इण कारणे रे लाल । रखो उलजो इण ठाम
हो ॥ ज ॥ छोडन हार और को नहीं रे लाल । कुण करे सघला काम हो ॥ ज ॥का॥
॥ १६ ॥ जोगी रूप ढोंगी छेरे लाल । निर्दय हृदय कठोर हो ॥ ज ॥ रीयसायो बुरा-
... । छे म. पणो चोर हो ॥ ज ॥ का ॥ १७ ॥ लंपटी नारी तणो रे लाल
... अथाग हो ॥ ज ॥ विद्या पण जाणे घणीरे लाल । मरण स्थंभन मोह भाग
॥ ज ॥ का ॥ १८ ॥ महनी विद्या आगले रे लाल । सुरासुर जावे भाग हो ॥ ज ॥
... आपणो किम्यां दाखवूं रे लाल । इण ने आगल लाग हो ॥ ज ॥ का ॥ १९ ॥ तेथी

दुकलगा मुज दुख ताजी । मलोन्मिख निरधार ॥ म ॥ ३ ॥ केम पड्यो तेहनें मने ॥
न उड आवा मुज पास ॥ कुण किहां ना रहवासीया । इम पूछे ते विमास ॥ म ॥ ४ ॥
में कह्यो तुम पूछो किस्यों जी । तुमने कह्या स्युं थाय । तुम हम तो सरीखा मिल्याजी
बोल्यां व्यर्था जाय ॥ म ॥ ५ ॥ विस्मय हुयो ते इम सुणी जी । वली पूछे इण पेर ॥
तुम मागे तोता नहीं जी । छे कोइ दुःख की लेहर ॥ म ॥ ६ ॥ में चमक्यो मनने
विषेजी । ए छे चतुर सुजाण ॥ बोली में मतलब लख्यो जी । हा हा ! पशु विनाण[1]
॥ म ॥ ७ ॥ में कह्यो तुम केवो जिकीजी । साची छे सहू बात ॥ पण दुःख जेहने
कोजोगेजी । जेहथी दुःख विरलात ॥ म ॥ ८ ॥ सुक कहे तुम किम जाणीयोजी । में न
करुं दुःख दूर ॥ पक्षी सरीखा जक्तमें जी । कुण नर लायक पूर ॥ म ॥ ९ ॥ वीर
मर्ना शुकने कहेजी । पामी बहुली रिध्द ॥ कुसुम श्री शुक जोगथीजी । सील राख्यो
भलो विध ॥ म ॥ १० ॥ दमदंती हँस पसायथीजी । कीधा बहुला काम ॥ विपथी
राग उगारीयो जी । जो वो पोपट का काम ॥ म ॥ ११ ॥ एकावतारी तीर्यंच हुवेजी ।
ाले घारा वृत ॥ भगवंत भाख्यो निज मुखेजी । जोवो पशुना कृत ॥ म ॥ १२ ॥
त्यागी पशू तणाजी । द्रष्टांत बहु जग मांय ॥ निज मुखथी निज कीर्ती जी । करतां

[1] निशान

[illegible] मां एह आमप ॥ म जा
[illegible] पयाटणकोर्जा । मे हूं भ-
[illegible] अवतूत ॥म २५ ॥ तम लक्षण हूं
[illegible] फन्यो जागो नेजो । ग निर्दय छ धूष्ट ॥ म
[illegible] पशु अवतार ॥ ल्याथी देणा पड्यां । अब दुःख
[illegible] नमन थयो । अब दा नो केह उपाय ॥ कि-
[illegible] आय ॥ म ॥ १८ ॥ उपायनो हूं जाणूं छुं । पण
[illegible] मूगो जो मिलनो । जोगीनो जाम गमाय ॥ म ॥ १९ ॥ ए
[illegible] आ छू मह कर्म ॥ करामातो जो मिल तो । खोले सगला भर्म
[illegible] वर्टा चुपको रहो जी । ढाल पंचमी मांय ॥ तीजा खन्ड की कही
[illegible] उपाय बनाय ॥ म ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ कृतघी शुक कहे मदनसे
[illegible] नरमाय ॥ इम निरास नहीं कीजीये । बान्ध आस फास माय ॥ २ ॥
[illegible]

[illegible] सिद्ध करास्यें भाय ॥ ३ ॥ कथा विना नहीं चालसी ॥ जागो जीतण घात ॥ उपकार
[illegible] अतिघणो । तीन मनुष्य मुख पान ॥ ४ ॥ इम अर्हद् थी पूछतां । ते कहे सुण
[illegible] ध्यान ॥ [illegible] मदन ने । ते करसी पुण्य वान ॥ ५ ॥ ढाल ६ ठी ॥ नहीं सं
[illegible] निरोपम ॥ [illegible] ॥ सुणो मदन धरी हृदय सदन ए । कीजे सुख को उ-
[illegible] सिद्ध होवे । शुकवर मुजने बतायो ॥ सुणो ॥ १ ॥ इण हिज
[illegible] आगा था गुण वंता ॥ ध्यान ज्ञान सील संतोष वैराग्य । करीने
[illegible] ॥ सु ॥ २ ॥ तिण नो ए रुद्र शंकर नामे । चेलो छे अभी मानी ॥ वा-
[illegible] विद्या छानी ॥ सु ॥ ३ ॥ हुवो प्रवीन यो योवन वंतो
[illegible] मर्याद न माने गुरुंकी । अशुभो दय तस जाग्यो ॥ सु ॥
[illegible] ने नहीं माने लगारो ॥ अविनय वणो करवा लाग्यो
[illegible] ॥ सु ॥ ५ ॥ गुरुजी मन रमावा काजे । पाल्यो मुज धर प्रे
[illegible] आदी तेम ॥ सु ॥ ६ ॥ एकदा गुरु चितामें
[illegible] में पूछ्यो श्वामी । स्यूं विचार मन ध्यान ॥ सु ॥
[illegible] विषयकी क्षारी ॥ अतीत को इण धर्म लजायो !

[illegible] आइ गान [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ सु ॥ १९ ॥ ते कने मांगे ते वर आपे । रहनो ते मद गाले ॥ ए

[illegible] समाइ । करगया ते काल ॥ सु ॥ २० ॥ गुरु वियोगे हूं दुःख पामु । रहुं

[illegible] ॥ हम गये गुरुश्वर मुजने । तिनकी यात चेताइ ॥ सु ॥ २१ ॥ कहे

[illegible] मुर्णाय । म्हारो मन हर्षायो ॥ वाट तुम्हारी जोतो बेठो । तुम दर्शने

[illegible] ॥ २२ ॥ ए कारज तुम हाथे धार्या । कीजे सहास धारी ॥ तीजा

[illegible] । ऋषि अमोल उच्चारी ॥ सु ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ मदन कहे

[illegible] । अपणा हितकी यात ॥ हिम्मत धर निपजा वस्यु । थोडेह काले भ्रात ॥१॥

[illegible] कार्य हुगां । मुज मन जाजो भूल ॥ जिम कुँवरीने सुखी करो । तिम मुज

[illegible] ॥ २ ॥ मानव पुनः मुजने करी । मिलावो परिवार ॥ यह मुज इच्छा

[illegible] आभार ॥३॥ मदन कहे कार्य हुया । पहला छेद तुम दुःख ॥ कुँवरी मिलावु

[illegible] ॥४॥ ए निश्चय चित राखजो । रहजो सदा हुंशीयार ॥ हूं सहु कार्य साधने ।

[illegible] ॥५॥ ढाल ७ मी ॥ राग वेलावल ॥ रंगडी याला वावला ॥ यह ॥ साहस धारी

[illegible] जावे ॥ जे साहसवंत ने उद्यामी । तहुना सहु सिद्ध थावे

।। ॥ १ ॥ गज वन अटवी उलंघता । रहेता तरु गिरी छांहे ॥ वनफळ योग्य आ
... ना । वे पांकर चल्या जावे ॥ सा ॥ २ ॥ कांटा कंकर पांवे चुवे । महा गीरे उलं
घे ॥ दुःख ... नहीं वेदता ॥ घणा जोवा उमंगे ॥ सा ॥ ३ ॥ पुण्य प्रभावे वनचर
तणा । जरा दुःख नहीं थावे ॥ देखी अनोखी वस्तुने । अति आणंद लावे ॥ सा ॥ ४ ॥
इम चलता गिरी शिखरपे । चडीया घणा उंचा ॥ आगल जांवे. ततले । मन कार्य पहूं-
चा ॥ सा ॥ ५ ॥ मणी शिखर झगमग करे । जाणे गगने लाग्यो ॥ ध्वजा पताका चि
न्हय । देख दुःख सहू भाग्यो ॥ सा ॥ ६ ॥ जे भक्रसेण शुक दाखव्यो । ते एही दे-
वाहर ॥ निर्णहाज रस्ते चालीया । मनमें घणा गह गय ॥ सा ॥ ७ ॥ सम भूमी पर
आवता । वन रमणिक जोड़ ॥ अनेक उत्तम वृक्ष वेलडी । फल फूल भर्योइ ॥ सा ॥ ८ ॥
नाभांव जन्या पापाण त्या । जाणे विच्छा गर्लाचा । इम मनमें मालता । पोखरणीये
पहोंच्या ॥ सा ॥ ९ ॥ ते मकाराणी पापाणमें । जाण सुझ घणाइ ॥ यथास्थान रंग शो-
भतां । जाणं चतुरे भर्यांइ ॥ सा ॥ १० ॥ भंड वस्त्र अलगा धरी । पुष्करणी में आया ॥
जल क्रिडा गमती करी । मदनजी न्हाया ॥ सा ॥ ११ ॥ भीने वस्त्रथी रही । ...

खण्ड

१ जंगली

[illegible] प्रमाणुक कामा ॥ सा ॥ १३ ॥
[illegible] शरणागत सहाइ ॥ सामर्थ्य करवा सर्व तूं ॥ शक्ती सर्व पाइ
॥ सा ॥ १४ ॥ [illegible] मांभली । मुज मन उमायो ॥ संकट थीकट सहन करी ।
[illegible] आयो ॥ सा ॥ १५ ॥ न चाहूं धन संपदा । न चाहूं मैं नारी ॥ पर उपकार
[illegible] संकट मारी ॥ सा ॥ १६ ॥ तिणमां सहाय कर सदा । [illegible] उत्तम आ-
[illegible] आपको । मुज कार्य सारो ॥ सा ॥ १७ ॥ अर्ज एती अब धारीये
[illegible] ॥ जो होवे कोइ असातना । गुन्हा क्षम जो महारो ॥ सा ॥ १८ ॥
[illegible] नहीं पावे ॥ दुःख नहीं किंचित देसके । घम्म.केर आवे
[illegible] ॥ १९ ॥ [illegible] मुज [illegible] । मुज कार्य सारे ॥ एही इच्छा मिद्ध करो । इम प्रणा-
[illegible] ॥ सा ॥ २० ॥ आंयदा सूर्य पाछले । [illegible] वाट जोइ ॥ ढाल सात
[illegible] । पूण्य थी सहु होइ ॥ सा ॥ २१ ॥ ० ॥ दुहा ॥ पुनम पूरी उगीयो ।
[illegible] ॥ [illegible] पसरी चोकसे । नाशी गयो तव अन्ध ॥१॥ व्योम मारगे सां-
[illegible] ॥ प्रकाश पड्यो देवल विषे । सदन हुयो हुशीयार ॥ २ ॥
[illegible] । [illegible] अपार ॥ षोडश श्रृंगारे सजी । ऊभी देवल दार ॥ ३

॥ मन घच ने नम्र कर। आइ यक्ष सन्मुख ॥ कर प्रणामी स्तुती करे। बहू विनय ले-
घा सुख ॥ ४ ॥ मन रली पूर्ण करण। कला सुधारण काज ॥ एकांत स्थानक लखी।
सजीयो नाटक साज ॥ ५ ॥ ® ॥ ढाल ८ मी ॥ लावणी ॥ आश्चर्य जे कथा रसाल
थकी ॥ एक ॥ काम देव री जावण कारण। रंभा खड़ी ज्यों इन्द्र परी ॥ चार सारंगी
वारले तपले। चार मजीरे कर धरी। चार परीने पहरा घाघरा। घेर दार बहू झलके जरी॥
ओड पिताम्बर आतिही सुन्दर। रेशमी बहु रंग भरी ॥ बुलन्द अवाजी पाय घुघरी।
बान्धी बरोबर सोले खडी ॥ होय पुण्य पूर्वले जिन के। जब जन को मिले ऐसी घडी
॥ आं ॥ १ ॥ धप मप २ बाजे मृदंग। थाप लगे है सम्मत से ॥ सण २ कर सारंगी
बोले। तान मिलाइ रम्मत से ॥ टमक २ बाजे मजीरे। हिला सीस को जम्मत से ॥
चारोंही श्री श्वर मिलाइ। राग अलापी गम्मत से ॥ प्रथम तो धृपद उच्चारी। ध्वनी
जाय गगन चडी ॥ होय ॥ २ ॥ तीन तान और सप्त श्वर से। राग रागणी छत्तीसों ॥
योग्य वक्त सिर रीत रायसे। मिला ध्वनी उच्चारी सो॥ घननन २ घाले घुमरी। ठमक २
घ. घाले ॥ ...

मनकी जी रही ॥ मंत तंत परितंत छूट तब । आपसमें मसगुली चली ॥ हार हीरो गव
भरणी उपर । पसीनें के उतारे वेल ॥ मूर्त सुखी गुलाब कुसुमजयू । मुलके नूर नैणा खेले ॥
नाग उठाये शिला ग्रहपे । जाणे नागन बैठे पडी ॥ हो ॥ ४ ॥ फाड चलो पुष्करणी अ-
न्दर । धाक समावां करां नावण ॥ नृत्य सामग्री मूकी त्यांही । कपड बदले तन छावण
॥ आइ खडी बावडी पाजपर । उतार साडी तिहां रखे । सहू पडी निर्मल नीरमें । जल
क्रिडा करे भय पखे ॥ दोष न किनकी सहू मिली नारी । ख्याल गम्मत में रही अडी ॥
हो ॥ ५ ॥ मदन वेग कर आनंद पाया । आज मिला मौका भारी ॥ अपूर्व नाटक नैणं
निरख्या । क्या सोहे किन्नरी नारी ॥ क्या नृत्य? क्या गायन इनका? क्यातान? रहे आश्चर्य
पा ॥ मजा अनोखा मुजको पताय । मत्रसेण गुरुकी कृपा ॥ अब यक्ष कार्य साधन फे।
कथा प्रमाण गल जोडी ॥ हो ॥ १६ ॥ पडी चरण यक्षराजके बोले । सरणोंहे श्रामी थां
रा ॥ लुपते २ चले अधर जब । छिपते श्याल जो अन्धारो ॥ वस्त्र पास आ चन्द्र चांदणी
व्यामार ओलग्न लिया ॥ लघुलघुथी कला प्रभावे । हरण करी देवल में गया ॥ बैठे चं
द्र मुशकां विलंबे । दोनों पट को लिये जडी ॥ हो ॥ ७ ॥ जलक्रिडा कर सखी सु
री । आइ तब पावडी पारे ॥ शीतल पवनंस अंग थरे २ । दोनों वस्त्र भीडी जारं ॥

मज्झागा ॥ आपणा ... आँख ...
... जी आरज्जी पूछे झाँई ॥ दो ॥१२॥ मदन कछु उत्तर नहीं आवे।
... हिम्मत हर है थाइ । गुम सदा यह इहां आइ ॥ निद्धर
... पाइ ॥ बोलाया बोलै न जरा भर । क्या है इसके मन
... सुगाणी दुणा होवे । के जाने अपणी गरडी ॥ दो ॥१३॥ अहो धन्वन्तर दो
... कांपी ॥ कहो तुम्हारे मन में होय सो। अभय वचन दीना
... नीगल नहीं भार्षा ॥ चोर चले हमारे सन्ने
... ॥ कहो तुमारे मनने होय सो करे कार्य गढ
... ॥ दो ॥ १४ ॥ ... मदन रूपाया । पट के आडे उभे रही । लीलाम्बर
... । ... ॥ तत्क्षिण मदन जी बाहिर आये । मद्दु
... पाइ । ... मारग ... । मानव पुण्यवंत देखाइ ॥ ढाल
... पुण्यवंत की झुकनी पड़ी ॥ दो ॥ १५ ॥ ६ ॥
... ॥ ... अवस्था । अहो पुरुष महा भाग्य ॥ किण
... आविया ॥ कौनी हम में लाग ॥ १ ॥ चाहीये सो दरशाइये । हम सर्गिनां

उत्तम ठाम । मो मेंटो मोजोर ॥ ९ ॥ मवन कहे आप प्रसाय । ए मिगमाबुर ॥ निश्चय के मुज मन । ने ब्रह्म ल्यावूं ॥ १० ॥ तोतो थासी काम । महारा सहू सिद्धारे ॥ किसरी नयां तुं कार । वनाम्मूं विचीरे ॥ ११ आवती पूनम रात । जल लेइ आजोरे ॥ मंत्री केम्मूं नह । कुमरी ने जाजोरे ॥ १२ ॥ हम ने हुइ बहु वार । अब हम जास्यारे ॥ आवती पूनम रात । निश्चय आस्यारे ॥ १३ ॥ देखी मदन पुणवंत । सहू हर्षाइरे ॥ रती गमनी प्रसन्न । मांग करे हाइरे ॥ १४ ॥ होसी फते तुज काम । रखो हुंसीयारीरे ॥ इम कही चाली निमाण । मोलइ नारीरे ॥ १५ ॥ मदन जी कियो प्रणाम । ते उड चालीया ॥ भामी मदन ने चिन । रहे घर मालीरे ॥ १६ ॥ मदन जी करे विचार । वध्यो रखी कामाय ॥ करग्नूं हिम्मत राम । प्रभू पूरे हामोरे ॥ १७ ॥ सूता देवल मांय । रात मकार ॥ प्रात गक्ष सन्मुख । सीसन मार्डारे ॥ १८ ॥ मान्यो घणो उपकार । रक्षा करजोरे ॥ इम आगे हो ज्यों सहाय । हो ज्यों मुज चीतीरे ॥ १९ ॥ होइ सज तत्काल । आगे चाल्यारे । भयकार अटवी पहाड । नेणे निहाल्यारे ॥ २० ॥ ते नहीं डरे लगार । हर्षी चाल्या आगे ॥ करता नित्य फळ अहार । झाड पर रहावेरे ॥ २१ ॥ थोडा दिन मांय । नगर विश्यागोरे ॥ मनहर तेहना भवन । देख हर्षायोरे ॥ २२ ॥ आतां तेहने

[illegible] आस्ट्र दुर्गात नार्हीं ॥ इणे किम नाम किया जहारीरे ॥ भा ॥ ६ ॥ इसी खुशा-
मद कर किण काजे । नहीं भीम छे एह टगारीरे ॥ भा ॥ ७ ॥ अपणां पास से किस्यो
[illegible] । मैं तो पहला छां थारीरे ॥ भा ॥ ८ ॥ तिहां विराजी आणद पाया । थाक
[illegible] गयो गयारीरे ॥ भा ॥ ९ ॥ दूजो जोगी बेठो पासे । रह्यो मून ते धारीरे ॥भा॥१०॥
पूछे मदन तिण कन्या सांइ ॥ किण कारण रह्यो एक लारीरे ॥ भा ॥ ११ ॥ किण का-
रण [illegible] । किहां गया नरनारीरे ॥ भा ॥ १२ ॥ महारो नाम थें किम पहचाणो
। किण काज मांग निहारीरे ॥ भा ॥ १३ ॥ नव कुँवरी कहे नरमाइ । भोजन जीम्यां
[illegible] ॥ भा ॥ १४ ॥ नहीं अंतर आपस है कांइ । जीवां छां आप आधारीरे ॥
भा ॥ १५ ॥ मदन अणांगी अन्न ते मानी ॥ तव उण्णोदक थयारीरे ॥ भा ॥ १६ ॥
[illegible] नो मर्दन कीधो । फिर भुज्जोदक नथारीरे ॥ भा ॥ १७ ॥ ते तले तिण
[illegible] । अति चतुरता संवारीरे ॥ भा ॥ १८ ॥ शाल दाल घृत लिए पकान ।
[illegible] बहु त्यारीरे ॥ भा ॥ १९ ॥ रुडो पाट सोनारी थाली । मुखमली गादी वि-
छारीरे ॥ भा ॥ २० ॥ बैठी रत्न जडित कटोरी । क्यारी नाय हम झारीरे ॥भा॥२१॥
[illegible] बहु भोभाग्य । कुँवरी करी पुरस्कारीरे ॥ भा ॥ २२ ॥ बीजा जोगीने भेला बे-

म ता आलखू इणने नाहीं ॥ इण किम नाम कियो जहारीरे ॥ भा ॥ ६ ॥ इत्ती खुशामद करे किण काजे । नहीं दीसे छे एह ठगारीरे ॥ भा ॥ ७ ॥ अपणां पास से किस्यो लेसी । में तो पहला छां वावारीरे ॥ भा ॥ ८ ॥ तिहां विराजी आणद पाया । थाक सहु गल्रो गयारीरे ॥ भा ॥ ९ ॥ दूजो जोगी वेठो पासे । रह्यो मून ते धारीरे ॥भा॥१०॥ पूछे मदन तिण कंन्या तांइ ॥ किण कारण रह्यो एक लारीरे ॥ भा ॥ ११ ॥ किण कारण पुर ए उजड । किहां गया नरनारीरे ॥ भा ॥ १२ ॥ महारो नाम थें किम पहचाणो । किण काज मार्ग निहारीरे ॥ भा ॥ १३ ॥ तब कुँवरी कहे नरमाइ । भोजन जीम्यां कहुं सारीरे ॥ भा ॥ १४ ॥ नहीं अंतर आपसे हे कांइ । जीवां छां आप आधारीरे ॥ भा ॥ १५ ॥ मदन अचंभी अर्ज ते मानी ॥ तब उष्णोदक थयारीरे ॥ भा ॥ १६ ॥ पाठी नल नो मर्दन कीधो । फिर शुद्धोदक न्यारीरे ॥ भा ॥ १७ ॥ ते तले तिण रसोइ वणाइ । अति चतुरता संवारीरे ॥ भा ॥ १८ ॥ शाल दाल घृत मिष्ट पक्वान । व्यंजनादी बहू त्यारीरे ॥ भा ॥ १९ ॥ रजत पाट सोनारी थाली । मुखमली गादी विछारीरे ॥ भा ॥ २० ॥ मेली रत्न जडित कटोरी । स्वादी तोय हेम झारीरे ॥भा॥२१॥ अनुक्रमे सहु जीमाया । कुँवरी करी पुरस्कारीरे ॥ भा ॥ २२ ॥ वीजा जोगीने भेला वे-

[illegible] हो ॥ म ॥ ४ ॥ गढ़ों ओगे सहु सामंती । मुंगे निर्भो काळ हो ॥ म ॥
[illegible] कीयो । इण पुर पर मेताळ हो ॥ म ॥ भव्य ॥ ५ ॥ कोप्यो सुर अति
[illegible] । करां अतिकाळ हो ॥ म ॥ आयो इहां चलायने । आणे आयो जम काळ हो
॥ म ॥ [illegible] ॥ अग्गाद शब्द कियो अति । सेंपे पाडी पीस हो ॥ म ॥ प्रजा ओ
[illegible] पीस हो ॥ म ॥ भव्य ॥ ७ ॥ हाट हवेली भूंडीया । पडी-
[illegible] ॥ म ॥ लोक सहु भय भ्रंत थया ॥ पम्या पणां निरसाद हो॥ म॥
[illegible] पर भव सरजना । न्हाठा केइ जीव हो ॥ म ॥ कोइ न जोवे
[illegible] ॥ शेन हो ॥ म ॥ भव्य ॥ ९ ॥ राजाजी भय भ्रंत थइ । केइ निज
[illegible] ॥ म ॥ भागा वन में जा रह्या । करता सोच अपार हो ॥ म ॥ भव्य ॥
[illegible] पायवळ भूंडीया । जे जे भागा लोक हो ॥ म ॥ चउकाली भी मु-
[illegible] संताप हो ॥ म ॥ भव्य ॥ १२ ॥ खान पान मकान को । किंयो
[illegible] ॥ म ॥ धन वासी सहु जन वण्या । सहता दुःख ने कस्ट हो ॥ म ॥
[illegible] पशु पक्षी पण आसरा । मदा भय थी गया नास हो ॥ म ॥ मनु-
[illegible] । पशी दयाणी त्रास हो ॥ म ॥ भव्य ॥ १३ ॥ इण कारण पुण

ली इण ठाम हो ॥ म ॥ जोगी तणो रुप धारने । बन्धव गया आप साम हो ॥ म ॥भ॥ ॥ २४ ॥ नैमितिकना कहेण थी । पेछाण्या हम आप हो ॥ म ॥ द्वादश ढाल अमोल कही । टल्या सहू संताप हो ॥मदन॥ भ ॥ २५ ॥ ॥ दुहा ॥ दर्शन दीठा राजरा । हुया घणा आणंद ॥ वीत्यो वृतांत हम तणो । कह्यो सर्व सम्बन्ध ॥१ ॥ हिवे कृपा हम पर करी । एनो कीजे काज ॥ सरणे आया राजके । रखीये हमारी लाज ॥ २ ॥ मदन कहे मुज शक्त थी । जो थासी उपकार ॥ तो पाछो हटस्युं नहीं । करस्यु काम विचार ॥ ३ ॥ संध्या हुइ तिण अवसर । भणी बन्धव दोय ॥ नरमाइ कहे मदनने । अब रहणा नहीं होय ॥ ४ ॥ असुर आवण वेला हुइ । पधारो वन माय ॥ रयणी तिहां सुख थी रही ॥ प्रात आवस्यु छांय ॥ ५ ॥ मदन कहे जावो तुमे । हूं रहस्यू इण ठाम ॥ रात मिलस्यु असुर थी । करस्यु थाणो काम ॥ ६ ॥ प्राते तुम सहू देखजो । इम सुणी हरख ॥ प्रणामी पद मदन तणा ॥ दोनू ते तव जाय ॥ ७ ॥ ॥ ढाल १३ मी॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ यह ॥ उभय गया तदनंतरे जी । मदन चिंते मन माय ॥ असुर आवण अब वार छेजी । किस्यो करूं इण ठाय ॥ चतुर नर । साहस वंत मदन ॥ आं ॥ १ ॥ जिण कामें इहां में आवीयो जी । ते करूं पहली जाय ॥ सत वट वृक्ष

१२ ॥ मदन कहे इम ना कथा जी । नहीं मानूं मैं बात ॥ ना कहो किण कारण जी
कहो होइ साक्षात ॥ च ॥ १३ ॥ इम कही कूप में चालीयाजी । देवने आइ रीस ॥
उठाइ न्हाख्यो बाहिरे जी । पूगी नहीं जगीस ॥ च ॥ १४ ॥ मदन सावध हुइ कहे
जी । इम करणो नही जोग ॥ तुच्छ वरत जल सारीखी जी । किम नहीं करवा दो
भोग ॥ च ॥ १५ ॥ विन कारण तुम मुज भणी जी । क्यों न्हाख्यो दुःख माय ॥ गृह
उदक लिया विनाजी । मुज थी नहीं जवाय ॥ च ॥ १६ ॥ इम कही उठ्यो तत्क्षिणे
जी । चाल्यो कूप मझार ॥ देव कहे धीटा थनेरे । लज्ज डर न लगार ॥ च ॥ १७ ॥
कमयन्ती आइ थायशिरे । क्यों तूं वांछे मोत ॥ पण मदन जी सुणे नहीं जी । कहे इम
क्यों कांइ हान ॥ च ॥ १८ ॥ असुर तब असुरत्त थयो जी । तत्क्षिण मदन उठाय ॥
वट शाखाने चेंटावीयो जी । हाल्यो चाल्यो नहीं जाय ॥ च ॥ १९ ॥ मदन चिंते रुडो
थयो जी । करणो किस्यो उपाय ॥ होणहार तिम थावसी जी । चिंता कियां काइ
थाय ॥ च ॥ २० ॥ मदन लटक्या वट शाखने जी । ढाल तेरमी मांय ॥ अमुल्य
अक्षय आग घणों जी । सुणा जो चित लगाय ॥ च ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ क्रोधे
व्याप्यो व्यंतरो । महा वायु चलाय ॥ मूल सहित वट उपडी । उडी देशांतर जाय ॥

जी ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ मेहर निजर म्हारा पर कीजे । जीवित दान मुज दीजे जी ॥ मरं-
णान्तिक उपसर्ग मुकाइ । अभय दान फल लीजे जी ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ उपकार मुजपे
मोटो थासी । मानव जान बच जासी जी ॥ इत्यादी विनंती करी कह्यो । छोडावो मुज
फासी जी ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ सेठजीने दया दिल आइ । मदन तणों कर साइ जी ॥
खेंची ततक्षिण नीचे न्हाख्यो । तेतले अश्चर्य थाइ जी ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ सेठजी लटक्या
वडने जाइ । मदन जी अश्चर्य पाइ जी ॥ सावंत शाहतो अती घबराया । हे प्रभू अब
करूं कांइ जी ॥ पुण्य ॥ १० ॥ ए नर नहीं कोइ छे इन्द्र जल्यो । मुजने फंद में डाली
जी ॥ आप छूटीने किहां अब जावे । सेठजी पाडी किकारी जी ॥ पुण्य ॥ ११ ॥
धावोर धावो दुष्ट ने पकडो । इण कीधो अन्यायो जी ॥ उपकारनो बदलो इण दीधो ।
अपकारी ए मवायो जी ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ मदन कहे सेट दोष नहीं महारो । हूं नहीं
जाणु भेदो जी ॥ उपकारी आपपे संकट जोइ । हूं पावूं छूं खेदो जी ॥ पुण्य ॥ १३ ॥
सेठकहे कर छूटको झारो । तो तूं जीवतो जासीजी ॥ नहींतो फिर पजी नी पुरी । था-
रो इण ठाम थासी जी ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ मदन सेठ नेडो नहीं जावे । रखे पाछो जावूं
चटी जी ॥ उतारे सेठनो साद सुणीयो ॥ थी थोडीसी छेटी जी ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ सहू

वेद अति मणो ॥ दुःख पाम दरसाग ॥ ५ ॥ कुं ॥ ढाल १५ मी ॥ कागल टहुक रहा मधुवन में ॥ यह ॥ गुणी की संगत गुणी जन पावे । गुणी ने गुणी मिल्या हर्षावे ॥ आं ॥ मदन गुणवंत जोगी जोइ । मन मांहे खुसी घणी होइ ॥ गु ॥ १ ॥ ततक्षिण आइ पड्यो जोगी चरने । स्तुती करी रह्यो उत्सहा धरने ॥ गु ॥ २ ॥ हिवे सरणो छे नाथ तुमारो । ए महा संकट माहरो निवारो ॥ गु ॥ ३ ॥ हूं निराधार पड्यो फंद मांह । मुज अपराध इण में कुछ नाइ ॥ गु ॥ ४ ॥ सेठ जी मुज पे कियां उपकारो । अशुभ उदय थी भयो अपकारो ॥ गु ॥ ५ ॥ सहू कहे यो मीठो कपटी । मत चाले लागो [illegible] ॥ गु ॥ ६ ॥ मदन की दया जोगी ने आइ । सहू जनने विश्वास दी याइ ॥ गु ॥ ७ ॥ थांरा की ततक्षिण चट के लगाइ ॥ सेठ जी ततक्षिण पड्या हेठे आइ ॥ गु ॥ ८ ॥ उठीने जोगी चरणे लागा । गुरु दर्शन थी सहू दुःख भागा ॥ गु ॥ ९ ॥ [illegible] जोगी की करे वडाइ । ऐसा करामाती जग विरलाइ ॥ गु ॥ १० ॥ नमन [illegible] आधीन नांइ । निज २ उतारे गुरु आ रह्याइ ॥ गु ॥ ११ ॥ मदन जी चाल्यो [illegible] । चिंते काम होसी थांसे म्हारो ॥ गु ॥ १२ ॥ ए करामाती पाणी [illegible] थी गाय गंन्या दुःख जासी ॥ गु ॥ १३ ॥ आनंद पुग्ने वेही वसासे ।

जागो करांगांतो पाडगो । एवा भाग भन्के मासर । अमोल्क कोवे, दस्सारीया ॥ ३ ॥

परम पूज्य श्री कहान जी ऋषि जी महाराज के सम्प्रदायके बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री अमोलक ऋषि जी रचित पुण्य प्रकाश मदन कुँवर चरित्रस्य तृतीय खन्डम् समाप्त ॥ ३ ॥

॥ दुहा ॥ अर्हंत सिद्ध साधू धरम ॥ एही यह संरणा चार ॥ नेमी नाथ नमन करी ॥ कहूं चौथो अधिकार ॥ १ ॥ मदन कथन अति मन रमन । सुणता विसेसे हुल्लास ॥ गुणता मन गंथ उत्तम तिम । केगुणी गुण प्रकास ॥ २ ॥ बुद्धिबल सहूथी अधिक । जो मानव तन होय । अधर्य चकित सहूने करे । गुण जो ते सहू कोय ॥ ३ ॥ रही मदन जोगी कने । सेवा सारे हमेश ॥ नित जोगी परखीये । देइ को आदेश ॥ ४ ॥ एकदा ध्यान अर्ध मे । जोगी अने मदन ॥ विनोद वात करता थका । बेठा अन्य सदन ॥ ५ ॥ रुदन शब्द सुणीयो तदा । जोगी कहे कुण रोय ॥ मदन कहे नारी अछे । कहो ना आयु जोय ॥ ६ ॥ साहस पेखी मदन को । जोगी हुकम फरमाय ॥ जावो खबर आवो अही । किण कारण अरडाय ॥ ७ ॥ तत्क्षिण उठा मदन जी । जोगीने पग

१ बड़े

२ मन्दरां

हु राखूं इण कारणे । मुज जमवारे जासी केम ॥ सा ॥ म्हारो रक्षण कुण करे । विण
प्यारे म्हारो प्रेम ॥ सा ॥ ९ ॥ मदन कहे गत वातनो । वाइ पश्चाताप अजोग ॥ सा ॥
थांरे प्यारे सम्बन्ध को ॥ वाइ इत्ता दिन संजोग ॥ सा ॥ १० ॥ समता धारी विरमी-
ये वाइ । क्षण हूंतो ए विलाप ॥ सा ॥ महीला कहे इम किम कहो छो । सत्पुरूप हो
आप ॥ सा ॥ ११ ॥ मदन कहे किस्यो करूं ॥ कांइ मूवा न जीवता होय ॥ सा ॥
और कहो शो मैं करूं । तुम उपाय वतावो सोय ॥ सा ॥ १२ ॥
कांता कहे मुज कंत नो । मने मुख जोवा नी हाम ॥ सा ॥ मनडो अति त-
रस्यो रगो । ने किम होवे मुज काम ॥ सा ॥ १३ ॥ सूली तो उंची घणी । कांइ मुज
थी नहीं चडाय ॥ सा ॥ १४ ॥ कृपा करी मुज उपरे । आप दर्शन देवो कराय ॥ सा ॥
॥ १५ ॥ मदन कहे पर नार ने तन । कर लगावा पच्चखाण ॥ सा ॥ पण उपाय एक
दाखू । निम देखो तुम प्राण ॥ सा ॥ १६ ॥ नमीने मैं उभो रहूँ वाइ ॥ इण सूलीके
पास ॥ सा ॥ तुम चडी मुज पीठपे । सहु पूरो मन की आस ॥ सा ॥ १७ ॥ खुशी
हुइ नारी भणे कांइ । ठीक वताइ रीत ॥ सा ॥ मदन नम्यो नारी चडी । तव करवा
प्रीतम प्रीत ॥ सा ॥ १८ ॥ प्रेम धरीने निरखथी । तव मुरदे मुंब्र दीयो फाड ॥ सा ॥

गढ़ हुंशार ॥ इण स्थानक साधन करूं । फल श्री विद्या सार ॥ ४ ॥ इम चिंता करे म-
दन मौ । सुणो नाथ गुण थाय ॥ विद्या म्हारे साधवी । जो सहायक तुम थात ॥ ५ ॥
॥ ० ॥ ढाल ॥ २ जी ॥ श्री जिन अजित नमु जय कारी ॥ यह ॥ मदन सेण महा
पुण्यवंत प्राणी । सुणीयों जोगी वचनजी ॥ कर जोडी ने इण पर बोले । हर्षित करीने
मनजी ॥ म ॥ १ ॥ सुणयो विद्या साधोस्वामी । करस्यूं शक्ती सारु सेवजी ॥ महारा
जोगी हुकम फरमावो । ते करस्यूं ततखेवजी ॥ म ॥ २ ॥ हर्षाइ जोगी तब बोले । का
ली चउदसी रातजी ॥ मशाणे जाइ विद्या साधवी । जेहथी चिंतित थातजी ॥ म ॥३॥
इम वातो करतां दिन उगो । विद्या साधन सहजामजी ॥ कहे जोगी चालो गाम मांइ
हम आवो गहु भामजी ॥ म ॥ ४ ॥ जोगी मदन दोइ जोगी रूपे । सोभित वेस सजाय-
जी ॥ नगर जोगी माहि फरावो । मध्य बजारे आयजी ॥ म ॥ ५ ॥ तेतले सामे वंदी-
जन एक । [illegible] ॥ रत्नांजणी चरचित तस अंगे । कणेर पुष्प पह-
रावजी ॥ म ॥ ६ ॥ आगल कुटो ढोल बजाता । सुभट शब्द उचारे जी ॥ इण रा रहा-
लक मांइ मन रांचो । इणरा कर्म इंम मारजी ॥ म ॥ ७ ॥ तेहने देखण उंचे स्थाने ।
मदन जोगी ठांइजी ॥ वंदीजन ओलखी तो पेखी । मदन जी हर्षित होइजी ॥म॥

मर आगा जी ॥ [illegible]
की प्यारा उण भव माही॥ छोडू नाहिं तुज साथो जी ॥ ते मोल्यो मुज गिणती में नांही॥
नृमही को मुज मथो जी ॥ म ॥ १९ ॥ सवातो वेगो मरतो (जातो) घरकानी । अ-
धक हट घणा लोभांजी ॥ देखूं जावे नहीं तो उपावे । पर भव पुगा स्युं सीधो जी ॥
म ॥ २० ॥ इम सुणी जार अति हर्षाया । काम क्रिडा करवा लाग्या जी ॥ सुणी वात
अजोग [illegible] जी । म्हारो क्रोधानल जाग्या जी ॥म॥ २१ ॥ लल कार्यां में रे दुष्ट अ-
न्याइ । आज [illegible] नें लाथेरे ॥ इत्ता दिन मुज घणो सतायो । लुब्धी नार मुज साथे
जी ॥ म ॥ २२ ॥ ते दुष्ट म्हार सामे थड्यो । करवा लाग्यो लडाइ जी ॥ हाक हमारी
[illegible] लोक घणा आया धाइ जी ॥ म ॥ २३ ॥ राज सूभट पण दोडी आ-
या । [illegible] मारो जी ॥ जाण अन्याइ कब्ज कियो लट । पकडी लेगया जारोजी
॥ म ॥ २४ ॥ नारी [illegible] घर गइ भागी । ए थाइ दूजी ढालोजी ॥ रुपि अमोलख क-
[illegible] । नारी चरित्र निहालो जी ॥ म ॥ २५ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ प्रात समय ते
[illegible] । [illegible] नृप पास ॥ वीती वारता रात की । कीनी सहू प्रकाश ॥ १ ॥ मुज
[illegible] । में कही साची वात ॥ उण नर मुज मारण भणी । रच्यो हूंतो उ-

सुयो नींद मझार ॥ च ॥ १३ ॥ पाछली थोडी रात रही जब । सुणो मैं किलकार ॥ च ॥ १४ ॥ दोडो२ रे मुजने छोडा वो । नार मुज भरतार ॥ च ॥ १५ दचकी उठ्यो मैं नव जोयो । देखूं तो मुज नार ॥ च ॥ १६ ॥ मैं तस पूछ्यो क्यों तूं चिछावे । कुण तुज दुःख देनार ॥ च ॥ १७ ॥ ते मुज गाल्या देवा लागी । अरे दुष्ट अविचार ॥ च ॥ १८ ॥ महारी नाक तें नींद में कापी । भोलो बणे इण वार ॥ च ॥ १९ ॥ तब अती में अश्चर्य पायो । घ्राण न जोयो तस ठार ॥ च ॥ २० ॥ कुण काट्यो नाक घरमें आइ । गुंग्यो में भर्म मझार ॥ च ॥ २१ ॥ तेतले मुज सयन घर वारे । लोक आ जम्या अपार ॥ च ॥ २२ ॥ सासु सुसरा मांये आया । तेकिमाड उखाड ॥ च ॥ २३ ॥ असूरत्त हां मुजने पकड्यो । देवा लाग्या मार ॥ च ॥ २४ ॥ कुंदी खूब करी तिहां महारी । लाया खिपाइ खिरकार ॥ च ॥ २५ ॥ नकटी नाक सहूने देखाडे । सहू रह्या सत्य धार ॥ च ॥ २६ ॥ मुज बान्धी आया राज पासे । न्टप कोप्यो धर क्षार ॥ ज ॥ २७ ॥ काल तुजाने शिक्षा दिलाइ । आज थे कियो अनाचार ॥ च ॥ २८॥ म्हारो वोल्यो कान धरे नहीं । दीयो हुकम पुकार ॥च॥ २९ ॥ जावो एने सूली चडावो । एमोटो गुन्हेगार ॥ च ॥ ३० ॥ विन इन्साफ मुज बान्ध ले जावे । किस्यो करुं हूं लाचार ॥ च ॥

[illegible]

[illegible] ॥ मद्

[illegible] ॥

[illegible] जोगी मदन [illegible] इनमें [illegible] ने सग ले।

[illegible] मदन [illegible] साथ लियो।

[illegible] माटा दा जश मांहे मोहनी ॥ यह ॥

[illegible] हो अगड़ प्रगटाय ॥ गुणवन थी गुण वंत मि

[illegible] हो वड को उपाय ॥ पुण्य ॥ १ ॥ जोगी कहे मदन भणी । आपा

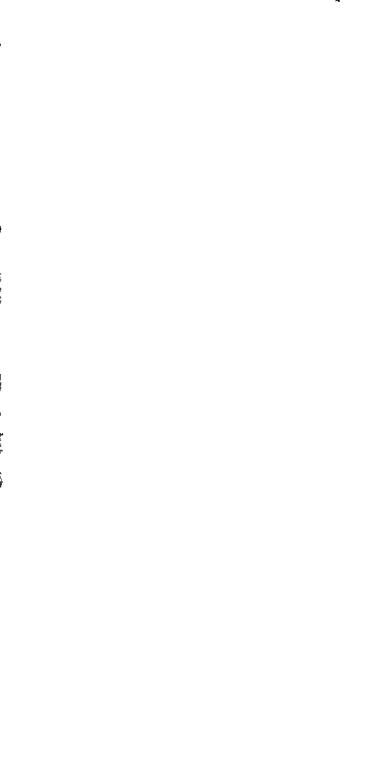
[illegible] काज । ते तो अजू क्यों नहीं । थें फसाया हो इण झगड़ा मांज

[illegible] मदन भणे । गुरु राय जी दो इम फरमावो केम । जीवित

६८ [illegible] भणी । भयो धलो हो ए अपेसी क्षेम ॥ पुण्य ॥ २ ॥ ए उपकार मोटो

[illegible] हो सहू आपणो काम ॥ [illegible] हजार थी । जेलाने हो ते

[illegible] ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ [illegible] सहू [illegible] कर [illegible]



[illegible] ते दूषण पुरुष परायणां । पहला पार के दिन
[illegible] अंतर नहीं जणाय ॥ जे मन कार्य साधशे । ते क-
[illegible] भूमंडल । जोना अनाथा ठाम ॥ चगला नगरी आ-
[illegible] ॥ ४ ॥ नगरी जावा चालीया । मध्य बजार के मांय । नर
[illegible] ऊभा रहाय ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल ८ मी ॥ धन्य २ मना-
[illegible] ॥ [illegible] दामाटा जक्तमे । कनक कान्ता केरा ॥ जे नर इण फंदे फ-
[illegible] ॥ १ ॥ वेस्या अने विप्र सर्णा । तिहां लागी लडाइ ॥ वि-
[illegible] । झाइयो छोडे नाही ॥ ध्र ॥ २ ॥ लोक सहु ठठा करे । देवे चि-
[illegible] नहीं मिन्यो । भली लीधी लाजो ॥ ध्र ॥ ३ ॥ विप्र कहे
[illegible] मजा देखाडूं ॥ धुर्ता स्वायो जगत ने । ते धन सहु कढाडूं ॥ध्र॥४॥
[illegible] जोडे कर पड पायो ॥ एकवार मुज छोडीयो । नहीं करूं अ-
[illegible] आइ नरमाइने । दया मदनने आइ ॥ छोडावूं हूं इण भणी ।
[illegible] ॥ ध्र ॥ ६ ॥ जोगी तव आज्ञा दीधी । झट करी नमस्कारा ॥ आयो

॥ कारण कांइ मारया विन । हूं कि किणने दवावूं ॥ धीरपे न्याय निवेडने । सहू
स्वस्त थाइ ॥ ध्रु ॥ २० ॥ इम गुण सहू विस्मय हुया । वेस्या धैर्य लाइ ॥ ढाल आठ
पांचा मदन की । अमोलख गाइ ॥ ध्रु ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ मदन कहे तय विप्रने ।
... मत चिन ॥ धैर्य लाइ सची कहो । हूं जे पूछूं मित ॥ १ ॥ कर किम झाल्यो
... । ... अन्याय ॥ ते तुम कहो सहू मांडने । जिम मुज समजण थाय
॥ २ ॥ फिर गुरु प्रसादसे । करस्यूं यथा योग्य ॥ मन दोइका राखस्यूं । खुशी होसी सहू
... ॥ ३ ॥ धीर धीर बुद्धि निलो । मदन ने जाणी तेह ॥ विप्र कहे स्वामी सुणो ।
न्याय निवेडो एह ॥ ४ ॥ इण ठगीयो मुज मित्रने । मैं ठगी इण तांय ॥ करतब्य कहूं
... । न इण कियो अन्याय ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ९ मी ॥ गाफल मत रहेरे ॥
यह ॥ ... । सहू सुख संग तज दोरे ॥ वेस्या नहीं हुइ किस कीनारी । वात
कहूं ... विस्तारी ॥ सं ॥ आं ॥ चंपानगरी मझारी । वसे कमल सेठ धन धारी ।
... भोगावती ए नारी । पृथवय नन्दन एक थयो । गुण चन्द नाम तस दियो ॥ संग ॥
१॥ ... कीद वणा ... । पूरी विद्या नाहीं ... ॥ ...

[illegible] नाग न खाय ॥ प्रमश्च मग्न जो नार नां । आप घणां हर्षांय ॥ ४ ॥
[illegible] ने । मारण चिंन उपाय । कुबुद्ध करे जे आगलै । ते सुण जो चि-
[illegible] ॥ ढाल ११ मी ॥ मन करना पर्नात गंडकी ॥ यह ॥ लावणीमें ॥
[illegible] मग मानलो मेरी सीख भाइ ॥ दगा दार या नार थइना किसकी आप
[illegible] ऋतु दरम्यान । फूली है सबही वनराइ ॥ कंद्रप केरी बहार लूंटने
[illegible] ॥ आय बागके मांय । खेलने खाने मिठाइ ॥ नाच रंग विनोद ख्याल
[illegible] ॥ यह अनंगी नार । यार ले सेहल करण जाइ ॥ म ॥ १ ॥ राजा
[illegible] । संग सब सज आया ॥ यथा योग्य सज्जन संघ रम्मत । गम्मत
[illegible] । [illegible] कंठ हार । हीरा तारांगण सोभाया ॥ नाचत कूदत भलक पडे । जाणे
[illegible] ॥ द्रष्ट पडी गणिकाकी उसपे । मन गयो ललचाइ ॥ म ॥ २ ॥ जो
[illegible] । जीया सफल मेरा थावे ॥ इस विना सिणगार अलूणा । मुजको
[illegible] । किम अवे यह हाथ । घात विषमी घहु देखावे ॥ राजा तणी य प्यारी
[illegible] स पावे ॥ हुव चित्त उदास । गइ सब सुरती विसराइ ॥ म ॥३॥
[illegible]

धाइ ॥ म ॥ ८ ॥ गुण चन्द गयो घबराय । वचण उपाय न देखाइ ॥ पड्यो राणीके चरण । रोवतो कहे सुणो मांइ ॥ अब आंपको सरण । करी में पूरी अन्याइ ॥ अहो प्रथवी पाल । उगारो मेरी दया लाइ ॥ इम सुण राणी वयण । अचंभो मनमें अति पाइ ॥ म ॥ ९ ॥ चोर तणा नहीं चेन । वचन पण बोले ए मीठा ॥ कोमल अंग सुरंग । भोल पण अंगमें बहु दीठा ॥ पूछे कहे तूं सच । इहां तूं आयो किम धीठा ॥ अब करे नरमाइ । कर्म नें कर्या पहली चीठा ॥ कर जोडी कहे तेहा दया कर छोडायो मांइ ॥ म ॥ १० ॥ चंपा नगरी कमल सेठ को । वाजूं हूं बेटा ॥ उप्रा जणने द्रव्य । हटकर विदेश मां पेठो ॥ रह्यो आपने शेहर । वेश्या फंद रह्यो सेंठो ॥ लूट लियो सब द्रव्य । कर्म दुःख मुज हृदय पेठो ॥ न मानी में सीख । जे दीधी तातजी म्हराइ ॥ म ॥ ११ ॥ वसंत रमण गया बाग । हार आपको रांड जोइ ॥ भरमाइ मुज कहे । लाइदो हार मुजे सोइ ॥ मोह अन्ध मानी वात । आप के महले आयाइ ॥ न जाणू चोरी कर्म । रांड मुज फंदे न्हाख्याइ ॥ कही में साची वात । जीवित दान दो मुज तांइ ॥ म ॥ १२ ॥ सुणी गुण चन्द चरित्र । दया राणी के मन आइ ॥ बठायो निज पास फेर दिया आ-

घदया पंछ गयो पेठो ॥ [illegible] लियो [illegible] ।
मैं सीख । [illegible] ॥ म ॥१५॥
गांछ जोइ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

छोड विभजविरो राखूं मुज ताई ॥ म ॥ १२ ॥
जी सुणो इच्छा म्हारी ॥ दूं दूं थाणिक जासा नहीं हुइ
निश्चल मन थी । मैं लीधी धारी ॥ नहीं जोवूं सस मुख।
गा राणी वयणा पुल परपासे राख्याइ ॥ म ॥ १४ ॥
गुणचन्द घतलावे ॥ कहे राणी मुज प्यारी । पुली ग-
ढूं पतो लगास्यूं । राणी हर्षावे ॥ वार नाम पुछ्याथी
[illegible] अठेयां नहीं आइ ॥ म ॥१५॥

धावीयो । देइ सूरट लार ॥ ४ ॥ वाहना रूढ घर पहोंचीया ॥ वीतक कियो प्रकाश ॥
उपगार मान्यो राणी को । सज्जन हुय हुल्लास ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १२ मी ॥ रंगीला
मइा ॥ यह ॥ विप्र मदन से घरे उच्चारो । गुण चन्द्र छे मंत्री म्हारो । एकांते मिल्यो
में थारो हो ॥ मदन जी सुणीये ॥ १ ॥ मे पूछेरे कमावा सिधाया । पण कंगाल होइ
फिर आया ॥ तब गुण चंद घणा शरमाया हो ॥ म ॥ २ ॥ वीतक हाल दरसावो । सु-
णी मुजने क्रोध भरायो । मर्म वेश्या नो पायो हो ॥ म ॥ ३ ॥ तब में कह्यो गुण भाइ
। हिवे हूं जास्यूं तिण ठाइ । गमावु देश्यानी गुमराइ हो ॥ म ॥ ४ ॥ धारो धन पाछो
लावूं । मो में ब्राह्मण कहलावुं । नहीं तो पाछो नहीं आवुं हो ॥ म ॥ ५ ॥ गुण सुन्द्री
नो पतो लगास्युं । श्री पुर राय राणी ने मिलास्युं । एता कारज कर घर आस्युं हो
॥ म ॥ ६ ॥ गुण चन्द मुज समजाइ । ते वस्ता से नहीं जीताइ ॥ यदा भूपत तिण
स्युं हार्या हो ॥ म ॥ ७ ॥ में तिणरो वचन अपमानी । आयो निज घर माविल
कानी । आशा मांगी वीदेश जावानी हो ॥ म ॥ ८ ॥ माविल पण समजाया । पत्न्या-
मा राज रजाया । केर [illegible] [illegible] [illegible] हो ॥ म ॥ ९ ॥ लिये श्री पुस्तां त्रियामो

घात ॥ इण में जो खोटी हुवे । तो साक्षी साक्षात ॥ १ ॥ हू मायू छू गटलो । जे इण
कीधो काल ॥ धूतीमें दूती भणी। प्रगट । हुइ सहू पोल ॥ २ ॥ दूजा को धन लेवता ।
जिम ए पाइ सुख ॥ तिमही इणारो धन लियां । इर्पासी मुज मुख ॥ ३ ॥ घणा जीव
संतापतां । इण नहीं कियो विचार ॥ तो कहो दुःखीयो कुण हुवे । जोइ ईने निराधार
॥ ४ ॥ सहू को थदलो में लइ । इण ने करूं सहू पेर ॥ तो सुख पावे आत्मा । ले धन
जावुं घेर ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १२ मी ॥ कमल दल लोचना ॥ यह ॥ बुद्धिवंत मदन
जी । एनो न्याय कियो इण पेर ॥ बु ॥ आं ॥ गंभीर वदने कहे मदन जी । करो भूदेव
अब मेहर ॥ बुद्धि ॥ १ ॥ बात साची सहू जी तुमारी । ए कुटिला जाग जेहर ॥
बु ॥ २ ॥ सहू लोक तब कहे मदन से। करी ने उंची देर ॥ बु ॥ ३ ॥ ए कुटीला नहीं
दया ने जोगी । धन्य २ विप्र बुद्ध घेर ॥ बु ॥ ४ ॥ इण विना ओर काइ न जीत्यो
। इण पापणी की लेर ॥ बु ॥ ५ ॥ हमतो जाणता जादू टोणा । कोइ देवता करे खेर
॥ बु ॥ ६ ॥ हिये पहनी कुंदी करो पुरी । फिर न करे इणपेर ॥ बु ॥ ७ ॥ वेश्या
घबरा कहे नरमाइ । अब नहीं रमू जूआ जेर ॥ बु ॥ ८ ॥ गुणी काता सहू सहायक
हांये । महारो तुम करो खेर ॥ बु ॥ ९ ॥ मदन कहे तुम मत घबरावो । प्रभूजी करसी

स्थर धांस्या हो ॥ व ॥ म ॥ ८ ॥ इशो वचन देइ हम निकल्या । एक मांस तो गली या ॥ आज हमारा सुभाग्य जोगे । अचिंत्य आप इहां मिलियाे ॥ व ॥ म ॥ ९ ॥ निराम होइ घरजाता था । इण नगरी में आया ॥ नीचे जोतां आप दिखाया । अति ही आणंद पाया हो ॥ या ॥ म ॥१०॥ सफल मेहनत सुख उज्वल आज । आप हमारा कीधा । सर्व काज थया औरभी धामी । आप जोया सहू सिद्धा हो ॥ व ॥ म ॥ ११ ॥ ओलंभा किस्यां आपने दीजे । सहू प्रताक्ष दिखावे ॥ आप जैसाने इसो नहीं छाजे । अधर्य हम मन आवे हो ॥ व ॥ म ॥ १२ ॥ दारद्रीने चिंतामणी परे । आप हमारे कर आ. या ॥ भृत नहीं करस्यूं पहलां परे । घणी मेहनत थी पाया हो ॥ व ॥ म ॥ १३ ॥ मदन कहे तुलकहो ... मची । ओलंभो सिस चडावुं ॥ कारण तुम जाण्यो नहीं जे वण्यो । ते मैं आज जणावुं ॥ व ॥ म ॥ १४ ॥ तुम गया पीछे दिन घणो जो । मुज पूरो करवा कानो ॥ सात पट मध्य कूपमें पेठो । नीरे लेवानी हामो हो ॥व॥म॥१५॥ अचिंत्य मुज ने कोइ उडायो । एक वडनें चेंटायो ॥ ते वटवृक्ष गगन उड चाल्यो । जयंती पारे ठायो हो ॥व॥म॥१६॥ तिहां पण एक कौतक निपज्यो । ...



धाय ॥ मरणो गो प्रकारठे । अभिको करसी कांय ॥ ३ ॥ इन निश्चय मन थी क ॥
गया इसना भार ॥ चिंता लागी पाछली । करणो किस्यो उपाचार ॥ ४ ॥ मार्था
महा ओला हवे । देवी गइ फिण ठाय ॥ आगल इहां होसी फिस्यो । इम चिंता घणी
आय ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ७ मी ॥ त्रण जारा ॥ सखी पणीयां भरण फेसे जाणा ॥
गइ ॥ तुम सुणीयां वात हमारी । नहीं कीजे विगर विचारी ॥ आं ॥ देवी सुन्दर रुप
पणाइ । गाल श्रृंगार सजाइ जी । आइ नेपुरन झणकारी ॥ नहीं ॥ १ ॥ कुँवरां स-
न्मुख ठाढी । मांह अंगो पांग देखाडी जी ॥ बोले अतिही करी लाचारी ॥ नहीं ॥
२ ॥ हूं विरह घणी थी दाझी । सांची संभोग जल करो राजी जी । विलसो सुख
हम संसारी ॥ नहीं ॥ ३ ॥ तव कुँवर नरमाइ बोले । देवीकी खटपट खोलेजी । थें
हो रूप अपछरा ॥ नहीं ॥ ४ ॥ महा दुर्गन्धी इम काया । यह उदारिक तन पाया
जी । मल मूत्र अशुची की क्यारी ॥ नहीं ॥ ५ ॥ वली क्षिणिक भोगछे म्हारा । कि-
॥ ललचाया मन थांरा जी । किम्यो देखी रया छो मोहारी ॥ नहीं ॥ ६ ॥ देवी कहे
॥ मन म कुमारं । यह अशुची पणो निवारंजी । सागे वणावु देव जिसारी ॥ नहीं ॥



…, चान्या खुश होय ॥ ४ ॥ दे दंड जोगी न नसा॥ आया निज आगार ॥ ६४ …
…ावया । हुवा शिघ्र तैयार ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल १२ ॥ मी ॥ लालना हो राम रुप कीधो
…न्ना ॥ यह ॥ श्रोता हो । पुण्य थकी इच्छित फले । अभी नव वस्तु पाय । श्रोता हो ।
पुण्य …ा मदनेशाजी । कार्य करवा उमाय ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ १ ॥ कन्क सुन्दरी कर
…ाइन । प्रे प्रकाशो भ्यामा ॥ श्रो ॥ उतावल दीसे घणी । किहां जावा को काम ॥
श्रो ॥ पुण्य ॥ २ ॥ यहां थी जोजन …ादशे । जावो पूंनम शाम ॥ श्रो ॥ तव प्रेमे
…ण प्रमन्ना । …ा क्षिणनो काम ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ नगन गामनी साधीये । वि-
…ा … मुज पास ॥ श्रो ॥ इच्छित स्थान पधारीये । नही देखीये लास ॥ श्रो ॥ पुण्य
॥ ४ ॥ विद्या यही साधन करी । ततक्षिण हुइ ते सिद्ध ॥ श्रो ॥ पुण्य पसांयी जीव
…ने । दुष्कर नहीं कोइ रिद्ध ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ पूनम को दिन आवीयो । शितम
…न्नी काम ॥ श्रो ॥ विद्या प्रभावे निपाइयो । कनकावतीये विमान ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥
६ ॥ पंच घुमंट रत्नातणा ॥ सुवर्ण स्थंभ सुचंग ॥ श्रो ॥ पूतली या सजी नाचती ।
…चित्र विचित्र बहू रंग ॥ श्रो ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ सयनासन स्थान जुजुवा । भोजन जलका

... ॥ म ॥ ३ ॥ तब विमाण ने नीचे उतर्यो । पाट्ट करण
... कर्यो । हर्ष उमाव होइ ॥ म ॥ ३ ॥ किया साहेब
... आया ॥ धन्य भाग हम पुन्य संजोगे । आपका दर्शन
॥ म ॥ ४ ॥ मदन कहे भाइ धर्म बतावे । म्हू कान रखा धर्मा ॥ ... धारा ...
... । हिरदा सब दुःख जासी ॥ म ॥ ५ ॥ तिण अट दीं मदन जी न्हाइ ।
... । ... सुणे भाव । हर्ष्या मदन हुवा धापा ॥ म ॥ ६
... । म्हारो जीव अकुलावे ॥ पाछे कुँवरी बाहिर लावो । ज्यों
... ॥ म ॥ ७ ॥ ... आयो मदन री पासे । तुम्बी चले न्हवायो ॥
... ते पायो । चरणे शीश लगायो ॥ म ॥ ८ ॥ रखवाली बाहिर ...
... ने मदन पधार्या ॥ ... कुँवरी न देखण्या । जोगी आया धार्या ॥ म ॥
... । ... रहाँ ॥ जो जीव लेवा इच्छा होवे ...
... ॥ म ॥ १० ॥ ... लावे हार्या । ... ॥
... ॥ म ॥ ११ ॥ ...
... ॥ म ॥ १२ ॥ ...
... आवो । ... ॥ म ॥ १३ ॥ ...
... ॥ ... सुणा विवाह । हर्ष उमावे ... ॥ म ॥ १४ ॥

ग्वण्ड ५

[illegible] ॥ म ॥ १२ ॥ आप गुफा निज चमक्या मदनजी । मोटाणे तम संसार्यो ॥ मदन हूं गु-
[illegible] आया । मन समझा ने वार्यो ॥ म ॥ १३ ॥ जन्दी निकलो गुफाने बाहिर ।
[illegible] पायो आवे ॥ बोली सेंदी सुण विस्माइ । हर्ष उमाले घतलावे ॥ म ॥ १४ ॥
[illegible] अवेश हो तुम । महारे कारण आया ॥ धन्य भाग्य आज दुःख गयो स-
[illegible] का दर्शन पाया ॥ म ॥ १५ ॥ ततुक्षिण दोडी बाहिर आइ । दोन्याने देख
[illegible] संगायो । नेणा नीर वहाइ ॥ म ॥ १६ ॥ तुम्ही ज-
[illegible] वस्त्र पहराइ ॥ कहे अब किंचित डरमत राखो । जोगी को
[illegible] ॥ म ॥ १७ ॥ दोनाको करग्रही मदनजी । विद्या मन में ध्याइ ॥ उड
[illegible] ॥ मुग्धी तिहूं घटाइ ॥ म ॥ १८ ॥ विद्या वले विमाण चला-
[illegible] मन आनंद घणेरो । आज सहू फंद छूट्याइ ॥
[illegible] मदन को । औथिन यां दीधाइ ॥ निज २ वीती वा
[illegible] ॥ म ॥ २० ॥ जित्त ज ज होवे रचना । ते सुण-
[illegible] पंचम [illegible] । ऋषिअमोलख गाइ ॥ मदन ॥ २१ ॥
[illegible] ॥ अध्यर्य पा शंकायायो । तुर्त मां-

र्का । जाण्या पुण्य विशाल ॥ १ ॥ पूछे मदन कँवरी थकी । अन्य गुफा ने मा
मुज नाम किम सांभर्यो । कुँवरी कहे शरमाय ॥ २ ॥ राय आंगण में
पर्गा तात ने पास ॥ रूपे मुज मन मोहीयो । सुणी गुण प्रकाश ॥ ३ ॥ नि
नय किंयो । धीज़ा तात समान ॥ प्रनज्ञा ए माहेरी । पूरसी श्री भगवान ॥ ॥
जन होवे आपणा । दुःख में सुख ते आय ॥ सहायतापण लेही
र्की रराय ॥ ५ ॥ ❁ ढाल १५ मी ॥ सुमत का साहेबारे ॥ यह ॥ सुगड नर सांभ-
ळो । मदन का पुण्य चडता दिन कार ॥ आं ॥ भद्र सेण पूछे तदा । अब कहो आप
विरतंत ॥ करामात किम पामीया । दो मास किहां वीरतंत॥ सु ॥ १ ॥ मदन कहे हिवे
सांभळो । कहुं म्हारा सहू हाल ॥ पुर पयठाण बीडो भह्यो । लेवा कुँवरी निकल्यो
तत्काळ ॥ सु ॥ २ ॥ भटक तो आयो तुम कने जी । तुमे बताइ युक्त ॥ ते करवा
चल्यो जी । होदा वचण थी मुक्त ॥ सु ॥ ३ ॥ काम देव ने मंदिर जी । कि-
र्गायां मिली मोय ॥ तिण वली नीर मंगावीयो । हूं आगे चल्यो खुश होय ॥ सु ॥

हुवारा ॥ च ॥ १६ ॥ भीमाण आण रवा दूसरा जी । करा रह्या झल हल ॥ वाइ बेठा
माप ने जी । सील गुण धीमल ॥ च ॥ १७ ॥ सहू घडाई करे मदन की जी । अहो २
गुण भंडार ॥ कष्ट सही दुःख नष्ट किया । जे लाया राज कुँवार ॥ च ॥ १८ ॥ ततले
राजिंद आवीया जी । हर्ष निशाण घुराय ॥ वीमांण आदी ऋद्धि देखी । अश्चर्य अतिही
पाय ॥ च ॥ १९ ॥ ए जवेरी के देवता जी । पुण्य प्रबल नर एह ॥ इम मन में अनु
मोदता जी । धरता अधिक स्नेह ॥ च ॥ २० ॥ सहू जन ने मध्य थी जी । आवे श्री
नृपाल ॥ अमोल हर्षानंदकी ए । भाखी पन्नरे ढाल ॥ च ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ नर
घर आया देख के । मदन घणा हर्षाय ॥ दोडी सामे आवीया । नमिया ढली २ पाय
॥ १ ॥ राजा बेठे लगावीया । आणी अधिक स्नेह ॥ धन्य जवेरी तुम भणी । कियो
उपकार अछेह ॥ २ ॥ अहो नरोश्वर सेहरा । सूर वीर सिरदार ॥ असख्य कार्य तुम
कियो । हुयो मुजपे अभार ॥ ३ ॥ कर जोडी मदन भणे । मुज में शक्ती न कोय ॥
आप कृपा प्रसाद थी । सहू यह कामा होय ॥ ४ ॥ सेवक योग्य सेवा करी । नहीं इण
मे अभार ॥ सुणी नृपादी हर्षिया । धन्य २ रह्या उचार ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल १६ मी ॥
श्री जिन अजित नमुं जय कारी ॥ यह ॥ धन्य २ मदन उपकार सह जन । कीयो

विरह हीयो दर्शाय जी ॥ धन्य ॥ २ ॥ प्रेमोत्सुक नप लीनी खोलाम । चुचकारी धर
प्रेम जी ॥ आज सफल दिन थाइ हस छे । तुज दीठां पाया क्षेमजी ॥ धन्य ॥ ३ ॥
रूपवती कहे आप विरह थी । हूं तड फडती दिन रेन जी । मोटो उपकार जवेरी को
छे । मिलाया मुज ने सेण जी ॥ धन्य ॥ ४ ॥ मुज काजे यां दुःख सह्या घणो । कहे
मी महू भद्र मेण जी । अब जाउं माता जी पासे । दरसणे तरसे नेण जी ॥ धन्य ॥
५ ॥ उठी ततक्षिण आइ जननी कने । प्रेमे लागी पाय जी । उटाइ ली खोले माहीं
। प्रेमे हिये चिपकाय जी ॥ धन्य ॥ ६ ॥ नेणा नीर न्हांखंती बोले । करी अचंभो मात
जी । थोडा मांसेर माइ थाइ । सूकयो सहु गात जी ॥ धन्य ॥ ७ ॥ किहां किमगइ
रही किहां किम । सह्यो दीसे घणो दुःख जी ॥ कुँवरी कहे माजी मुज दुःखडा । किम
कह थाये मुख जी ॥ धन्य ॥ ८ ॥ उडा मंलसे लेगयो जोगी । राखी महागिरी मांय
जी ॥ अहे निश एकली झुरती रहती ॥ ते पापी नित्य सताय जी ॥ धन्य ॥ ९ ॥
धन्य २ जवेरी जी तांइ । मुज काज भम्या प्रदेशजी ॥ महा कष्ट सही सुखी करी मुज ॥ हूं

ऊई मे मडूं रहा जी ॥ धन्य ॥ १० ॥ सहेल्या घेरी धाइ ने आइ ॥ मधुर वचने
धनराय जी । सज्जन मेसे हर्षी होइ । गत दुःख दूर कराय जी ॥ धन्य ॥ ११ ॥ शुभ
महूर्ते आवाया नरपति । सहू सज्जाइ सजाय जी ॥ एरुण मयंगल मदन ने भूपत । वेठा
आनंद माय जी ॥ धन्य ॥ १२ ॥ मध्य बजारे होइने चाल्या । देखण प्रजा उमाय जी
॥ मार्ग हाट हवेली चोवटो । नर नारी थी भराय जी ॥ धन्य ॥ १३ ॥ मदन तणा
गुण सहू जन भाखे । शाबास नरवर धीर जी । महा वीकट काम कैसा उठाया । ते
सर्व पहोंचाया सीर जी ॥ धन्य ॥ १४ ॥ उतर्या आइ राज सभा में । सिंहासण वेठा
राय जी ॥ मदन ने सेंर्चा पास वेठायो । अरी गया शरमाय जी ॥ धन्य ॥ १५ ॥
सहू सभा ठाम ठिकाणे वेठी । महीला पडदा माय जी भद्रसेण उभो होइ बोले ।
सुणो सहू चित्त लाय जी ॥ धन्य ॥ १६ ॥ आश्चर्य वीतक जवेरी जी को । जे हुयो पट
मास माय जी ॥ सुणवा जेसी वात हे साहेब । तिण थी कहवा चाय जी ॥ धन्य ॥
... सहू श्रवण करे एकाग्रता थी । जोगी विद्या प्रभाव जी ॥ उडा लेगयो रुपवतीने
... म सारी उपाय जी ॥ धन्य ॥ १८ ॥ मदन जी थींटा प्रयो जोर । मैं गयो

१९ ॥ सुणी जुक्त कही जबरी ने । ले गया आगे चाल जी ॥ सब समझाइ पुरी माथी
। राजा हुया परण्या नार जी ॥ धन्य ॥ २० ॥ घड ने थेटी उडगया दूरा । मरतो
मनुष्या छोडाय जी । कर।माती जोगी मिलिया । सुवर्ण पुरुष निपाय जी ॥ धन्य ॥
२१ ॥ पाछा आया विद्या पाया । विमाण केरीगत जी ॥ हम ने छोडाया जोगी हराया
। इहां लाया देखो सत जी ॥ धन्य ॥ २२ ॥ चमत्कार सहू हृदय पाया । सुणी मदन
विरतंत जी ॥ धन्य कार सहू मुख्य थी निकल्या । ए नर महा पुण्यवंत जी ॥धन्य॥२३॥
घरी बधाइ दीनी मीटाइ । वृत्य जय २ कार जी ॥ ढाल सोलमी कहे अमोलख ।
पंचम खंड मझार जी ॥ धन्य ॥ २४ ७ ॥ दुहा ॥ शभा वरकास हुइ तदा । नृपत
आज्ञा लय ॥ आया मदन दुकान निज । सत्कार सहू देय ॥ १ ॥ मुनी मादी संतोषी
या । सहू जन पाया सुख ॥ मालक पुण्यवंत पाभीया । धन्य २ कहे मुख ॥ २ ॥ वकू
लोग देइ मदनजी ॥ कम कर सहू संतोष ॥ गुण सुन्दरी ने मिलण । उठीया मंगत पाप
॥ ३ ॥ आया हवेली आपणी । नफर दियो सत्कार ॥ धन वचने संतोष ने । पूछा
सहू समचार ॥ ४ ॥ जिम आप छोडी गया । तिमही सब सुख मांय ॥ बंदोवस्त पुक्ता
[illegible] ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १९ मी ॥ डंडारे आंबा आंवलीरे ॥यह॥

कर प काज ॥ २ ॥ आइ हवेली ने विषे । मूर्ख रुप धणाय ॥ हँसता रमता कुँवरी कन । पड्या मदन जेर जाय ॥ ३ ॥ मिथ्या लापे गप्प थी । खुशी कियो तस मन ॥ फिर कहे आज मुज काम छे । आस्यूं काल के दिन ॥ ४ ॥ शुण सुन्दरी कहे मूरख्या । थारे छे किस्यो काज ॥ तय मूर्ख कहे सांभलो । कहूं हूं तजेन लाज ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल २ जी ॥ कर्म तणी कथनी रे किहां जाइने कहूं ॥ यह ॥ इणहिज नगरीरे मांये रहे । प्रभुन धन नाम एक सहू कारजो ॥ धन धान घणो छे तस घरने विषे । राजा परजा सहू देवे सत्कार जो ॥ सुणियो मदन जी चरित्र करे छे केहवा ॥ आं ॥ मदन नामे नंदन छे एक छे तहने । रुपनेतो अतिघणो सोभाय जो ॥ बोलणरी कुछ शुद्ध नहीं छे तहने । तिणथी प्रिति धरी कोइ न बोलाय जो ॥ स ॥ २ ॥ मंत्रवादिये हरण करी राय पुत्री का । तिणथी उपज्यो राजा प्रजाने त्रास जो ॥ बांडो फर्यो पुत्री लावे ज माहरी ॥ परणावे दूं नहीं कुवरी तास जो ॥ सु ॥ ३ ॥ सेठ पुत्र ने मदन बांडो झलीयो । पर देशे फिर महन कर्यो घणो दुःख जो ॥ सोधी लायो राय पुत्री प्रयास थी । तिणथी पाया राजा परजा सुख जो ॥ ४ ॥ वचनानु सारे परणावे राय पुत्री का । दोनो घरमें मडीयो हर्ष

हुक्म जो ॥ चाँदवणी ने परणी लावू लाडी भणी । आज रातरा मजा देखांगा हम जो ॥ सु ॥ १३ ॥ इम कही कूदे हंसे तेतो घणो । गुण सुन्दरी ने हांसी आइ अपार जो मूर्ख्यों मार छूटी गप्पा ए सहू । कोइ तमाशो जोवण जावा विचार जो ॥ सु ॥ १४ ॥ रूप लक्षण तो छूटी कोडी जित्ता नहीं । होवा जावे सेठ सुत थी अधिक जो ॥ लपरा-या सारखा ए इहां रेइ करी ! मुज भरमावा घात बणावे ठीक जो ॥ सु ॥ १५ ॥ कहे मदन ने जाथारी इछा जिहां । पण मत जाजे दूरो ग्राम ने छोड जो । प्रातं वेगो आजे भोजनने इहां। छूट तणी मत लगावे अंग खोड जो ॥ सु ॥ १६ ॥ सुणी मदन जी खु-शी हुवाने कूदता । उतर्या मेडी नीचे तिणही वार जो ॥ चिंते कला तो जमी छे पूरी महारी । अजु लगण नहीं ओलखे एह लगार जो ॥ सु ॥ १७॥ भेष बदल ने आया चल दूकान पे । लाग्या अपणे काम करण ने मांय जो ॥ ढाल दूसरी कही ए छटा खंडकी । कहे अमोलख कपट किम प्रगटाय जो ॥ सु ॥ १८ ॥ ॥ दुहा ॥ मदन आपो छिपा-वा । रवि पश्चिम छिपाय ॥ अन्धकारके व्यापता । दी रोशनी झलकाय ॥ १ ॥ दुल्हा वणिया मदनजी । सजीया सहू सिणगार ॥ रयण मुगट झग मग करे । मोड जरी जर-तार ॥ २ ॥ की लंगी तुर्रा शिर । कुंडल चोकड़ा कान ॥ [illegible]

...जोगो केरीया ॥ ... ॥ ... कटारी ...
...वाणिया ज्यों राजान ॥ ४ ॥ उत्तम गयंगले घटीया । छत्र चमर ढुलाय ॥ ओपता
...इन्द्र ...मा । रुप गुणे सोभाय ॥ ५ ॥ ढाल ३ जी ॥ आवे वर लटकं तो ॥
...नंद महाराज ॥ यह ॥ आवे वर गुणवंतो। मदनजी समान रुप गुण सोहंतो ॥आं॥
...गयंगल्या रुढ हुवा जी । सोहे इन्द्र समान ॥ बरोबरीरा सोभता जी । जानी
...मि... ...ा जान ॥ आ ॥ १ ॥ केइ गज गाजी रथे । केइ सुख पाले छे स्वार ॥
... ...णगारिया जी । जाणे अमर अवतार ॥ आ ॥ २ ॥ वन्ही रोशनी ते जधी
... ...यां उग्यां भान ॥ नाच रंग बहू विधना । वंदी जन गावे गान ॥ आं ॥
॥ ... आगम नंर परवर्या जी । चाल्या मध्य बजार ॥ चालो रायवर जोइये । इम
... ...नार ॥ आं ॥ ४ ॥ क्रांती गुण जो मदन का । सहू जन जनी कहे छे
... ॥ ... सुन्दरी सी भाग्यवंतनी । जग नारी नहीं अन्य ॥ आ ॥ ५ ॥ इम अनुक्र
...आया । गुण सुन्द्री मेहल पास । ते पण उभी थी गोख में फांइ । देखण
... ...ास ॥ आं ॥ ६ ॥ तिहांइ आइ उभा रह्या जी । करता सह जन खेल ॥

...गी मर्द। मी मूर्त एह ॥ इम हिया पे निश्चय कियो । एनो मर्त्र नहीं संदेह ॥ आ ॥
८ ॥ अहा रूप दिव्य पहनो । घठ्यो किम्यो हूंशीयार ॥ अहा मोहनी मूरती पहनी ।
अहा शोभा सिणगार ॥ आं ॥ ९ ॥ साची ए पर्णो म्हारा जी ॥ इहां गय की धाये ।
ना किम मूर्ख जाणीये । अती अश्चर्य उपजे जीय ॥ आ ॥ १० ॥ देखो जोवे नहीं मुज
भणी जी । बेठो मुख फेराय ॥ आज कपट में जाणीयो । मुज आगल ढोंग बणाय ॥
आ ॥ ११ ॥ जब आवे मुज साम ने ए । तब वणे कंगाल ॥ गर्ली बातां बणाय ने ।
मुज ने उपजावे जंजाल ॥ आ ॥ १२ ॥ आप थण बेठा राजवीर । मुज ने प्रकाड्यो
मद ॥ नहं भांड परणावीया । हाहा देखो दगो ए खेद ॥ आं ॥ १३ ॥ हूंतो जाण ती
मूरख्यो ए । एनो गुण भंडार ॥ रूप कला गुण सहू थी अधिका । हूं चूकी निराधार ॥
आ ॥ १४ ॥ रच्या परपंच इण ठगथी । मुज लायो इहां भरमाय ॥ घेटाइ छे कुदमा
। म किम्यो कियो अन्याय ॥ आ ॥ १६ ॥ आज धान करो मुज वन्ने जी ॥ सेठ को
पुत्र मदन ॥ राय सूता लायो हूंढने । तेनो सत्य इणीरो कथन ॥ आं ॥ १७ ॥ कुटम्ब
...म पारा कहे गयो । इण लगाया छे मांस । ते सब करामात पहनी छे । आज पड्यो
प्रकाश ॥ आ ॥ ...

निद्राने आवे लगार ॥ मदन चरित्र संभारीने । एसो अश्चर्य करे अपार ॥ आं ॥ २० ॥ प्रभाते नो आवसी । तब करस्युं पुरो फजीत ॥ क्षिण २ उठने जोवती । निशा पूरी होवे किण रीत ॥ आं ॥ २१ ॥ हिवे वरात मदन तणी जी । पहोंती तोरण जाय ॥ सासू धवाह सांथे लिया । और कीधा सहू उपाय ॥ आं ॥ २२ ॥ आरण कारण सांचवी । दीधी दंपती जोड मिलाय ॥ अमोल ढाल तीजी कही । जोवो पुण्य तणा पसाय ॥ आं ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ कंन्या दान तणे विषे । दीधो आधो राज ॥ हय गय रथ पायक घणां । राज के युक्तो साज ॥ १ ॥ संतोष्या सहू लोकने । योग्य करी सत्कार ॥ दंपति आया महल में । हीये उभरा ते प्यार ॥ २ ॥ आनंदे निशी आतिक्रमी । प्रगटियो दिनकार ॥ बंदी जन बरुदावली । सुणी ने जाग्या कुँवार ॥ ३ ॥ जाचक ने संतोषीया । कीधा जन व्यवहार ॥ शुची हुइ भोजन करी । करे मदन विचार ॥ ४ ॥ राते जाग्या मुज भणी । किस्यो उपज्यो तस मन ॥ हिवे मजा मिलिये जइ । इम करी चिंतन ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ४ थी ॥ ओलंभे मत दीजो ॥ यह ॥ ओलंभो खरो दीजेरे मदन ओ० ॥ आं ॥ महा पुण्यवंत मदन ते वारे । आया हवेली मझारे ॥ मूर्खको नचि

[illegible] । पुर्ने पेर नम्काले? माजन ॥ ओं ॥ १ ॥ [illegible] हमना उभग चढ़ाया
[illegible] आइ पड़ीया ॥ हाहा राने मज कर्मा आइ । लग [illegible] चढ़ीया
[illegible] ॥ समजो चरिम कुवर्ण विशार्ण। । [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] । प्रगट हुइ कपटाइर ॥ मा॥ ओं ॥ ३ ॥ [illegible] पात्र ।
[illegible] ॥ करतां नमाशा लाज न आवे । [illegible] ॥ मा ॥
[illegible] लेवो मुझ माथे । ते लेवो [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] हमारो ॥ मा ॥ ओं ॥ ५ ॥ अश्व जेम्मा [illegible]
[illegible] हुयो म्हारा थी । निण थी [illegible] ॥ मा ॥
[illegible] ना गया थो । हुइ हकीगत कहांने ॥ [illegible]
[illegible] मा ॥ ओं ॥ ७ ॥ महार्ग [illegible]
[illegible] आधार तुमारो ॥ कृप कर [illegible]
[illegible] छोड़ो ॥ किम [illegible]
[illegible] शेजारा कारण । [illegible]

[illegible]
११ ॥ ओट [illegible] पाठाण्यां । हुं [illegible] [illegible] । [illegible] मिथ्यामती तुम छो
[illegible] । [illegible] पूरी [illegible] सा ॥ ओ ॥ १२ ॥ [illegible] रहीसें [illegible] । परण्या न-
[illegible] ॥ [illegible] धो [illegible] भागी । हुं तो पुरी गिवारीर सा ॥ ओ ॥ १३ ॥ मू-
[illegible] । [illegible] भोजन [illegible] ॥ कांण मर्याद जरा नहीं राखी । [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ ओ ॥१४॥ [illegible] २ अपराध सौ म्हारो । सहू गुनां माफ कीजे
[illegible] । [illegible] पाइ । अंध जरा दयालीजेर ॥ सा ॥ ओ ॥ १५ ॥ इम
[illegible] पायां । मदनजी उचकी धटाइ ॥ इम किम करो तुम शाणी होइ ।
[illegible] ॥ सा ॥ ओ ॥१६॥ दुःख देवण ने हुं नहीं लाया । दुःख नहीं
[illegible] ॥ [illegible] प्रमाणे आज लग रहीया । और कहुं यहां कांइर ॥सा॥ ओ ॥
[illegible] हुं किम [illegible] । [illegible] चरित्र बणायो ॥ आज पीछाण्या तोही
[illegible] तुम सन [illegible] ॥ सा ॥ ओ ॥१८॥ सुंदरी कहे जो कृपा आपकी ।
[illegible] मुझ मांइ ॥ रूप सुन्दरी मोटी न होवे । पहली हुं घर आइर ॥सा
॥ मदन [illegible] उतावल । हुं नहीं राज कुंवारी ॥ चाणिकने घर

... नमस्कृ

... वहु या

... नेम तपु ॥ विनोद

... ॥ अनन्य [illegible] मदन कुं

... अमा नुगुण [illegible] ॥मा॥ अ॥

... निरा टाय ॥ [illegible] गुणाय मदन

... स्वनेम । कब मिल्स्यो संयोग ॥ किसी

... आवस जाग ॥ २ । जारम्वार अर्जी करे । हिवे दिम करो

... आपन । मन नहीं रहे व ठाम ॥ ३ ॥ विनय भक्ती नित्य करूं ।

... अवसार ॥ [illegible] भक्ती [illegible] पूर्णी [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]

॥७॥ ढाल ५ मी ॥ साधूजान [illegible] ॥ निज देश जावा चित
मज होवे । राजाजी पासे आवेजी ॥ प्रेम नमी विचार दरशावे । जावण चित किम चाहजी ॥ इहां
हावेजी ॥ म ॥ १ ॥ इम सुणी राजाजी फरमावे । जावण चित किम चाहजी ॥ इहां
रहो करो इच्छित कामा ॥ कुण हुयो तुमे दुःख दाइ जी ॥ म ॥ २ ॥ स्वामी आप
कृपाकी छायां । दुःख नहीं मुजने लगारोजी ॥ स्वजन मिलण
अति चित चहावे ॥ ते पण करे छे संभारोजी ॥ म ॥ ३ ॥ स्वजन थी मिल पाछोआंस्यु
। थोडाइक कालके मांइजी । अन्य कार्य मुज मार्गे वहूला । दो आज्ञा हित लाइजी
॥ म ॥ ४ ॥ अतिहट जाणी दीनी आज्ञा । मेहलां माही आया जी ॥ रुप सुंदरी से
कहे मधुरे ॥ हुं देश जावूं काम सायाजी ॥ म ॥ ५ ॥ नेणा श्रुत हो कहे प्रेमला । या
[illegible] वात सुणाइजी ॥ किस्यो देश आपरो नहीं जाणू । या किसी मन आइ जी
॥ म ॥ ६ ॥ मदन कहे हुं छूं प्रदेशी । वेपार काजे आयोजी ॥ माता पितादी सहू छे
[illegible] । इहां सहू सुख पाया जी ॥ म ॥ ७ ॥ मिलवारी मुज उमंग घणेरी । जरूर
[illegible] जास्युं जी ॥ तुम इहां सुख मांहे रहीये । थोडाही दिन मांहे आस्युंजी ॥ म ॥
८ ॥ अति अग्रह जावणरो जाणी ॥ त्रिया कहे कर जोडीजी । मैं पण आपरे साथे

[illegible] ॥ स ॥ २० ॥ मिलिया प्रेम घणेरो अथाह । पा-
[illegible] आया जाणो जी ॥ मिलिया पाछा देखता जाय । मदन कहे सुखे रहीजो जी ॥
[illegible] जी ॥ मिलिया पाछा देखता जाय । मदन कहे सुखे रहीजो जी ॥
[illegible] अतिकर्मा । श्री पुर नेडा आया जी ॥ दोय जोजन पे
[illegible] ॥ २१ ॥ [illegible] निण ठाया जी ॥ स ॥ २२ ॥ आगल युक्ती करे अनोखी ।
[illegible] ॥ छट्ठा खंड की ढाल पंचमी । ऋषि अमोलख गाइ जी ॥
[illegible] जी । छट्ठा खंड की ढाल पंचमी । ऋषि अमोलख गाइ जी ॥
[illegible] ॥ २३ ॥ ५ ॥ दुहा ॥ जए सामंत बुलाय ने । कहे मदन सुणो भ्रात ॥ सहू सुखे
[illegible] जाल ॥ १ ॥ थोडेही दिन आवस्यूं । सामंत कहे कर जोड
[illegible] चिंता छोड ॥ २ ॥ सुंदरी पूछे नमन कर । किहां
[illegible] ॥ मदन कहे तुम कारणे । करवो जुगतो काम ॥ ३ ॥ जोग जुगत जमाइ
[illegible] ठाम ॥ लट् जास्युं तुम भणी । जिम होवे सुनाम ॥ ४ ॥ ते कहे
[illegible] । मदन हुवा तयार । थोम नी मे ते आविया । श्री पुर नयर मझार ॥
[illegible] ॥ चाल ॥ मत लाजो हो नार चिराणी ॥ यह ॥ मदनेश्वर उत्तम

... । कहे मुज दुःख असमानी ॥ कृपा करीने दुःख गमाया । ... सोनानी ॥
... मानी ॥ म ॥ ९ ॥ सुवर्ण रुपा को फेके नाणो । जोइ मोर सोनानी ॥
... करो ... मानी ॥ म ॥ १० ॥ ... काइके मिले रुपानी । नशीब जिम लेवे मानी ॥ म ॥ १० ॥
... दांव । काइके मिले रुपानी । नशीब जिम लेवे ... निर्भागीने होवे रुपेया ॥ इम कीर्ति
... कगमनी । दौलत करे खीरानी ॥ निर्भागीने होवे रुपेया ॥ इम कीर्ति
... बहु लोकां जानी ॥ म ॥ ११ ॥ लिमित प्रकाश करे केइ आगे । केइ
... ॥ भोजन वस्त्र कछू न लेवे । निर्लोभी गुण खानी ॥ साक्षात देव
... ॥ १२ ॥ राजाजी पण सुणी परसंस्या । आया कोइ ब्रह्मज्ञानी ॥ भूत
... । हम कर आया ऐछानी । वात भूप ने मन मानी ॥ म ॥ १३ ॥
... सिव वामल । कह गया तेही ए जानी ॥ ब्रह्मचारी मुज वात वता
... । न पण मन हर्षानी ॥ म ॥ १४ ॥ दोनोइ आया यथा विधी
... ॥ तेज पुंज जोगी जो हर्षाया । ब्रह्मचारी पहचानी । तजी
... ॥ म ॥ १५ ॥ द्रढासनी द्रढ ध्यान लगायो । प्रभा नहीं जोवानी ॥
... पास बेठा । कर जोडी नरमानी । जाणे हिवे करे महरवानी ॥ म ॥ १६ ॥
... । ध्यान न किया टिकानी ॥ राजा सन्मुख जोइ बोले । हम

[illegible] । इम भण राजा अचरज पाया । मनां बडा [illegible] जानो । महाराजा [illegible] ॥ म ॥ १८ ॥ कर जोडी कहे अन्तर्यामी । मोटी करी महरबानी ॥ १९ ॥ [illegible] । देवो पना [illegible]मानो ॥ जिहां थाइ तुम थानो ॥ म ॥ [illegible] माने । थांरे भोग इलागे ॥ कोइक देवता हरण करीछे । [illegible] । अनमानर प्रमानो ॥ म ॥ २० ॥ जो मिलवाकी इच्छा होवतो । [illegible] भुजपासे । दुखिन देवे अकुलानो ॥ सुणो राजा बि-[illegible] ॥ इतो कृपा करोजो स्वामी । तो जाणु दी जिन्दगानी ॥ [illegible] । धम्य मय चरनानो ॥ बोले जोगी सुण म्हानी ॥ म ॥ २२ [illegible] मत्र जवम्य । ते आमो दिन उगा नी ॥ नदनी तटपर जाइ बेठो । जो [illegible] । [illegible] आवे पानी ॥ म ॥ २३ ॥ काष्ट स्थंभ एक वहतो आ-[illegible] ॥ तिण माहे म कुंवरी निकलसी । इम कही बणियां ध्यानी ॥ यात्राया थाले न वानी ॥ म ॥ २४ ॥ कर वंदन राय आनंद धरता । आया निज ठिकानो ॥ परसम्था आन कर जोगीकी ॥ षट खन्ड ढाल पटम्यानी । ऋषि अमोल

न्य २ ब्रह्मचारी जी । ज्ञानी गुणी सुख कार ॥ १ ॥ मांस घणा धीती गया । प्यारी
ननुजा वीजोग ॥ नेहतो अब मिलावसी । ब्रह्मचारी संयोग ॥ २ ॥ छाहा धन्य दिवस
घड़ । इम मन अति उमंगाय ॥ क्षिण जावे वर्षा समी । खान पान
विसराय ॥ ३ ॥ अप्रमादी सुभटने । नदी कंठ बेठाय ॥ सावध रही
जोता रहो । स्तंभ इम स्थंभ आय ॥ ४ ॥ नीकाली तत्क्षिण लइ । दीजो वधाइ मुज
॥ दारिद्र दूरा करी । देस्युं द्रव्य बहु तुज ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ७ मी ॥ श्री अभीनंदन
दुःख नीकंदन ॥ यह ॥ हिवे मदनजी निशा पछ्याथी । कोइ पास नहीं जोयजी ॥ मंत्र
साधन को मिस करीने । पुरमें गुप्त चल्या सोय जी ॥ हिवे ॥ १ ॥ सागे मदनको रुप
बनाइ । पूर्व मार्गी पर आवजी ॥ खाती खानण ने पग लागी । पोतानो नाम जणाय
जी ॥ हिवे ॥ २ ॥ अचानक मदनने जोइ । दंपती अश्चर्य पायजी ॥ प्रेमे उभराइ गोद
बैठाया । नेत्रां आंसू वहायजी ॥ हिवे ॥ ३ ॥ अहो वच्छ अत्री किहांथी आया ।
किहां रह्या इत्ता कालजी । थारे वियोगे हम दुःख पाया । बुरी मोहणी झालजी ॥हिवे॥
॥ ४ ॥ मदन नां तुज इहांइ रहीयो । चोकस कीधी अपार जी ॥ पण तुज पत्तो किहां

मैं वणाइं । देव शक्त प्रभाव जी ॥ मोटा कष्ट लइन वणाय ॥ ... इच्छित दे-
॥ हिवे ॥ १५ ॥ पट जडनरी विध वताइ । दीनो मदन ने संभलाय जी ॥ इच्छित दे-
॥ हिवे ॥ १६ ॥ खाती खातणरे पाय प्र-
णमी मदन हर्षाया । मन मानी वस्त पाय जी ॥ हिवणां काम उतावल को मुज । शिघ्र चल
णस्यां । कहै मिलस्यूं पाछो आय जी ॥ शैन्य पडावने स्थाने आया । सुन्दरी भणी जगायजी ॥
आगे जायजी ॥ हिवे ॥ १७ ॥ शैन्य पडावने स्थाने आया । सुन्दरी भणी जगायजी ॥
॥ हिवे ॥ १८ ॥ इण वेला किहां थी
चमकी उठी देख मदनेश्वर । आदर दे हर्षायजी ॥ हिवे ॥ १८ ॥ इण वेला किहां थी
पधार्या । मदन कहे सुणो वात जी ॥ सहू उपाय करी हूं आयो । तुम सावित्र घणा च-
तावजी ॥ हिवे ॥ १९ ॥ वैठो तुम अवी इण खंभ माही । देवू मैं नदी मैं वहायजी ।
॥ हिवे ॥ २० ॥ पूछे तो कहजो
नाम तुमारा नहि वैठा । कहाडी लेसी तुम तांय जी ॥ हूं सूती थी जागी इहां आइ । और न
... दंगा मुज । गर्भी घणी सुख मांय जी ॥ हिवे ॥ २१ ॥ सहू विधा भली पर समजाइ । दीधी खंभमें सोवायजी॥
... ॥ हिवे ॥ २२ ॥ खंभ मींडी-
... देव करामात । कुटंब मिलण ने उमायजी ॥ युक्ते वहाइ दीयो ते ततक्षिणे । अमो
य... गति तब । सरिता ने तट आयजी ॥

मत [illegible] निशा मांह गृप न [illegible] [illegible] नर्णा पर मत्वा । ब्र-
[illegible] निर्मोह्या [illegible] न आन [illegible] ॥ २ ॥ न नल दिन
[illegible] मिल्या वह थोक ॥
[illegible] गुणा नया भर्या । या मम
[illegible] निर्ति [illegible] जन ॥ त्राट आवर्मा ब्रवर्ता
[illegible] मानव जन्म [illegible] नेन पायांर ॥यह॥
[illegible] मार्ग । आ ॥ स्थम जन्दाश्रय वेवन चाह्यो
[illegible] मुनट निहाल्यो । देटयो भूप पान पाल्यो । कहे स्थंभ
[illegible] मन माल्यो ॥ वृद्ध ॥ १ ॥ पांकार थयो स्थंभ आयो आयो ।
[illegible] पायो जी ॥ शब्द नृपने सुणायो । राय अति उमायो । तटनी तट
[illegible] दिखायो ॥ वृद्ध ॥ २ ॥ शिम कहाडीने बाहिर लाइ । धाइनो शब्द
[illegible] ॥ मुज किहां फसाइ । यह छे अहो फांइ । [illegible]काले मुज भाइ । देव किहां
गयाइ ॥ वृद्ध ॥ ३ ॥ सुणी [illegible] [illegible] । [illegible] सत्य जाणयाजी ॥
[illegible]
[illegible] किम प[illegible] ॥ वृद्ध ॥ ६ ॥ [illegible]

गया ॥ बुद्ध ॥ ४ ॥ सुणी श्री ने स्थंभ उघाड्यो । बाहिर थाइ म्हारा जी ॥ आप आप
न पाड़ी । में किहां आइ दाड़ी । देव गया छांडी । इम आश्चर्य धमाड़ी ॥ बुद्ध ॥ ५ ॥
... मधुर वयणं बोलाइ । इम किम करे मेल्ही वाहेर ॥ मूर्छा गइ इम तांइ । इम सु-
न पूछाइ । बोली किम घबराइ । मूल वेध सघलाइ ॥ बुद्ध ॥ ६ ॥ मात तात निज
... आइ । कुंवरी हर्षित होइजी ॥ झट पांयेलागी । अति मोहणी जागी । सघ दुःख
... भागी । कृपा मझ अनुरागी ॥ बुद्ध ॥ ७ ॥ राय पूछे थाइ थी उमाइ । किहां रही
... बिन आइजी ॥ भय करे । घाइ । देव हर्यो मुज तांइ । राखी सुख मांइ । थां
... मंगाइ ॥ बुद्ध ॥ ८ ॥ हुं सूती थी सुख सेज जाइ । फिर मुज खबर न कांइजी
। इहां किम थिय आइ । किम रही स्थंभ मांइ । सुण अचर्य पाइ । ब्रह्मचारी गुण गाइ
॥ बुद्ध ॥ ९ ॥ मझ परिवार मिल्यां निणवार । कृत्या मंगलाचारेजी ॥ तब नृप प्रकासे
। ... ब्रह्मचारी पासे । पहलां भेटां हुलासे । फिर मझ सुखवासे ॥ बुद्ध ॥ १० ॥ति
... हिवे नरकुंमर आया। अति उमंग अगायाजी ॥ राय कुंवरी तांइ । शिघ आगे ला-
इ । आंगी पांये नमाइ । उपकार दरसाइ ॥ बुद्ध ॥ ११ ॥ पाय लागंता सुन्दरी जोवे ।

... ता भी प्रगट कीधाइ ...
गिणतीमें आइ जी ॥ वहु मांस भरमांइ । ता भी प्रगट कीधाइ । ...
गिणतीमें आइ जी ॥ निज २ स्थाने सहू सुखेरेइ । आनंदे दिन गुज-
इ । गना पति पयाइ ॥ बुद्ध ॥ २० ॥ अमोल पूण्य थी सोहवे । खन्ड छ-
रइजा । वाट जमाइनी जोवे । ढाल आठमी होवे । साक्षात भगवान ॥ ब्रह्म-
द्र मांय ॥ बुद्ध ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ पुरमें पसरी वरता । वर्ष दिवसेने मांय ॥
चारीजी आवीया । त्रिकाल का जान ॥ १ ॥ बुलाइ राय पुलीने । धन्ना नामे
वनी बनाया जमाइने । ते पण रहसी आय ॥ २ ॥ तिणही पुर मंही वसे । धन्ना नामे
शाहा ॥ रंभा मंजरी तस घर । रहे करी निर्वाह ॥ ३ ॥ तिण पण सुणी ए वारता ।
मनमें अति उमंगाय ॥ पूछूं ब्रह्म ज्ञानी भणी । देमुज पती बताय ॥ ४ ॥ अवसर ए
उत्तम मिल्यो ॥ जोवू महारा भाग॥ इम चिंती अइ तुरत। धन्ना शाहा पग लाग ॥ ५
॥ ७ ॥ ढाल ९ मी ॥ अम्बिका के मन्दिर के मांय ॥ यह ॥ पूर्व पुण्य संयोग । अचिं-
त्यो जोग जमे ॥ आं ॥ रंभा मंजरी आइ धन्ना जी पासे । कर जोडी ने नमे॥ अचिंत्यो
॥ १ ॥ मैं सुण्यो तात जी ज्ञानी यहां आया । यक्ष देवालय रमें ॥ अचिं ॥ २ ॥ ति-
कालकी वात प्रकाशे । मिलावे जे मनगमे ॥ अचिं ॥ ३ ॥ कृपा करी मुज तिहांले चा-

॥ २४ ॥ आहे २ ... सहू सुख दाता । हम थकी वारंवार नमें ॥ अ ॥ २५ ॥ माता
॥ २८ ॥ ... सहू सुख दाता । हम थकी वारंवार नमें ॥ अ ॥ २६ ॥ परस्यूं सुज प्राण-
... किया सुज उपर । हम कहता गया निज धेमें ॥ अ ॥ २७ ॥ अण चिंता मिली पहली परणी । म
... । ... आणदमें ॥ अ ॥ २८ ॥ ढाल पट खन्ड नवमें सवूरी । आइ अमोल सहू रमे
... मन हर्षा ॥ अ ॥ २८ ॥ ढाल पट ... हिवे ते सहू
॥ अ ॥ ... ॥ ७ ॥ दूहा ॥ मदन युद्ध परपंच थी । जमाया सहु काम ॥ हिवे ते सहू
... । आणी मन में हाम ॥ १ ॥ चमत्कार सहू प लखी । अश्चर्य पाया अपार ॥ नर
... घणी । ... दरबार ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी कहे सुखी रहो । हम जावां निज
... । सहू रह्या अश्चर्य पाम ॥ ३ ॥ देव वैकुंठ सिधाइ या ।
... पुधार ॥ गुण उच्चरंत घर गया । पसरी वात ते वार ॥ ४ ॥ उतर्या मदन
... । सुन ... घणाय ॥ आया निज शैन्या विषे । जो सहू जन हर्षाय
... ॥ ढाल १० मी ॥ कौन दिशासें आये पवन सुत ॥ यह ॥ देखो सब सुख
... मदन नृप ... ॥ अ ॥ शैन्य सजाइ चले मदनजी । जय नगारे घुराय ॥

एक मुकाम करी रस्तेमें । श्रीपुरके ढिग आये हो ॥ म ॥ १ ॥ पूर्वके बाग मांही उतरिया । रथशाल नृप बेठाये ॥ ते दौड आये दीनी वधाइ । पयठाण पुरके कवाये हो ॥ म ॥ २ ॥ मे आये बहु ठाट पाट से । सुणी नृप हर्षाये ॥ करी सजाइ शैन्या सघर्ना । पुर रंग ढंग सोभाये हो ॥म॥ ३ ॥ चाल्या वधावा नृपादी बहु । पुर जन अधिक उमाये ॥ देखो कैसा राय जमाइ । जे ब्रह्मचारी धनाये हो ॥ म ॥ ४ ॥ महद्धागम आभिन्या बागमें । भूपती मदन देखाये ॥ आनंद चउ नेत्र प्रफुल्लित । मदन आसण न धाये हो ॥ म ॥ ५ ॥ दोनो मिलिया नमीने प्रणम्या । हर्षथी हृदय भराये ॥ कहे नृप आप दर्शन चहातो । ते आज पुण्यसे देखाये हो ॥ म ॥ ६ ॥ पावण चारि कीजे हम पर । यहीज हम मन चहाये ॥ मदन कहे आप हुकम में हाजर । मधुर वचन मोहाये हो ॥ म ॥ ७ ॥ राय मदन दोनो एकण गजवर । रुप गुण सो भाये ॥ वंदी जन [illegible] बोले । उन धर चमर दुलाये हो ॥म॥ ८ ॥ मध्य पुरीमे होइ चाले । पूरजन मान वधाये ॥ छत्र झरोके गोरे गोरेडी । पेखण छत छवाये हो ॥ ९ ॥ अमोघ धाग दान देवता । जाचक दुःख गमाये ॥ बहु ठाट थी इम परवरीया । राज भवन में आये हो ॥ म ॥ १० ॥ [illegible]

दा मनाये । प्रेमथी थांसो धणाये ॥ म ॥ ११ ॥ मोड मदौ, ... नो
मदन सुणी विस्माये । अहो गेसा दानी धन्य विश्वमें । मदन सुगुण फरमाये हो ॥ म ॥
१२ ॥ राय कहे इस कंन्या परणो । जे तन मनसुं चाये । सतपुरुष के वचनको पालो ।
... वचण निफल न जाय हो ॥ म ॥ १३ ॥ मदन कहे आप राजेश्वर हो । फमा मुज
... ॥ मैं नहीं उपना राज के कुलमें । वाणिक जात कहाये हो ॥ म ॥ १४ ॥
... नृप पूछी किम लांभे । किस सुख काल गमाये ॥ जोगी जोडी देखी ...।
... मांभाये हो ॥ म ॥ १५ ॥ सुणी राय अश्चर्य अति पाया । येही निर्लोभी
... ॥ नहीं मिले जोतां इसा जगमें । ब्रह्मऋषि दरसाये हो ॥ म ॥ १६ ॥ राय कहे
... पुर पतन । जिस गुणसे तुम भाये ॥ वैसही हम मन लोभाया । नहीं जाये
... हो ॥ म ॥ १७ ॥ मदन कहे आप अगृह अती तो । ना नहीं मुज थी कह-
... ॥ इम सुणी सहु जन सुख पाया । मोत्सव अधिक मंडाये हो ॥ म ॥ १८ ॥ शुभ
... मुन्दरी धाइ । मदन भणी परणाये ॥ डायचो घणो दीयो भुपती । द्रव्य खूब
... हो ॥ म ॥ १९ ॥ अच्छो महल दियो रहणको । वहां सब सुख जमाये ॥ पक्ष
... किया कुलाह । पांभी देख विस्माये हो ॥ म ॥ २० ॥ पंच इन्द्रीके सुख भोगवे

सुखे २ इहां रहाय ॥ ढाल दशमी खन्ड छट्ठे की । ऋषि अघोलिक गये हो ॥ म ॥२१ ते ॥ ७ ॥ दुहा ॥ धन्नाशाहा सुणी वारता । परण्या राज कुँवार ॥ रंभा मंजरी ने कह्यो । ॥ गुण इर्षी अपार ॥ १ ॥ हरषी कर जोडी भणे । आप ले चालो साथ ॥ कोइ मुक्ती धोजी धरो । मिलावो मुझ नाथ ॥ २ ॥ धन्ना कहे चालो हिवे । करस्युं शक्के सहाय ॥ अंगी कार करसी पती । कहीं ब्रह्मचारी थाये ॥ ३ ॥ अंजन मंजन कर सज्या । तन सोले शृंगार ॥ धन्नाशाहा साथे चाल्यो । शिवका हुइ सवार ॥ ४ ॥ खास महल मदन तणो । आया तिणे चाल ॥ गुण सुन्दरी वृतांत सुण । अचंभी हुइ खुशाल ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल ११ मी ॥ छे हवा एक ॥ श्री वीर जिनेश्वर गौतम ने कहे ॥ यह ॥ मदन चलायाजी, सिघते आवीया ॥ देखी तिशाने जी, अचर्य पावीया ॥ चाल ॥ पाड अचर्य पूछे सेठसे । किणरी नार किम लावीया ॥ कारण कांइ मदन भाखो । किस्यो तुम मन चावीया ॥ सेठ कहे ए आप पत्नी मन्द्र वेमन आणोये ॥ निरोग पाला सरण दीजे । ज्यूंनो प्रेम पेछाणीये ॥ १ ॥ तब ते रम ... कर जोडी नमी ॥ हूं आप दासी जी, भूलो किम गमी ॥ चाल ॥ गमी किम भूलो आ स्वामी । गरुड घड उड आवीया ॥ महेन्द्र पुरके महल मांही । गंधर्व लग्न लगावीया ॥ आप वियोग में घोर रुदन । प्राण हरण खाइ पडी । तुम गुण्ये आयुबल जोगे ।

मार ॥ मा

आगे हुइ छ पन्य पडी ॥ ६ ॥ ... ॥ सुणी दूजी
परण्यो नहीं ॥ चाल ॥ सही परण्यो राज पुत्री । दूजी निशा तिहां गयो ॥ सुणी दूजी परण्यो नहीं ॥ चाल ॥ सही परण्यो राज पुत्री । दूजी निशा तिहां गयो ॥ ए अश्चर्य अति मन
थाइ में । जोतां पतो में न लह्यो ॥ अथाग जले किम उगरे । ए अश्चर्य अति मन
थाइ में । जोतां पतो में न लह्यो ॥ ३ ॥ कांइ प्रयोग तूं,
मांहे ॥ किम हुवे तूं रंभा मंजरी । ओलख वचन तूं थायरे ॥ ३ ॥ कांइ प्रयोग तूं,
जाणी मुज वातडी ॥ आवी इहां तू, मोह फंदे पडी ॥ चाल ॥ मोह फंद मुज न्हाख्या
थाय । परस्त्री त्याग मुज भणी ॥ वृत भंग नहीं न्हारो । किम वरुं हूं तुज भणी ॥
तिण थी जा तुज स्थान के । इण छल में हूं आस्यूं नहीं । इम वयण सुण कंथना ।
रंभा नेण आंसूं वहीं ॥ ४ ॥ सत्य वचन नाथ, आप छो सतवंता ॥ हुं निश्चय नहीं, छली
... अंता ॥ चाल ॥ लेवूं अंत हुं छली केहनो । इसी विसी नहीं जाणीयें ॥ वेम आप
... वग्या । कहूं वीती कहाणीयें ॥ जिम उगरी इण शेहर आइ । पाइ प्यारा प्राणेश्वर
... नगी मील महीमां । आप आगे उच्चरुं ॥ ५ ॥ आप गयाथी, में निंद्रावस भइ ॥ दिन
... चढीयां न शुद्ध तहनी लही ॥ चाल ॥ लही शुद्धी धाय माता । लक्षण देखी
मांहरा ॥ त्याह बुलाइ मात तात ने । देखाया ते सहु खरा ॥ रोस भराणी राणी राणा
... जगाइ मुज भणी ॥ नाम ठाम नव पूछीयो । दीधी धमकी अति घणी

चाल ॥

आवाया । हूं यहां स्याइ पाने

॥ हम वृहां एदन महर मन नयन ॥ मोहर्या

आयो । बिलखन हूं रह न पाइया ॥ यहां

॥ जिस घर नम रहा ॥ चाल नदन थत मुज रह । बहन इहां

॥ मह नेल घामा वादा । न बिना था नन रहा । मान वयण रहा

नलाग पण मनुष्य बिन नहीं आर्भंग । महर्न्दा पर हूं रहा

एव दिवस पा मधदारा नरनणां ॥ आना आड जो मन हम्यों घणो

इच्छा सार्प पति नथ । बनमें मुज न आइने ॥ पास आड पूछे न कुण.

मोहने ॥ बनरेशां के विया धर्म । किम इच्छा यहां फिर रहा ।

। कल्पित बात महारी रहा ॥ ९ ॥ हूं अनागण, मूर्ना बाटडी ।

या दुःख को घड़ी । चाल ॥ दुःख यहां धर छोडाइने । तुम मेलो

स्थानक ॥ जिम मिले मुज सजना । सुर्णा करो दया आनंद ॥ दुम सुणो रे

महारे माये वालीम ॥ मुज विरही किया

॥ १० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ विरह दुःख क्यों रहे व्याकुल । कोमल

[illegible] ॥ [illegible] आंदरी । त्या माल तन मज सुख रहो ॥ सुणी कंपी आ-

[illegible] ॥ ११ ॥ काम अन्ध ए मानसी नहीं कयो ॥ रख

[illegible] ॥ चाल ॥ एतो गुणज अंगे तहर्या । मरण श्रेय छे मुज भणी

[illegible] में निकल्यो । सब पूछा तस्कार दुःख अणी ॥ लगया झाड ने पहाड

[illegible] ॥ घर्वाम्बाड थी पड़ो कूवे । किसी कीजे इहां धरी ॥१२॥

[illegible] ॥ किणने लायोरे, कहाड तूं इण घडी ॥ चाल ॥ इण घडी

[illegible] । नहीं तो मरुं कूवे पडी ॥ इम सुणी ते ले चल्यो मुज ।

[illegible] इण ग्राम में मुज मित्र रहे पुलो धरी ॥ मध्य बजार नर

[illegible] ॥ १३ ॥ इणही पुर रहे अनंगी वसीया ॥ धन घर में घणो

[illegible] ॥ चाल ॥ [illegible] आइ बजार । अवलोकन महारो करी ॥ तत्क्षिण

[illegible] हर्ष और लक्ष्य लीनेया करा तिण । दगलो तिहां तब ही कीया

[illegible] मुज मांसी । पड़ो अपणे पर पाया ॥ १४ ॥ मैं पूछा नम, कुल थारो कहो

॥ वर्ती नुम आचार, धर्म किस्यो चहो ॥ चाल ॥ चहो धर्म प्रकाशीयो नव नेकेह उत्तम
हम ॥ अमर सौभाग्य, शृंगार नित्य नव । भाग अर्भानव नर रमे ॥ मोटा पुण्य हु था-
यरा, जहर्धा हमारे फर चडी ॥ सुणी वक्षण इम नेहना । हुंना मोगे सागर पडी ॥ १५
॥ नहीं आवृ हुं, घर फर्दा थायरे ॥ अनि निरक कर्म, न चहाये माहरे ॥ चाल ॥ माहारे
ए मृत्व नाहीं चहाये । ए थी नो मरणो भलो ॥ इम कहा हु घर्टा गर्ती । ने कहे घर्मा
चल्या ॥ कर धर्म नव मैंची मुजने । मयो पशु ज्यु चजार मे ॥ जोवो कर्म विटंबणा ।
म इम पडी दुःख धारमे ॥ १६ ॥ म मन समर्यो जी, नय नवकारने ॥ जो निर्मळ शील,
नो करो मारने ॥ चाल ॥ मार करा मामण मृगी। इम चिंतवना माहायक भया॥ अनेक
साप विच्छुडुइ मुज चोफेर घणा रह्या ॥ सरण धारी इगं नहीं मे । वेस्या सहू अलगी ॥ जोकर
करया माहा रो ॥ नम माप विच्छु डंक दइ ॥ १७ ॥ व्यार्था झणणाट, सहु वेस्या
नन ॥ जीव ने भागी अथर्य धर्म मेन । चाल ॥ अथर्य पा लोक जो नमाशा
रां रो निरणी घर्णा ॥ नेनले ए मेठ आइ । गुर्द्धा पुर्दा हमतणी ॥ धाइ
मा माहरे । हुं राखस्यूं घर्टा करा ॥ जैन धर्मी श्रावक छूं हुं । करस्यूं

पुण्य, ...

...। नाराज कीधो मुजने घणो ॥ सवे तरह ना सुख पाइ । एक फाफर रहा आपना॥ ... पुण्य जोग इहां । ब्रह्मचारी एक आवीया । अनुभव ज्ञान तणे प्रसादे । आप ... अवारीया ॥ १९ ॥ पटाण पुरपत, जमाइ आवसो ॥ इहां राजेश्वर, धूया परणा ... ॥ ढाल ॥ परणमी तेहनी पुत्री थारा । नाम पण बतावीयो ॥ निश्चय आयो मुज ... मन घणो हरखावीयो ॥ मार्ग संद पर जोवतां । आज नीठ दर्शन पावीया ॥ ... दुःख स्मरण आइ । सहु संगल वरतावीया ॥ २० ॥ ए कही साहीबा, वीती ... ॥ मूढ न समजोजी, सागने हूं लहूं ॥ चाल ॥ हूं लहूं सोगन निश्चय काजे । ... नारी नान ने ॥ जाण आपथी लाज राखो । संतापो मुज गात ने ॥ ढाल एक ... । अगाल ऋषि इण पर कहे ॥ रंभा मंजरी को चरित्र । सुणी मदन ... ॥ २१ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ मदन कहे अहो भामणी । साची थाणी वात ॥ ... घर थिपे । अपो सुख निज गात ॥ १ ॥ चोरीथी परणी तुमे । भोग सु- ... ॥ तुम पिता ने सन्मुखे । पुनः परण स्युं तुज ॥ २ ॥ प्रमदा कहे ए ... सखी ए पास ॥ मदन कहे फीकर तजो । रीत पूरी सहु हाम ॥ ३ ॥

गुण सुन्द्री निज कथन कही । संतोष्यो तम मन ॥ मिली रह दोनों सिया । सुखधी शाल गमन ॥ ४ ॥ धन्नासहा संतोष ने । पहोचाया तम घेर ॥ आगल कार्य साधवा । उपजी मन मे लेहर ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल १२ मी ॥ मोहन मिह मण ग्वनी ॥ यह ॥ मकरा मदन जी चिंतव । हूं चढ्यो इहा मांजर माय नो ॥ काम घणा अजु माहरे । न लिना रह्यां ने मिद्ध किम थाय नो ॥ म ॥ १ ॥ इहां थी आगे किम चालवो । इम चिन्तवी सुंदरी ने चेताय नो ॥ तुम [illegible] इहां ॥ [illegible] उपाय ना ॥ म । २ ॥ [illegible] किम कामान नो ॥ मदन कहे [illegible] ॥ म ॥ [illegible] ॥ किण विध काम सिद्ध [illegible] ॥ [illegible] इया सांभल ॥ देख्यु वाग न [illegible] ॥ [illegible] अर्थिया न भूषण ने पास ना ॥ [illegible] आस नो ॥ म ॥ ५ ॥ इम प्रमाणे [illegible] ॥ मदन कहे कृपा आपकी । आप प्रसाद [illegible] ॥ म ॥ ६ ॥ इहां थी आगे जावा तणी । इच्छा म्हारी पड़ नृपाल ना ॥ आज्ञा दीजीये मुज भणी । मिलवो छे मुज कुटुंब ने हाल तो

॥ ए ॥ ७ ॥ राय अश्रय परा कहे । काइ दुःख थी आयो देश याव तो ॥ ते जिम क-
हुवे । निश्चयमें मेटस्या विख वाद तो ॥ ए ॥ ८ ॥ मदन कहे किंचित दुःख नहीं ।
रा धणा मुज करणा जरूर तो ॥ ते करी पाछो आवस्युं । हाजर छूं हूं हुकम हजूर
॥ ए ॥ ९ ॥ राय कहे सुख जिम करो । फोज लेजावो लागे जित्ती साथ तो ॥
त्यां कीने इहां नणी । सज हुइ शैन्य हुकम हुयां नाथ तो ॥ ए ॥ १० ॥ आया खा-
म्यानण कने । प्रणमी कहे हूं जावू छूं देशतो । आप रहजो इहां सुखमें । पाछो आ-
काम हुयां अमेस तो ॥ ए ॥ ११ ॥ इम सहू ने संतोपने । तैयारी करी मदन तत्-
ण तो ॥ रंभा मंजरी साथे ग्रही । और सहु जसायो सरतन तो ॥ ए ॥ १२ ॥ शुभ
दीने चालीया । राजा प्रजा घणा पहोंचावा जाय तो ॥ दर्शन वेगा दीजीये । सीम
ण पहोंचाइ फिर आय तो ॥ ए ॥ १३ ॥ सुखे मुकाम करता थका । मदनजी आ-
मकन्द पुर पास तो ॥ साता कारी स्थानके । सहू रह्या कार्य युक्ती विमास तो॥ए॥
१४ ॥ दूत बलिष्ट कला निपुण । सजवाइ कहे जावो भूप पास तो ॥ कहजो जमाइ
आया । मदन नरेश वधावो सू आस तो ॥ ए ॥ १५ ॥ दूत अद्भुत साजे सजी । चा-
। हांइ मध्य बजार तो । लोक देखी विस्मित हुया । ए किण का सूभट आयो जुजा-

[illegible] नहीं

[illegible] फिर ना

[illegible] चांकन हुइ सांगं सभा । मुणि

[illegible] पाउली । सिस मयो सब मन ॥ ५ ॥ ७ ॥ दास ९३ मां ॥

[illegible]

[illegible] ॥ जिस मुज पुत्री भुष [illegible]

जप अवगर आपर ॥ [illegible]
पवन हम नृप कार । कंपातुर हुआ भूपालरे ॥ कुठाको हुआ तलघर भर्णारे । निमक
हरखा [illegible] ॥ उ ॥ २ ॥ झट झट लाया कोतवालनेरे । रोसे वचन कहे भूपर ॥
[illegible] माळीरे । भार्या ले साथ स्वरूपरे ॥ उ ॥ ३ ॥ जिण मुज पुत्री भृष्ट करीरे
[illegible] कालरे ॥ में दीठो थो गढ दिन पुरीरे । ते होइ आयो राजरे ॥ उ ॥
[illegible] तेहनी [illegible] । तेहनो थयो शत्रुरूपरे ॥ मांग छे कन्या माहरीरे । ततो
[illegible] ॥ उ ॥ ५ ॥ किंम दिदो थी आपीदारे । लडाइ किम करायरे ॥ इण
[illegible] । [illegible] दीसे उपायरे ॥ उ ॥ ६ ॥ किम जीवतां छोडयो तेहनेरे ।
[illegible] ॥ पाप प्रगट्या अब थायरारे । कहे जिम होवे तिम साचरे ॥ उ ॥
[illegible] । नृप बोल्या वचन कठोररे ॥ साचा मन में जाणीयारे । सा-
[illegible] ॥ उ ॥ ८ ॥ चिंते ऊंडा मन चिंपरे । किम कियो इण अन्यायरे ॥
[illegible] मुज भर्णारे । पाछोन आयुं इण टायरे ॥ उ ॥ ९ ॥ धर्म टगाइ इण
[illegible] । किरता थी गुणवंतरे ॥ सगणां मुजन दोनां पांचरे । नो पण कहाइ तंतरे ॥ उ ॥

लाणण नहीं दवर । मुझ ... ...
॥ दुहा ॥ नरमाइ कोतवाल कहे । आप महा पुण्यवंत ॥ किंचित गुण बहुकर लख्यो ।
निण थी हुवा महंत ॥ १ ॥ माठो नहीं लगाडीयो । पण प्रकास्युं गुज ॥ वचन न
पाल्यो मंच तुम ॥ एही अश्चर्य मुज ॥ २ ॥ ना कही इहां आवण तणी । पधारी छब्या
राज ॥ आपनो दोइ समर्थ छो । म्हारो चिचे अकाज ॥ ३ ॥ राणी मांगी आप की । ते
तिण विघ अथाय ॥ मर्या न होवे जीवता । कीजे कोड उपाय ॥ ४ ॥ सरणे आयो
आपके । लज्जा राखो मोय ॥ आप कहो सोही करूं । अण हूं तो न होय ॥ ५ ॥ ७ ॥
ढाल १४ मी ॥ तूं तो साची श्राविका ॥ यह ॥ भय नहीं उत्तम मिल थी । कुशल न
हुए थी हार हो ॥ साजन ॥ परिक्षा होवे इण तणी । जे वक्त वल जोय हो ॥ साजन
॥ भ ॥ १ ॥ मदन कहे नरमाइने । जो तुमने दुःख होय हो ॥ सा ॥ तो मे जीवित
निष्फल गिणुं । निश्चय कीजे सोय हो ॥ सा ॥ २ ॥ कोण समर्थ छे विश्वमे । थाणो
करवा अकाज हो ॥ सा ॥ धैर्य धरो मन ने विषे । सत्य थी मिले सुख साज हो ॥ सा
॥ भा ॥ ३ ॥ मंतो वचन पलट्यो नहीं । छे मुज पूरो ध्यान हो ॥ सा ॥ विन अवसर
आम्युं नहीं ॥ एहथी महारी जबान ॥ सा ॥ भा ॥ ४ ॥ ए अवसर आवा तणो । जा-

[illegible] हो ॥ सा ॥ अण हूं नो पान करूं नहीं । निश्चय [illegible] मन मान्या हो
॥ सा ॥ भा ॥ ५ ॥ सर्व विश्व वहो तहने । ज जग जीता जाय हो ॥ सा ॥ [illegible]
भार नहीं । जस आयु प्रबल होय हो ॥ सा ॥ भा ॥ ६ ॥ [illegible] । [illegible]
प्रकाश [illegible] हो ॥ सा ॥ ज म्हांरी रखाइ दिये [illegible] हो ॥ सा ॥ भा
॥ ७ ॥ [illegible] दिये । जाइ जोवो नेण हो ॥ सा ॥ [illegible] पुर्वा गाजर
[illegible] हो ॥ सा ॥ भा ॥ [illegible] अने अध्यग नही । जाइ
[illegible] हो ॥सा॥ ओलगो राज कुंवर [illegible] हो ॥ सा ॥ भा
॥ [illegible] वाइ साथ जो । [illegible] हो ॥ सा ॥ निज कोटवाल ने
[illegible] । [illegible] मन हो ॥सा॥ भा ॥ [illegible] धन्य आप ने । [illegible]
[illegible] हो ॥ सा ॥ [illegible] पुण्यवन्त हो ॥ सा ॥ भा
[illegible] । [illegible] परिक्षा हो ॥ सा ॥ स्वग मडप ने विषे ।
[illegible] हो ॥ सा ॥ भा ॥ १० ॥ हूं आयो गुण [illegible] । दरशण कर-
[illegible] हो ॥ सा ॥ देखी प्रताप ए आप को । पाम्यो घणो आराम ॥ सा ॥ भ ॥
॥ [illegible] आगे [illegible] । ते पण पावसी सुख हो ॥सा॥ आज भलो दिन हम तणो ।

[illegible] ॥ सा ॥ न उपसर्ग किम उपर्या । अक्षय मुज न सवाय हो ॥ सा ॥ भ ॥ १५ ॥
[illegible] नवकार थी । कीधी सुर मुज सार हो ॥ सा ॥ उडाइ मूकी वन विषे । चोर
[illegible] न वार हो ॥ सा ॥ भ ॥ १६ ॥ तिण वेंची बजार में । तव राखी एक सेट
[illegible] ॥ [illegible] मिल्या पालेश्वरं ॥ आण पुगाइ ठेट हो ॥ सा ॥ भ ॥ १८ ॥ विस्ता
[illegible] नणा छूटी जल धार हो ॥ सा ॥ धन्य २ सती छे तुज भणी । स-
[illegible] पार हो ॥ सा ॥ भ ॥ १९ ॥ हिवे जाइ हूं रायजी कने। देवूं वधाइ
[illegible] ॥ सा ॥ सब परिवार वधावचा । सामा आसी तेह हो ॥ सा ॥ भ ॥ २० ॥
[illegible] । पुर भणी कोटवाल हो ॥ सा ॥ अमोल पुण्यवंत मदनकी । हुइ
[illegible] हो ॥ सा ॥ भ ॥ २१ ॥ दुहा ॥ तव तिण महेन्द्र पुरी विषे । राज सभा
[illegible] ॥ राजा परजा सुस्त हो । चिंता करे अपार ॥ १ ॥ अचित्य उपसर्ग आवीयो ।
[illegible] अन्याय ॥ शत्रु छोड्यो जीवतो । तिणरा फल प्रगटाय ॥ २ ॥ इत्यादी
[illegible] । [illegible] हृदय उटंत ॥ ततले हर्षित वदनथी । कोटवाल आवंत ॥ ३ ॥ प्र-
[illegible] । नृप कहे अकुलाय ॥ कहे पहला वीतक कथा । किम समाधान थाय

॥ ७ ॥ ढाल १५ मी ॥ जंबू कयो मान लेर जाया ॥ यह ॥ राज
... मांभलो प्राणी । नर पुण्य अचिंत्य होय ॥ आं ॥ पुण्य भाग्य अचिंत्य छ प्राणी ।
... प्रत्यक्ष आय ॥ ते नर कारण ने भया । तेहना प्रगट्या पुण्य अमाप ॥ रा ॥
॥ १ ॥ बड़ राज पसाय हुवा । अने विद्या शक्ति अनेक ॥ दल प्रबल छ तेहने । कृपा
... मत टेक ॥ रा ॥ २ ॥ पुण्यवंत कोड उपाय मे प्राणी । मार्या कधी नहीं
जाय ॥ पुण्यवंत ने पुण्यवंत मिले । ते पण जोवो इण ठाय ॥ रा ॥ ३ ॥ मे मिल्यो म-
... राय ने । ते लाग्या म्हारे पाय ॥ ऋद्धि ठकुराइ घणी । पण अभीमान नहीं देखाय
॥ रा ॥ ४ ॥ उपगार तो अति मानीयो । ले दीधो जीवित दान ॥ बरोबरी हम बेठा-
या । और कीयो घणो सन्मान ॥ रा ॥ ५ ॥ अचरज ए छे मोटको । 'धाइ' डाली म्हाड
... ॥ मे तो मदन जी साथ छे । मने निजरे दीनी बताय ॥ रा ॥ ६ ॥ मे वात पूछी
... । जिण कीधा बीतक हाल ॥ ते तिणही सभा विषे । विस्तारी कह्या सवाल
॥ ... ॥ सुणी सहू सुख पामिया । करे धन्य २ मुख थी उचार ॥ हाहा कर्म गति
... । और सांभलो बड़ा सुख कार ॥ रा ॥ ८ ॥ नृप कहे शिघ्र चालीये । वधाइ लावां
॥ रा ॥ १० ॥ ...

जाइ भूपनी जी । कही राणी ने घात ॥ रंभा मेंजारी आइ छे । जवाइजी के साथ ॥ रा ॥ १० ॥ हँमी ममजी राणी कहे । अब क्यों करो गयो दुःख याद ॥ पुण्य विना किम भोगीये । वाइ जवाइ का अहलाद ॥ रा ॥ ११ ॥ वीतक घात राजा कहीजी । सब आइ परमान ॥ हर्ष पामी अति घणो । जागी पूर्वली प्रीत ॥ रा ॥ १२ ॥ चतुरंगी सैन्या सजी । सब राणी हुवा तैयार ॥ उमंग सहु संग चली जी । आया ग्राम के बार ॥ रा ॥ १३ ॥ फोज आवंती देखने जी । चमक्या मदन का लोक ॥ चेताया मदन भणी जी । आव चहुंको थोक ॥ रा ॥ १४ ॥ मदन बाहिर आया देखवा जी । आगे आया कोटवाल ॥ प्रणमी कहे लवा भणी जी । सामे आवे नृपाल ॥ रा ॥ १५ ॥ मदन जी सागत सगल जी । पायचर सन्मुख आय ॥ महेंद्र पती पाला हुयाजी । देखी हीयो हुलसाय ॥ रा ॥ १६ ॥ मिलिया बांय पसार ने जी । पूछ्यो सुख समाधान ॥ सुखासन सहु बेठाया जी । जोड हुआ पुण्यवान ॥ रा ॥ १७ ॥ राणी वृंद दास्यां तणे जी । आइ बाट पाग ॥ मा बेटी प्रेमा तुरी मिली । आश्रू पात हुल्लास ॥ रा ॥ १८ ॥ बाइ तूं गुणवन्त छे । किया मोटा नृप भरतार ॥ क्षमो अपराध सहु हम तणो । हम कियो विगर

मिलस्यु काम यन । तो सहु फाम मुज थाय ॥पुण्य॥
माचिव संपूजा । तब मुज मन सोपावे । विर्ती सिर्ती मलारी हर्षे ।
॥ पुण्य ॥ ४ ॥ इन विचारों निशा विहाणी । रंभा भणी चेतावे
मांहि । मुज मन आगे धांवे ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ मंजरी हर्ष कहे
नहीं थावे । मात मुसरा कुटम्ब ने मिलस्यु । मदन पुनः दर्शावे
खबर नहीं मुज । अब्यां किता ते रहावे ॥ छोड आया
जब पावे ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ ठाम ठिकाणो सहु जाण्या थी ।
आव्यं सुमन आइ । इम तस चित स्थिर ठावे ॥ पुण्य ॥
आगे । मिश्च हो ने फरसावे ॥ तुम दर्शने हम परमत्र हो-
। पुण्य ॥ ९ ॥ मदन कहे मात तात मिलण ने । मुज मन
आप मेंथामे । कृपा स्वामी भावे ॥ पुण्य ॥ १० ॥ नृप कहे
पहावे ॥ मदन कहे जो कृपा आपकी । कांइक फौ जलैरा-
नव विया ग कहा । प्रयाण मदन करावे ॥ राजा ग्रास-
संग पहोंचावे ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ दर्शन वेगा दीजो इम

अधिप थाइ । बरुघात निज पर आदर लो ॥ आज ॥ ६ ॥ चाल्या नग वर वाजत भेरी ।
धनुषत ओज [illegible] लो ॥ और प्रजा सेग हुइ घणेरी । आया ग्राम वाहिर फौरे लो
॥ आज ॥ ७ ॥ मदन नफर देखी सैन्या आती । हर्ष नाद उभग नीरे लो ॥ ततक्षिण
आइ ध.धी मदन ने । आमी सैन्य आती जणातीरे लो ॥ आज ॥ ८ ॥ मदनजी जोइ
पण हर्षाया । निज दल सज करायारे लो । पयदल पुर पत सन्मुख आया । इते तो
प्रधान दखायारे लो ॥ आज ॥ ९ ॥ नेणानेण मिल्या अमीरस टरीया । प्रेमथी हीया भरीयारे लो ॥
पुनी २ मदन जी मुजरा कीया । राय जी नमी कर धरीयारे लो ॥ आज ॥ १० ॥
सुख समाधीनी पूछी वातां । फिर तात ढिग मदन आतारे लो ॥ प्रेमाश्रुत पगे सीम
नमाता । व सुख देह लगातारे लो ॥ आज ॥ ११ ॥ पूत सपूत जोइ सहु सुख पावे
। मा मादिसनी विस्सो पद्धवीरे लो ॥ फिर तीनो भाइने आइ नमीया । दृढा लिंगन
[illegible] लो ॥ आज ॥ १२ ॥ मदन सज्जन सुख नल मन जाणे । के जाणे जिनराया
॥ [illegible] निरखी विराज्या । जोवन हर्ष टमायारे लो ॥ आज ॥ १३ ॥
[illegible] हर्ष वधाइ । कुमरा वारला कराइरे लो ॥ शुभ महोर्ते पुनः सजी मजाइ ।
[illegible]

आरी क्षामेर लो ॥ और ... ॥ मदन कुंवर पर जाय
॥ १५ ॥ सध्य पजारे घर्णी सधारी । जोवे उमट नर नारीरे लो ॥ आज ॥ १६ ॥ राय भवन में आइ उतरीया ।
वारी । ए कोइ नर अवतारीरे लो ॥ राज रुडीने अनुसरीयारे लो
नृपने नमन करीयारे लो ॥ रजा लेइ वसु पत घर आया । जोताइ सहु दुःख भागारे लो ॥ ची राय
॥ आज ॥ १७ ॥ माता जी ने पाये लागा । आसीस दीया पुण्य जागारे लो ॥ आज ॥ १८ ॥ और
मुर्धा नग जिम स्थिर रहा । कीधा सहुना मन मान्यारे लो ॥ पुण्यवंत किण ने नहीं अप-
मह सज्जन ने सन्मान्या । तेहीने जग पछान्यारे लो ॥ आज ॥ १९ ॥ शैन्य सहु सुख स्थान जमाइ ।
मान । सहु सज्जन को मिल्यो समागम । नित्यानंद वरताइरे
निशंक रह्या सुख मांहेरे लो ॥ पुण्य तणा फल ए दरसाया । पष्टम खन्ड पूर्ण थायारे लो ॥
लो ॥ आज ॥ २० ॥ अमोल ढाल सनेर गायारे लो ॥ आज ॥ २१ ॥ ७ ॥
मदन कुटुंब के सुख में लो भाया । गुण सुन्दरी मन मोहीया
॥ खन्ड सारांश । हरीगीत छंद ॥ सुर्वाकर रूप सुंदरी वर । महेन्द्र पुर पुनः वरा रंभा ।
॥ पण ब्रह्मचारी परण्या नारी । विरहना दुःख खोइया ॥ अमोल नर पुण्य जोइया ॥६॥
घट पुर सज्जन संग सोहीया॥पट खन्ड ए अधीकार कहे अमोल नर पुण्य जोइया ॥६॥

परम पुज्य श्री कहान जी ऋषि जी महाराज के सम्प्रदायके बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री अमोलख ऋषि जी रचित पुण्य प्रकाश मदन चरित्रस्य पथम खन्डम् .

समाप्त ॥ ६ ॥



॥ दुहा ॥ प्रणमु पंच प्रमेष्टी को । समरु सरस्वती मांय ॥ ए सातों का सरण ले । ...स खन्ड वरणाव ॥ १ ॥ दान शील तप भावना । धर्म का चार प्रकार॥ प्रथमपद ...। दान ने । से सहू गुण दातार ॥ २ ॥ महीमा दान की वरणवार। रचीयो मदन ...ल ॥ खन्ड २ रस नवनवा । सुणी हुवो मन पवित्र ॥ ३ ॥ मदन विदेश गया पछे ...नुपम पाया सुख । आरम्भ कार्य साधीया । ते सुणो बहू सुख ॥ ४ ॥ एकदा मदन ...टम्ब संग । करे सृतेक विधी वात ॥ कहो भाइ जी याद छ । वट वर को अवदात ॥ ५ ॥ शुभ वृक्षे वाणी वदी । आपा विनोद चार ॥ तिनही हित्रणा देखलो । निपज्या सहू प्रकार ॥ ६ ॥ श्री वर कहे मदन कहो । सहू यनिदा तुम हाल ॥ राज कुंवरी चट

[illegible] सुणी हम भया । निकल्यो थारो गुण ग्यान ॥ ९ ॥
थण [illegible] [illegible] गुराणी । जिन समकित रत्न पाया जी ॥ थइ ॥
७ ॥ ढाल १ [illegible] [illegible] पाइ जी ॥ सुणो ॥ आं ॥ नरसी मदन थई
सुणा मदन जी [illegible] पाइ जी ॥ सुणो ॥ आं ॥ नरसी मदन थई सुणो धीतक
थार्या प्रकासा । [illegible] तुम साधीया धपाइजी ॥ सुणो ॥१ ॥ श्री घर थइ सुणो धीतक
महारो । जिम राज पुत्री व्याह जी ॥ सुणो ॥ २ ॥ जिण वेला तुम मसीता में पढीया
। तब हम गया घबराइ जी ॥ सुणो ॥ ३ ॥ पुकार्या उत्तर नहीं पाया । मिहुं रह्या चिल
खाइ जी ॥ सुणो ॥ ४ ॥ दिन उगता पाणी उतर्यो । नीनो नीचे उतर्याइ जी ॥ सुणो
॥ ५ ॥ दूर २ लग जोया कांठा । किहां पत्तान पायाइ जी ॥ सुणो ॥ ६ ॥ आरत कर
ता निज घर आ १ । तान उदास दीठाइ जी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ पुछे मदन किम नहीं
दरसाधै । तुम किम रह्या विलखाइ जी ॥ सुणो ॥ ८ ॥ इम सुण हम धीतक कह्यो गनां
। मदन पड गया पाणी मांह जी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ जोया पण पत्तो नहीं लाग्यो । नेह
थी मन दुःखाइ जी ॥ सुणो ॥ १० ॥ सुणी वज्र पात ज्युं वचन ए लागा । तांनु
गया मुरछाइ जी ॥ सुणो ॥ ११ ॥ जल विन मीन नणीपर तडफे । प्राण आ कंठे रह्या

... सुणो आगे । नंदन ने हम दीठाइ
... कहे दे नंदन बताइ जी ॥ सुणो
... त्रिमुत चमकाइ जी ॥ सुणो ॥ १५ ॥
... जी ॥ सुणो ॥१६॥ निश्चय निवल शी
... ॥ १७ ॥ इम सुणी मन जरा स्थिर
... तेतले एक नैमीतिक आया । इमने
... दुःख सहू छोडो । तुम सहू पुण्य-
... आमिलसी । ऋद्धि घणी संग लाइ जी
... । याद आता रणमांइ जी ॥सुणो॥
... गले जाइजी ॥ सुणो ॥ २३ ॥ इम
... ॥ सुणो ॥ २४ ॥ कोइ उपाय ऐसो
... बुद्धी बल चलतो अजमायो । पण
... संपदा आइ । तब जे जोग घणया-
... मोदक । सस खंड दाळ घटती थाइ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भा। ... नज जीव ॥ साहास कुण करे बक्षे जी । जब आवे अचिंती रोव ॥ भ ॥ ६ ॥
कुंजर पुष्पवती ग्रही जी । तुर्त गयो निकल ॥ विजली ना झलकापरं जी । लागे नहीं
एक पल ॥ भ ॥ ७ ॥ दंती गयो जब वेगलो जी । तव सहेल्या करे पुकार ॥ दोडो २
राजे श्वर जी । दोडो सहू परिवार ॥ भ ॥ ८ ॥ दोडो जोधा सूभटा जी । कांइ अनर्थ
मोटो थाय ॥ धाइ माय ने ग्रही करी जी । ले मयंगल न्हाटो जाय ॥ भ ॥ ९ ॥ छांडा
वे कुंवरी भणी जी । करो सूर वीर सहाय ॥ [illegible] हा कार इम सांभली जी । लोक घणा
विस्माय ॥ भ ॥ १० ॥ राजा राणी दोडीया जी । कांइ बोल्या मंत्री सामंत ॥ बहू
जन दोडी आवीया जी । सहेल्या ने पूछंत ॥ भ ॥११॥ रुदन करंतीते भणे जी । कांइ
स्यूं पूछो मुज तांय ॥ हाथी ले भग्यो धाइ ने जी । लायो छुडाइ जाय ॥ भ ॥ १२ ॥
सुणी घबराया सहू जणा जी । दोड्या सुभट तत्काल ॥ किण दिशे गयो लेइने जी ।
चोकस करे भूपाल ॥ भ ॥ १३ ॥ शस्त्र ग्रही घणा सूरमा जी । कांइ भाग्या नोग ने
लार ॥ हाथे नहीं ते आवीयो जी । गयो गीरी गहन मझार ॥ भ ॥ १४ ॥ सहू फिर
पाछा आवीया जी । कहे नहीं आवे ते हाथ ॥ पतो न लागे किहां गयो जी । किसो
करा हो नाथ ॥ भ ॥१५॥ [illegible]

जी । लूछा कालजा मोय ॥ हा हा हिवे किस्यो करूं जी । इम राणी [illegible] राय ॥ [illegible]
जी । ॥ १७ ॥ उर कुटे शिर भूहणे जी । पलक २ मुर छाय ॥ रंगने मांही भंग हुयो जी ।
काइ [illegible] सुणे ख्याल तमाशा बंध हुया जी । काइ मछु [illegible] खिलवाय ॥ भ ॥ १८ ॥
राय ने करे [illegible] ॥ मछु जन गया पुर विषे जी । मोह ए मोटो रोग ॥ भ ॥ १९ ॥
मंगावस्युं समजाइ [illegible] जी । काइ आर्त कियां किस्यो होय ॥ जीवती हुइ तो
समजाइ जी । उधमथी [illegible] जोय ॥ भ ॥ २० ॥ इत्यादी वचने करी जी । काइ राणी
दुहा राय ॥ अमोल ढाल दूजी कही जी । श्री धर मदन जणाय ॥ भ ॥ २१ ॥ ७ ॥
॥ राय मंत्री [illegible] मिली । उंडो करे विचार ॥ किण उपाय थकी लगे । बाइ तणा
समाचार ॥ १ ॥ ले गया ने जीवती । नहीं भक्षेते तन । आगे कहीं न्हाखी दइ । तो
[illegible] भटकसी वन ॥ २ ॥ प्रधान कहे पीटाइये । डंडेरो पुर मांय । जो कोइ लासी बाइ
ने । देसी [illegible] परणाया ॥ ३ ॥ काम नहीं कायर तणो । लासी को पुण्यवंत ॥ जीवती
[illegible] तो [illegible] । परदेशी [illegible] कंत ॥ ४ ॥ लालच वस जासी घणा । लासी पतो लगाय
॥ [illegible] मर्चाय वी । गइ राय मन भाय ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ३ जी ॥ वीर सुणो

... सुणी वचन राय हर्षायो । सभालोण हो कहे भट ने बुलाय ॥
...अजाथा पुर विषे । जे जाइ हो राय कुँअरी लाय ॥ सु ॥ १ ॥ तेहने तेह परणाव
... दसी होंनस द्रव्य अपार॥ भट चट पचन चडायने । पडह पीटचो हो ते पुर
... ॥ स ॥ २ ॥ सुणी ने वहु चालीया । जोवा ने हो ते राज कुँवार ॥ चउदिश
माहे फिर्या घणा । नहीं मिल्या थी हो आइ रह्या निज द्वार ॥ सु ॥ ३ ॥ तव स्वपन
... भणी । कुलदेवी हो कहे चांडो नूं साय ॥ राज पुत्री ने लेववा । तूं तो जाजे
... वन माय ॥ सु ॥ ४ ॥ ते तो मिलसी तुज भणी । मुखी होसो हो प्रगटया
... पुण्य ॥ आग्या अणायो मैं ताताने । अज्ञादी हो करो काम निपुण ॥ सु ॥ ५ ॥
... । मैं कह्यो हो लाबूं राज कुँवार ॥ ते कहे शिघ्र पधारीये । काम
... कथा अनुसार ॥ सु ॥ नाम ठान नोंधी लीया । हूं चाल्यो हो तुइ मन
... ॥ कजली वन ने पूछतो । हूं पहूं तो गजारण्या पास ॥ सु ॥ ७ ॥ ग्राम एक
... । हूं रहीयो हो भोजन ने काम ॥ पूछ्यो कोइक भीलथी । कजली वन हो
... ठाम ॥ सु ॥ ८ ॥ ते कहे इहां थी उतरे । एक जोजन हो रेवानदी
... ॥ तरना पड़ा कांटा छे । ते झाड़ी हो कजली वन ने कहाय ॥ सु ॥ ९ ॥ किम

मरण सुख हो किम करी जपाय ॥ सु ॥ १० ॥ जे नर नथी लंघीया । ते न आया हो
फिर ने पाछा घेर ॥ फिर पाछा जाया धरे । जो चायो हो तनने खेर ॥ सु ॥ ११ ॥
फिर में पुछ्यो तेहने । गज वेचे हो वेपारी लाय ॥ इणही घन थी में सुण्या ॥ विन
गया हो किम हाथे आय ॥ सु ॥ १२ ॥ ते कहे उपाय सांभलो । जिम पकडा हो हम
ए गजराज ॥ जायां नहीं पेले कंठे । एले तीरे हो रही करा काज ॥ सु ॥ १३ ॥ फील
नगर थी अधिक रया । खोदा हो एक उंडीखाड ॥ तेहने उपर पाथरा । फतलीचीमट
हो वंश नर्णाज फाड ॥ सु ॥ १४ ॥ चारो हरीयो तिण परे । लगाइ हो करां हथणी
तयार ॥ कागद नर्णा सुहामणी । उभी करां हो खाड पे ते वार ॥ सु ॥ १५ ॥
टोली आवे गज नर्णी । तिण नद पे हो जल पीवा काज ॥ केली करे बहु विध तिहां ।
[illegible] हो [illegible] हम माज ॥ सु ॥ १६ ॥ कोइक गज मद में छक्यां । ते जाणे
हो चर कुं [illegible] एह ॥ पडे आइ तिण उपरे । ते खाड में हो पडे ततक्षण सु ॥ १७ ॥
एक पक्ष पड्यो रहे । क्षुया व्यापे अति दुर्वल थाये ॥ तब हम नेडा
जाइने । थंडा २ हो नग घास चराय ॥ सु ॥ १८ ॥ वस करां जोग उपाय थी । ते

भोरी धीन मीं ॥ पह ॥ सुणी वयण राय हर्षीया । ततक्षिण हो कहे भट ने बुलाय ॥
पडह बजाओ पुर विषे । जे जाइ हो राय कुँवरी लाय ॥ सु ॥ १ ॥ तेहने तेह परणाव
सी । वली देसी हो नस द्रव्य अपार॥ भट चट वचन चडायने । पडह पीटचो हो ते पुर
ने मझार ॥ सु ॥ २ ॥ सुणी ने केइ चालीया । जोया ने हो ते राज कुँवार ॥ चउदिश
माहे फिर्या घणा । नहीं मिल्या थी हो आइ रह्या निज द्वार ॥ सु ॥ ३ ॥ तव स्वपन
माय मुज भणी । कुलदेवी हो कहे वीडो नूं साय ॥ राज पुत्री ने लेववा । तूं तो जाजे
हो कजली वन माय ॥ सु ॥ ४ ॥ ते तो मिलसी तुज भणी । सुखी होसो हो प्रगटया
मुझ पुण्य ॥ जाग्यो जणायो में तातने । अन्नादी हो करो काम निपुण ॥ सु ॥ ५ ॥
राजा जी पासे जइ ने । में कह्यो हो लावूं राज कुँवार ॥ ते कहे शिघ्र पधारीये । कार्य
हुया हो परस्युं कह्या अनुसार ॥ सु ॥ नाम ठाम नोंधी लीया । हूं चाल्यो हो हुइ मन
हुलास ॥ कजली वन ने पूछतो । हूं पहूं तो गजारण्या पास ॥ सु ॥ ७ ॥ ग्राम एक
आयो तिहां । हूं रहीयो हो भोजन ने काम ॥ पूछ्यो कोइक भीलथी । कजली वन हो
कहां छे किण ठाम ॥ सु ॥ ८ ॥ ते कहे इहां थी उतरे । एक जो जन हो रेवानदी
आय ॥ [illegible]

मरण मुख हो किम करी जवाय ॥ सु ॥ १० ॥ जे नर नदी लंघीया । ते न आया हो
फिर ने पाछा घेर ॥ फिर पाछा जावा घरे । जो चावो हो तननें खेर ॥ सु ॥ ११ ॥
फिर में पूछ्यो तेहने । गज वेंचे हो वेपारी लाय ॥ इणही वन थी में सुण्या ॥ विन
गया हो किम हाथे आय ॥ सु ॥ १२ ॥ ते कहे उपाय सांभलो । जिम पकडां हो हम
ए गजराज ॥ जावां नहीं पेले कंठे । एले तीरे हो रही करा काज ॥ सु ॥ १३ ॥ फीले
सरीर थी अधिक रया । खोदा हो एक उंडीखाड ॥ तेहने उपर पाथरा । फतलीचीमट
हो वंश तणीज फाड ॥ सु ॥ १४ ॥ चारो हरीयो तिण परे । लगाइ हो करां हथणी
तैयार ॥ कागद तणी सुहामणी । उभी करां हो खाड पे ते वार ॥ सु ॥ १५ ॥
टोली आवे गज तणी । तिण नद पे हो जल पीवा काज ॥ केली करे बहु विध तिहां ।
एली तीरे हो देखे हम स्ताज ॥ सु ॥ १६ ॥ कोइक गज मद में छक्या । ते जाणे
हो चरे कुंजरी एह ॥ पडे आइ तिण उपरे । ते खाड में हो पडे ततक्षेव सु ॥ १७ ॥
[illegible] पस पड्यो रहे । क्षुधा त्रपाय अति दुर्वल थाये ॥ तव हम नेडा
आइने । थोडो २ हो तस चारो चराय ॥ सु ॥ १८ ॥ वस करां जोग उपाय थी । ने

हमारे हो अब मेदो थाय ॥ मत्र आपल्ड मूं खोदने । हम कहाडा हो ते हम त्यार आय
॥ सु ॥ १९ ॥ सांकल्ड दंड धी बांध ने । त्यांशं हो इण मामरे माय ॥ मेदो करा महू
नर धर्वा । इश दिक हो मधु अहार कराय ॥ सु ॥ २० ॥ अंगो होय ते वेचवा । जा-
इ पेचा हो ले मूं मागवा दाम ॥ यह आजीविका हम तणी । ते करवा हो किम हुइ
तुम हाम ॥ सु ॥ २१ ॥ हम चेताशां हिव भणी । निहां जावा हो मन करो उमंग ॥
इणा जो गम वेपारकी । तो रहीजे हो तुम म्हारे जी संग ॥ सु ॥ २२ ॥ इम समजाइ
बहु विधि । ते गया हो कोइ काम के काज ॥ हाल तीजी खन्ड सात की । कहे अमा-
लिक हो जोवो पुण्य का साज ॥ सु ॥ २३ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ सुणी वचन ते भीलका ।
धरवरो चित मझार ॥ संकल्प विकल्प मन हुवो । जस न एक विचार ॥ १ ॥ निश्चय
कीनो मन धरी । मरणो छे एक वार ॥ धारी काज जे नीकल्या , जीवता पाइणो पार
॥ २ ॥ खाली तो हिव मुज धर्वा । म्हारे घर न जवाय ॥ हिम्मत मदत देव की ।
मार्ग ए अन थाय ॥ ३ ॥ होणहार जे होवसी । करस्यूं बुद्धी उपाय ॥ इम चिंता शि
र धारीयो । सहास भर बन मांय ॥ ४ ॥ आयो रेवा नद तटे । पेख्यो द्रह लगाय ॥
सिरा [illegible] परीक्षा । अचेतन होता देखाय ॥ ५ ॥ [illegible]

रो हो तब जो जो जी ॥ वीतक ॥ आं ॥ रेवातट एक वट वृक्ष वर, पहले कोनार प-
खीजी ॥ तीरी नीर आइ चढीयो तिणपे । गहरो देखी जी ॥ वीत ॥ १ ॥ गज वृंद
देख विचार करुं मन । कीजे किस्यो उपायो जी ॥ जो देखे कोइ फील मुजे तो । का
लज आयो जी ॥ वीत ॥ २ ॥ कार्य म्हारो इणही वन में । फीरीया थी सिद्ध न थावे
जी ॥ जीवती मूइ राजरी कंन्या । द्रष्टी आवे जी ॥ वीत ॥ ३ ॥ वृक्ष घणा छे इण
वन मांही । गया थी नही ओलखाइ जी ॥ झड रुप हूं वणी चलूं तो । कारज थाइजी
॥ धीत ॥ ४ ॥ इम चिंती ग्रही वड की डाली । मोटी छोटी तोडी जी ॥ सर्व सरीर
ने बांधी लीधी । पतीया चोडी जी ॥ वीत ॥ ५ ॥ झामर झूमर होइने उतर्यो । धीरे२
चाल्यो जी ॥ चकोर निजरे चउ दिश जोतो । गज आवे हाल्यो जी ॥ वीत ॥ ६ ।
जो देखूं कोइ दंती आतो । तो तिहांहीं स्थिर रेवुंजी ॥ आगे गया थी आगे चालूं ।
डर दिल लेवुं जी ॥ वीत ॥ ७ ॥ इण पर वहूली भूम उलंधतो । एक गीरी तले आ-
योजी ॥ आगे अंजन गिरीने सरीखो । फील देखायो जी ॥ वीत ॥ ८ ॥ सात अंग
तस भूमी ए लागा । घूमंतो वन फिरतो जी ॥ अन्य गज पासे त नहीं जावे । झाडीमें

या जी । ते देखी मुज मनडों हर्ष्यो । भेद ज पाया जी ॥ वीत ॥ २० ॥ उपर थी ए खुशी रहे छे । हाथी थी मन डरती जी ॥ पण मनडो तो लाग्यो कुटम्ब में । नेणा भरते जी ॥ वीत ॥ २१ ॥ हिवे इणरो हूं दुःख गमावुं । इम मन मांही विचारी जी ॥ वृक्ष रुप तजी ने चाडियो । वड पे ते वारी जी ॥ वीत ॥ २२ ॥ शाख पत्र नी आडे छिपीयो । पत्र लिखीने न्हाखी जी ॥ लेखित पत्र देखी कुँवरी हुइ । हाकी थाकी जी ॥ वीत ॥ २३ ॥ अश्चर्य पाइ लियो उठाइ । किहांथी उड ए आइजी ॥ नर विना कुण चित्रे अक्षर । उष्यांग लगाइजी ॥ वीत ॥ २४ ॥ वांचण लागी हुइ अति आतुर । ढाल चथुर्थी मांहीजी ॥ सत खन्डनी आगे वीतक । अमोल सुणाइजी ॥ वीतक ॥ २५ ॥ ॥ ७ ॥ दुहा ॥ हूं अति कष्ट सही करी । तुमने लेवण काम ॥ आयो नृप नो मोकल्यो । दर्शने लियो विश्राम ॥ १ ॥ जो मन हे चलव तणो तो । होवो हूंशीयार ॥ नहीं तो उत्तर आर्पाये । जाउं म्हारे द्वार ॥ २ ॥ हर्ष आश्रू कुँवरी हुइ । लरु वर ऊपर जोय ॥ चां निजर हुयां थका । आनंद अन हद होय ॥ ३ ॥ शानी करी मुजने तदा । आवो अधो भय छोड ॥ गज हमणा जागे नहीं । पूरो म्हारो कोड ॥ ४ ॥ नीचो उतर्यो तसु-

रक्षण । न आइ मुज पास ॥ दोनो मिल सुखीया भया । जाणे फली सहू आस ॥ ९ ॥
॥ ❀ ॥ ढाल ५ मी ॥ कुँवर अभे बुद्धनो भंडारीरे ॥ यह ॥ मदन जी सुणीयो सारं
म्हारीरे ॥ मद० ॥ जिण विध परण्यो राय पुत्री में । कहूं वींती सारी ॥ आं ॥ एका
न्त अवसर पाइ तिण समें । बोले कुँवारी ॥ भले पधार्या कार्य सार्या । कुटम्ब दो गि
लारी ॥ म ॥ १ ॥ में उपाय बतायो तस लो । मृत्यू रुप धारि ॥ छोडी जासी देंते
तुज । में लस्यूं उठारी ॥ म ॥ २ ॥ इम सुण कुँवरी पडी मृत्यूक जिम । गज जब जा
ग्यारी ॥ जगावे कुँवरी नहीं जागे । तब गयो घबरारी ॥ म ॥ ३ ॥ मरी जाणिने रोये
घणं गे । गयो वन मझारी ॥ में निचिंत हो कुँवरी पासे । आयो ते वारी ॥ म ॥ ४ ॥
में घान्ध ने कुँवरी । ली पीठ पर धारी ॥ शिघ्र गती तिहांथी चाल्या । कारज
री ॥ म ॥ ५ ॥ रेवा सरीता पार होवा भगू । भय मन अपारी॥ ततखे गजन
गाया । जोओ हूं लारी ॥ म ॥ ६ ॥ काष्ट सूंडमें न्हाटो आवे । वायु वेगारी ॥
गज कुँवरी पेछाण्यो । गया अति घबरारी ॥ म ॥ ७ ॥ हिवे मृत्यु ए आइ आ
मेहनत व्यर्थ सारी ॥ संतप्त कोधे दीसे देंती । न्हाख से सही मारी ॥ म ॥८॥
तस न घबरावो । ए वट वृक्ष भारी ॥ इण पर शख चढीने बेसां । जिम देन्तां

[illegible] । मुड्यो न लगारी । हम आयु ने पुण्य प्रतापे । गयो फ[illegible] हारी ॥ म ॥
॥ १२ ॥ फिर [illegible] आलूं [illegible] । जाये न लगारी ॥ आप उछले ने सूंड उछाले ।
[illegible] ॥ म ॥ १३ ॥ न दिवस ने निशा विहाणी । गया हम अकुलारी ॥ ए
[illegible] जोयता । वडी मुर्शावत धारी ॥ म ॥ १४ ॥ अन्य उपाय न दीस्यो
[illegible] । [illegible] संभारी ॥ जहना हुकम थी साहस कीधो । लसी ते उवारी ॥म॥
॥ १५ ॥ [illegible] ने तांड । मन धग करारी । तीन दीवसमें सुखीया थास्यां । धा
[illegible] ॥ म ॥ १६ ॥ इम [illegible] डाली ने तन वांध्यो । पद्मासन वाली । आराधन
[illegible] । [illegible] ॥ म ॥ १७ ॥ चोथे प्रात प्रगटी मैया । प्रणमी उ-
[illegible] ॥ ए संकट थी वेग छोडावो । असुरा ने वारी ॥ म ॥ १८ ॥ अचूक वाण आपी-
[illegible] । [illegible] ॥ अदर्श हुइ ने वोदशी । में ध्यान ने निवारी ॥ म ॥
॥ १९ ॥ [illegible] गज थी । जं जीनच की चहारी ॥ तो ततक्षिण भीगो

नन मन राखा मैं भरू । आय जोय लाय ॥ ६ ॥ पांचांई चार पुरा पं पकरा । आगल
चाल्या जाय ॥ थिम थीच मैं उपजे । ते सूण जो चित लाय ॥ ७ ॥ ७ ॥ ढाल ६ टी
॥ सो धन सिंहासणरेवृती ॥ यह ॥ जोवो कला कपटी तणी । सरल न समजे कांयरे
॥ आर्धार तो सत्य छी तीरे । सुण जो ते चित लायरे ॥ जो ॥ १ ॥ तिण अवसर अंत
लिग में । जातो विद्या धर कांयरे ॥ नीचे जोय जाला छम भणी । हर्षित हियडे होयरे
॥ जो ॥ २ ॥ पुष्पवती जोइ मोहि थो । हरण करण लाग्यो लाररे ॥ तर भेद हम
जाण्यो नहीं । संचे जाह होण हाररे ॥ जो ॥ ३ ॥ कुँवरी कहे उभा रहो । त्रपा लागी
छ अपाररे ॥ कृपा करी जल पाइये ॥ जिम आवे चालण करारर ॥ जो ॥ ४ ॥ तर
ल तास कढाय ने । हूं ल्वा गयो नाररे ॥ कुंकडा करी मिलीयो नहीं । आगे गयो सर
र तीररे ॥ जो ॥ ५ ॥ पाछे ताय रच्यो खेचरू । म्हाराइ रूप धणायरे ॥ दोड आयो
त्यरी कने । जल पाल कर साहायरे ॥ जो ॥६॥ घबराइ हम उच्चरे । अलवी बावरी
करो आयो ॥ रचे विघ कोइ उपजे । मैं आयो जे जोयरे ॥ जो ॥ ७ ॥ कोइ देव दान
व आवो । मुज सम रूप धणायरे ॥ लार लाग्यो थो ते मोहिरे । हूं दोडी आयो इण ठायरे
॥ जो ॥ ८ ॥ भास्यो उवेक शिघ कुँवरी । दोनू चल्या तव दोडरे ॥ मैं पण जोवा दुर

कहे माडा [illegible]

यर ॥ नुकशा [illegible]

जआ मिट का [illegible]

नगर सभाए [illegible]

भाव ॥ अहा प्रभु [illegible]

आने मनि ज्यारी [illegible]

न अम्ब वी गणहा [illegible]

ने लइ मद्दा विश्वास हो ॥ म ॥ ८ ॥ [illegible] सालण

चाल ॥ गर्वसा मुज कमान जी । बोले दया लाइ सभाय हो ॥ म ॥ ९ ॥ कुण तुम

पिता थी आवीया जी । केथे हो किण काज ॥ मन्य बात वार्ता करो तो । हूं देस्युं

कुछ साज हो ॥ म ॥ १० ॥ मैं कह्यो मैं निराधार छुं भा । नहीं सज्जन मुज पास ॥

इम सुणी मे दया लाइ जी । सार्चा किम कीजे प्रकाश हो ॥ म ॥ ११ ॥ सालण क-

हे चिंता तजो जी । तूं मुज पुत्र समान ॥ सुखे रहो घर माहरे जी । मैं देस्युं वस्त्र

खान पान हो ॥ म ॥ १२ ॥ सखवालो इण वागने जी । ऊपर नहीं कोइ काम ॥ इस

सुणी ने घर घरी आ॰ । तेणी राजमहीज रचना विमान हो ॥ म ॥ १३ ॥ नित्य प्रत
फूल चूंटे जी । हार करे घर नहार ॥ भूषण व्याल बहु विध करे जी । में पूछ्यो तस
निण वार हो ॥ म ॥ १४ ॥ माली यह बणाय नेजी । नित्य प्रत किहां ले जाय ॥ ते
कह घटा नांमलोरे । राय कुँवरी ने घणा ए सुहाय हो ॥ म ॥ १५ ॥ फिर मैं पूछ्यो
राय ने जी । किसी पुत्री है सांयाते कहै एकाएक छे जी । ते पण आइ दुःख पाय हो
॥ म ॥ १६ ॥ वसुपत सेठ का सुत थी जी । होसी तेहनो व्याव ॥ थोडा दिन के आं
तर जी । मांड रो घणा उत्सहाव हो ॥ म ॥ १७ ॥ इम सुणी मैं आणंदीयो जी । छि
ये करूं उपाय ॥ फूल तणी रचना विषेजी । देखूं कुँवरीने समजाय हो ॥ म ॥ १८ ॥
माली ने पण जाणू छूंजी । करवा पुष्प आभरण ॥ कहो तो करूं साडी कंचूकी जी ।
राजा कुँवरी नो मोह मन हो ॥ म ॥ १९ ॥ इम सुण ते खुशी हुइ जी । दियो सह
कारी हाथ ॥ रचना रचन सुरू करी जी । जे भुक्ती दोनो साथ हो ॥ म ॥ २० ॥ क-
चली की रेखा नहीं जी । फूले पुष्प घट झाड ॥ स्कन्ध बेठी कन्यका इम । चिचित्र
रंग रंगा मांड हो ॥ म ॥ २१ ॥ मृत्युक गज घणाइयो जी । मुक्त फल को ढंग ॥ इ
ण भांत रचना रची । मैं तो धरीने अति उमंग हो ॥ म ॥ २२ ॥ करी घडी धरी छाब-

डी जी । दी दासीने हाथ ॥ एकान्त कुँवरीने आपीये जी । जिम कोइय न जाणे वात हो ॥ म ॥ २३ ॥ देखी बुद्धी खुशी हुइ जी । मिलसी घणो इनाम ॥ सप्त खन्ड ढाल सप्तमी जी । कहे अमोल देखो काम हो ॥ म ॥ २४ ॥ ० ॥ दुहा ॥ हरषाणी मालण तदा । पुष्प करंड कर लेय ॥ गइ ते कुँवरी मेहल में । एकांते रही तेय ॥ १ ॥ पुष्पवती बुलायने । दीना गजरा हार ॥ फिर कहे हूं लावी अछूं । पुष्प सटिके मनोहार ॥ २ ॥ प्रसारी देखाडता । कुँवरी द्रष्ट लगाय ॥ अश्चर्य पाइ अति घणा । ए कुण रचना रचाय ॥ ३ ॥ ए तो वीती मुज विषे । सघली दी आलेख ॥ हम दोनो जाणां अछां । वली कुण आयो देस ॥ ४ ॥ शंका पडी मन ने विषे । सच्चा श्रीधर कोन ॥ जल्दी परिक्षा कीजीये । फिर परण वो जोन ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल ८ मी ॥ अषाड भूती अणगार ॥ यह ॥ पूछे मालण तेह । माजी सच्च मुज केह ॥ मदनज सुणिये ॥ ए उत्तम साडी कुण करी जी ॥ ए मुज्ञ अतिही सुहाय । एसी नित्य दीजे लाय ॥ मदनजी सुणीये । इनाम देस्युं मन भरीजी ॥ १ ॥ थाइजी परदेशी कोय । सहु वियोगे दुःखी

खण्ड७

१ साडी

॥ ... सुख पाय ॥ म ॥ एकांत दाज कुंवरी भणी जी ॥ अन्य न जाणे भेद । निवारे सहु खेद ॥ म ॥ हुकम होसी तो लास्यूं घणी जी ॥ ३ ॥ कुँवरी मन हर्षाय । जाण्या श्रीधर साचाय ॥ मदन ॥ पत्र लिख दीयो तिण तदा जी ॥ चिंता मत कीजो कांय । इहांइ रहजो सुख मांय ॥ मदन ॥ उपाय करस्यूं हूं यदाजी ॥ ४ ॥ देजो नित्य समाचार । नहीं कीजो प्रेम विसार ॥ मदन ॥ आखिर सत्य तिरसे सही जी ॥ पंच मोहर संग पत्र । दियो मालण ने तत्र ॥ मदन ॥ सुखे राख सुख थी कही जी ॥ ५ ॥ मालण अति हर्षाय । वेगी आइ बाग मांय ॥ मदन ॥ कागद दियो म्हारे करे जी ॥ कुँवरी खुशी हुइ बहोत । जोइ साडीरी जोत ॥ मदन ॥ भकरी मुज थी उच्चरे जी ॥६॥ प्रेम पत्र ते वांचीयुजी मुज दुख की आंच ॥म॥ साच उपजावण कारणे जी ॥ पुष्प नो वंचू वणाय । नाम गुंथ्यो ज्यों जणाय ॥ मदन ॥ गज मोती गुंथ्या वारणे जी ॥ ७ ॥ रखीयो छाबडी मांय । कुसुम थी दीनो छाय ॥ स । कह्यो एकांतमें देवजो जी ॥ दूजे दिन तिहां जाय । दीनो कुँवरी ने ताय ॥ म ॥ हर्षी गृह्यो प्रसाद ज्यूं जी ॥ ८ ॥ खोली मुक्ताफल दीठ । लाग्या मन ने मीठ ॥ म ॥ प्रेमे उर लगावीयो जी ॥ दी दीनार पचीस । कहे पुरुला जगीस ॥ म ॥ इम नित्य नव २ लावीयो जी

[illegible] ॥ पुण्य ॥ हिव भागा जा इहां थकां ॥ मु० म ॥ चाल्
नहां मुज पोल ॥ पुण्य ॥ १० ॥ म यहवा पक्का कर्यो ॥ मु० म० ॥ तिण नहीं जाण्यो
भद ॥ पुण्य ॥ लोक तमासो देखने ॥ मु० म० ॥ अनिहां पाया खेद ॥ पुण्य ॥११॥
म[illegible] मारो भु[illegible]से ॥ मु० म० ॥ इम राजा प्रजा देय ॥ पुण्य ॥ पण आलख नहीं
[illegible] मे ॥ मु० म० ॥ [illegible] डिवेय ॥ पुण्य ॥१२॥ कुवरी कह्यो राय कान
मे ॥ मु० म० ॥ [illegible] ॥ पुण्य ॥ कहे [illegible]मार्था पक्का जणा ॥ मु० म ॥
[illegible] मुज [illegible] ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ मे जाइ उभो राजाकने ॥ मु० म ॥ कांइ
[illegible] ॥ पुण्य ॥ इम पूछे मुज कान में ॥ मु० म ॥ कांइ में कर्यो तब
[illegible] ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ कहता वढावन्न कीजीये ॥ मु०म ॥ राजाजी ते नहीं आवे
मुज पास ॥ पु ॥ ते तू [illegible] ॥ मु०म राजाजी ॥ नहीं तो होवे मुज नाश
॥ पु ॥ १५ ॥ [illegible] वढावन्न ततक्षिण ॥ मु०म ॥ भट सूरा ने बुलाय ॥ पु ॥ पकडा
यो धूर्त सगो ॥ मु०म ॥ मुज लगयो महल मांय ॥ पु ॥ १६ ॥ सुक्ष्म रुप खेचर
[illegible] ॥ मु०म ॥ भागो गयो नेवार ॥ [illegible] ॥ हा हा कार सभा विषे ॥ मु०म ॥
मचीयो तव अपार ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ तव हर्ष्या सहु जणा ॥ मु० म० ॥ साचो

निवडच्या काण ॥ पुण्य ॥ निर्णय करणो आणीया ॥ सु० म० ॥ मीली ल आयो होण ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ साधो जाण्यो ते छूटो भयो । सु० म० ॥ साचो निवल्यो एह ॥ पुण्य ॥ इम सुण दोनी आवीया ॥ सु० म० ॥ दात आत घर तेह ॥पुण्य॥ ॥ १९ ॥ राजा राणी खुशी हुवा ॥ सु० म० ॥ टलीयो सघलो दुःख ॥ पुण्य ॥ लग्न करण निश्चय कीयो ॥ सु० म० ॥ सहु स्वजन पाया सुख ॥ पुण्य ॥ २० ॥ महल दीयो एह रहणने ॥ सु० म० ॥ वली द्रव्य देइ कोड ॥ पुण्य ॥ इम रुध आइ इण मे रह्या ॥ सु० म० ॥ उत्सव माण्यो मोड ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ शुभ लग्न परणावीया ॥ सु० म० ॥ दीर्घा जागीरी वधाय ॥ पुण्य ॥ इण विध हम सुखीया भया ॥ सु० म० ॥ टलीयो दुःख को पहाड ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ श्रीधर दीनी कथा कही ॥ सु० म० ॥ मान खंड नव ढाल ॥ पुण्य ॥ अमोल ऋषि कहे सांभलो ॥ सुख कारी श्रोतार्जी ॥ पुण्य फल यह रसाल ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ श्री ॥ दुहा ॥ जिष्ट बन्धव की सुण कथी । मदन वणो हर्षाय ॥ धन्य २ भाइ तुमे । कीनो जबर उपाय ॥ १ ॥ बांछक उत्तम वस्त की । वात वदी सिद्ध होय ॥ ए तो प्रत्यक्ष पारखो । मे लीधो है जोय ॥ २ ॥ आं पा चारं वडे पंर । नदीने तट पंथ ॥ जे जे इच्छा चरण की । ने पाया सो गय

॥ ३ ॥ हिव कर्म कुछ ना रह्यो । मिलीया शुभ संयोग ॥ कुलम्बे वह्या निका ॥ वर्ष
गर ना भोग ॥ ४ ॥ ते काल पुरण हुवो । प्रगट्या पुण्य प्रताप ॥ हिव चालो निज
नगर में । सहु धन जन संग आप ॥ ५ ॥ . ॥ ढाल १० मी ॥ हरीया मन लागो ॥
॥ मदन कुँवर सहु जन संग । मा भात उछ्छ गणार ॥ पुण्य ना फल मोहला ॥
आयो निज देशनेर । निहा चालण हुइ उमगर ॥ पुण्य ॥ १ ॥ मदन जी कहे तात
। अव चालीजे निज देशर ॥ पुण्य ॥ कुल देवी कह्या निकेजो । वर्ष वीत्य के देश
॥ पुण्य ॥ २ ॥ वसुपतजी कहे चालीये । हम ना सहु तुम लारर ॥ पुण्य ॥ सपूत पुत्र
मारीया । हिवे हमने चिता न लगारे ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ श्रीधर नृप पासे जइ ।
राजा नेवारेर ॥ पुण्य ॥ स्वामी जावां हम देशमें । संग मिली सहु परिवारर ॥
॥ ४ ॥ राय कहे हम किम करा । तुम ने इहां किस्यो दुःखर ॥ पुण्य ॥ हम प...
राज तुम तणो । भोगवो इच्छित सुखर ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ श्रीधर बदे नरसाइने ।
... सहु परिवार मन रंगजी ॥ पुण्य ॥ जन्म स्थान जोवा तणो । सहू ने भयो उमंग
जी ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ वर्ष घणा हुवा हम भणी । रहतां विदेश ने मांय जी ॥ पुण्य ॥
हिवे मिलस्या सज्जन भणी । शिघ्र हुकम फरमाय जी ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ ...

सुख हुवे । तिम परो सहु काज जी ॥ पुण्य ॥ [illegible] ॥ [illegible]
वो तुम साज जी ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ इम सुणी खुशी हुवा । लीनी शैन्य घणी साथ जी
॥ पु ॥ मिलाइ मदन शैन्य में । साज जम्यो ज्यों नर नाथ जी ॥ पु ॥ ९ ॥ शुभ म-
हूर्त तणे विषे । कीधो सहु प्रयाण जी ॥ पु ॥ राज साज पहोंचाविया । [illegible]
नस जाण जी ॥ पु ॥ १० ॥ आगल चाल्या मोद में । सुखे २ करत मुकाम जी ॥पु॥
शक्ती भक्ती थी मनावता । विच राजा ने लाता ठाम जी ॥ पु ॥ ११ ॥ इम अनुक्र-
मे आवीया । अजुध्या पुरी समीप जी ॥ पु ॥ सुखस्थान जो वन विषे । रह्या जो ति-
न्धु द्विपजी ॥ पु ॥ १२ ॥ पुरमें पसरी वारता । कोइ आया राजेन्द्र [illegible] ॥ पु ॥
आपणा ग्रामके वाहिरे । रह्या छे छावणी छायरे ॥ पु ॥ १३ ॥ सन्धी पाल आइ नृप
ने । अर्ज करे अकुलायरे ॥ पु ॥ न जाणे कुण राजवी । किण कामे [illegible] आयरे
॥ पु ॥ १४ ॥ भूप सुणी विस्मित भया । कुण ए आया किण काजरे ॥ पु ॥ [illegible]
महारो किण थको । ए छे किहां ना राजरे ॥ पु ॥ १५ ॥ जो [illegible] ॥ [illegible]
भजना आगे दूतरे ॥ पु ॥ कारण अन्य दीसे सही । कोइ खबर लावो रजपूतरे ॥ पु ॥
॥ १६ ॥ सामंत तत्क्षिण सज हुइ । आया मदन शैन्य मायरे ॥ पु ॥ [illegible]

आम अध्यय ... ॥ पु ... ॥ नम ...
टापर ॥ पु ॥ पुछे मामन ... म । ... ॥ ...
पर्या मद्द वारना । ... ॥ पु ॥ ...
पुन वनोनर ॥ पु ॥ ... ॥ पु ॥ ...
पम मद्धवंत पुण्य कथा । ... ॥ पु ॥ ... ॥ ... हुयी ...
धन्य २ महारा ... ॥ पु ॥ मुज रुकर्मा का नदद्या । ... ॥ पु ॥
॥ २१ ॥ ... । ... नयारे ॥ पु ॥ ... । ...
सुर्णाम आया मह ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... नम पामे ... । पांच ... ।
नर ॥ पु । ... अध्यय ... । अहो ... पुण्यप्रबीनरे ॥ पु ॥ ... ॥ ...
र्या दुकानप । मुर्णाया मुनाम ममाचारे ॥ पुण्य ॥ मेट थी मिलण उमाइया । मद्
सज्जन हुया नयारे ॥ पु ॥ २४ ॥ गजा प्रजा सैन्य संगे । चाल्या वाजिवंत नादरे
॥ पु ॥ ढोल दमामा मम थेंइकी । अमोल्य भणे हुयो समादरे ॥ पु ॥ २५ ॥ दुहा ॥
वसुपत शाह सांभल्यो । सामे आवे राज ॥ स्वजन परजन परिवर्या । मिलण ...

उ पुल सग त थार ॥ २ ॥ ... आवे शिघ्र चलाय ॥
तणो । सांभलियो घंघाट ॥ ३ ॥ गज गाजी गण गम मिल्या । आवे शिघ्र चलाय ॥
नेडा आया देखनं । वसुपति ऊभा थाय । ४ ॥ वहू मोल्यो सज भेटणो । वहू तो सा-
ज सजाय ॥ मिलवा सज्जन राज ने । अति ही मन उमंगाय ॥ ५ ॥ ७ ॥ ढाल ११
मी ॥ महारे आज आणंदा नो दिन छे जी ॥ यह ॥ आज आनंद दिन सेठ आवीया
जी । सहू सज्जन के मन भावीया जी ॥ आं ॥ सेठ सपरिवार उभा जोयने जी ॥ फोज
उभी रही खुश होय ने जी ॥ आ ॥ १ ॥ सामा आया भूप पांयां चरी जी । सेठ सा-
मा आया हर्ष भरी जी ॥ आ ॥ २ ॥ लुली २ नम्या सेठ परिवार थी जी । राय खुशी
किया घणां सत्कार थी जी ॥ आ ॥ ३ ॥ सेठ निजराणो सामो कियो जी । राजेश्वर
हर्षी लियो जी ॥ आ ॥ ४ ॥ सहू विध लायक तुम सेठ छो जी । किसी वस्तु हम
पास करां भेट जो जी ॥ आं ॥ ५ ॥ राज्य मान्य राजे श्री तुम सिल्या जी ॥ तुम
दीठा पुण्य म्हाणा फल्या जी ॥ आ ॥ ६ ॥ प्रधानादिक आइ नम्या जी । यथा योग्य
क्रिया सहू ना गम्या जी ॥ आ ॥ ७ ॥ राय वसुपत एक गजा रूढ भया जी । चउ
भाइ दूजे दंती सोभी रया जी ॥ आ ॥ ८ ॥ सहू शैन्य साथ वाजित्र वाजीया जी ।

[illegible] अधिक [illegible] जी ॥ आ ॥ [illegible]
[illegible] किया जी ॥ आ ॥ २४ ॥ पसरी कीर्ती चउदिश माय ने जी ॥
[illegible] ढाल च्यार अमोलख गाय ने जी ॥ आ ॥ २५ ॥ ० ॥ दुहा ॥ एक दिन मदन
[illegible] । हुं [illegible] इहां आय ॥ पाछल और परिवार मुज । करी दर्श फर्श चाय ॥
[illegible] ॥ हिवे शिघ्र निज [illegible] । चलणो फिर सहू ठाम ॥ संतापू सहू न हिवे । करुं
[illegible] ॥ २ ॥ इम निश्चय कर आवीया । तात भ्रात नृप पास ॥ निज इच्छा
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] पति बुलाय ने । सजाइ फौज ते वार ॥
[illegible] । [illegible] आज्ञा [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] । घर पुर्नी ले लार ॥ ४ ॥ प्रणमी पग सज्जन तणा । करी
[illegible] ॥ [illegible] चालीया । सदन श्वसुर ने वार ॥ ५ ॥ ० ढाल १२
[illegible] ॥ [illegible] ॥ यह ॥ पुण्य सदा सुख कार । प्रगटे करी हुइ
[illegible] । कीर्ती जग में फलाइ ॥ आं ॥ प्रथम श्री पुर
[illegible] प्रजा [illegible] आया सामंने अति उमंग । ले गया वधाइ ॥ खान
[illegible] आनंद मांइ ॥ [illegible] सुन्दरी [illegible] सहु धनिक चताइ
[illegible] आया राजा प्रजा सहू वंधन धाया । सुनी राज

गुण [illegible]
न एह रहा । अयुध्या के बाग में ।
[illegible] वन पाल ॥ मुणी मह आ-
[illegible] धर्म । [illegible] अर्ध लक्ष नर ॥
[illegible] ॥ ४ ॥ मह परिवारे परिवर्या । चाल्या वंदन राय ॥ हय
गय [illegible] । वंदन पर न महाय ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ढाल १३ मी ॥ क्षिण लाख
जाय ॥ यह ॥ राय भवन थी नीसर्या जी । वन पालक ने वार ॥ वसुपत मेहले
आवीया जी । मदन नणे दरवार ॥ १ ॥ भविक जन । धर्म सदा सुख दाय ॥ आ ॥
[illegible] पधारीया जी । मुझ शांत मुनी राय ॥ पांच सय परिवार थी जी । सुणी सहू
हर्षाय ॥ भविक ॥ २ ॥ धन दियो तिण ने घणो जी । ने आयो निज घेर ॥ सहू परि-
वार ने सेठ नी नर । हुकम दियो इण घेर ॥ भविक ॥ ३ ॥ शिघ्र चलो चंदण भणी
[illegible]
भविक ॥ ४ ॥ सेठ सेठाणी बेटा बहू जी । [illegible] परिवार ॥ [illegible]
जी [illegible] सब ही लार ॥ भवि ॥ ५ ॥ राजाजी ने लारे थया जी । और [illegible] लार
॥ मज्य [illegible] हाथ ने जी । आया बाग मझार ॥ भवि ॥ ६ ॥ जो मुनीवर बाहण
[illegible] जी । मुनी गुण दर्शन [illegible]

१४०.

जी । महा पुण्य मिल्या जोग ॥ ...
अधिक ॥ ४ ॥ सेठ सेठाणी बेटा वहू जी । दासादिक परिवार ॥ सगा स्नेही सजाय ने
जी लीना सब ही लार ॥ भवि ॥ ५ ॥ राजाजी ने लार थया जी । और सायवी लार
॥ भव्य सजाय होय ने जी । आया बाग मझार ॥ भवि ॥ ६ ॥ जो मुनीवर वाहण
तज्या जी । पंच अभीगम मांच ॥ सचित वस्त दूरी ठवी जी । मुनी गुण दर्शन राचा
॥ भवि ॥ ७ ॥ अचित अजोग ने परहरी जी । मुखे उलासण किध ॥ सरल करी दी
जोग ने जी । धर्म ध्याने चित दीध ॥ भवि ॥ ८ ॥ नहीं नजीक नहीं वेगला जी ।
नमन यथा विध कीन ॥ बेठा नम्र हो सन्मुखे जी । कथा सुणन चित दीन ॥ भवि ॥
९ ॥ परिषद भर्‍यां जोय ने जी । दे मुनी वर उपदेश ॥ भव निवारण कारणे जी ।
ममायों धर्म ... ॥ भवि ॥ १० ॥ धर्म अनेक प्रकारका जी । पण मुख्य छे दो भेद
॥ पुद्गल ने अभिसष ... जी । पुद्गली देवे खेद ॥भवि॥ ११ ॥ पुद्गल के परिचय थकी
जी । भमीयो अनंत संसार ॥ अह दमन कर आवीयो जी । नम भव्यो अनंत वार ॥
भवि ॥ १२ ॥ तो पण तृप्ती नहीं भई जी । अधिक २ भइ चहाय ॥ अग्नी नी परे
... जी । सर्व भक्षया जाय ॥ भवि ॥ १३ ॥ नटवा की परे नाचीयो जी । करी

लहा हिय तहना जी । थावो मा गिल्वोण ॥ वमण भोग इच्छा तजो जी । येही खरो विलाण ॥ भवि ॥ १५ ॥ आत्मिक धर्म ते जाणिये जी । धरेन पुद्गल प्रेम ॥ पूरे गले मिल वीछडे जी । तेह थकी किसो क्षेम ॥ भवि ॥ १६ ॥ अनंत काल की संगती जी । सहजे नहीं नजाय ॥ सम्यक्त्व देश वृती लही जी । अणगारी जब थाय ॥ भवि ॥ १७ ॥ मर्यादा संकोचना जी । अहार वस्त्र ने योग ॥ भावे कषाय घटावती जी । जेह अनादी रोग ॥ भवि ॥ १८ ॥ इम गुण स्थान रोहता जी । आत्म ध्यान लगाय ॥ लीन होवे निज रूप में जी । सहु विकल्प मिटाय ॥ भवि ॥ १९ ॥ धर्म ए आत्म ओलखी जी । नहीं कर्म नो मर्म ॥ निष्फल श्रम जे नीपजे जी । वरो उंचो ए धर्म ॥ भवि ॥ २० ॥ तो नर भव की सार्थता जी । हुइ सम जो मम प्राण ॥ चिद्यो चरण गुण धारका जी । नहीं एक ही की ताण ॥ भविक ॥ २१ ॥ येही विचार सार ते जी ॥ धार मुमुक्षु हित ॥ छोड प्रणती अनादिनी जी । होय खरा मुक्त नित ॥ भविक ॥ २२ ॥ सर्व प्राणी तारणो जी । दिये गुरु सद्बोध ॥ अमोल दाल सर्वो दशी जी । लागी आत्म की सोध ॥ भविक ॥ २३ ॥ ० ॥

र गया परजा ... ॥ ९ ॥ ... मुज आतमा । साचा मिथ्या तुम लेण ॥ १ ॥ ...

र गयां परजा नरेश ॥ १ ॥ वसुपत कहे स्वामी जी । साची आपकी केण ॥ हिवे तारू मुज आतमा । साचा मिल्या तुम सेण ॥ २ ॥ ऋषि कहे सुख जिम करो । न करो धर्म में ढील ॥ तारो आतमा आपणो । अवसर एह मुशकिल ॥ ३ ॥ मुनी वंदी गृह आवीया । भेलायां परिवार ॥ निज इच्छा दर्शावता । सहू मुरजा तिण वार ॥ ४ ॥ मदन कहे कर जोडने । कीजो विचारी काम ॥ आप जाण अवसर तणा । तिहां नहीं कुछ धाम ॥ ५ ॥ ० ॥ ढाल १४ मी ॥ महारो मनडो ऋषभजी से राजी ॥ यह ॥ मेरा मनडा संयम में उमाया ॥ आ ॥ मे तो वचन विचारी उचार्या । मुज चेतवा वक्त ए आया ॥ मेरा ॥ १ ॥ मशक्ति निज काज सुधारूं । तो जन्म मरण मिट जाया ॥ मेरा ॥ २ ॥ जे पर वशमें दुःख मे सहाया । ते संयम में न देखाया ॥ मेरा ॥ ३ ॥ धर्म मार्ग में दुःख नहीं सहीया । ते परवश में दुःख पाया ॥ मेरा ॥ ४ ॥ हिवे चेतूं तो कुलक सुधरे । अपूर्व वक्त ए आया ॥ मेरा ॥ ५ ॥ नहीं तो पछि गोता खास्यूं । महा मुनीवर फरमाया ॥ मेरा ॥ ६ ॥ तुमसा सपूत मिल्या नहीं सुधारूं । तो मैं मूर्ख गिणाया ॥ मेरा ॥ ७ ॥ निज छिन में अन्तराय जो देवे । ते हीज पिशुन जणाया ॥मेरा

वणाइ । सु० त छो गात्र धन्याइ ॥ सु० मुनी राज चेतर लिआइ ॥ मि ॥ सुख रहै
पंच प्रान । करै धर्म दान । एकाग्र लगाजे ॥ तो मदन ॥ ५ ॥ तिहां थी चर्या मर्णा
चन्द । पुण्य अमंद । मदन जी थइया ॥ चउदान तणे प्रताप राज चार लहीया ॥
चारं महता करी काल । उपज्या तत्काल । राज घर आइया ॥ कपट प्रभावे नारी
वेद न थइया ॥ झला ॥ सु० पुर्व प्रेम प्रभावे । सु० चारि राणी ते थावे । सु० दान
थी संपदा पावे । सु० वली धर्म में मन रमावे ॥ मि ॥ इम जाणी दीजो दान । करी
सन्मान । तजो अभीमान । शुष्क वृती रीजे ॥ तो मदन ॥ ६ ॥ जे कीधा ते पाया ।
वाणिक कुल आया । राजा केवाया ॥ किंचित दुःख थी सुख अचिंत्यो पाया ॥ और
भावे गुण भारी । प्रत संसारी । भइ तुम काया ॥ तेहथी तारण सामग्री कर तुम आया
॥ झ ॥ सु० ए ऋद्धि साथ नहीं जावे । सु० ए ऋद्धि न दुःख मिटावे । सु० दान
मांही देव न पावे । सुण० मोक्ष अर्थी ए छिटकावे ॥ मिल ॥ इम जाणी अहो प्राणी
। संताप करीजे ॥ तो मदन ॥ ७ ॥ अब छोडो ऋद्धि करो करणी । भव उद्धरणी ।
जिन जी फरमाइ । खांत दांत निरारंभ अणगार ज थाइ । ते मिटा देवे जन्म मर्ण ।
फिरी अवतर्ण । मोक्ष में जाइ ॥ ए सार जक्त में धारो सुखेच्छू भाइ ॥ झला ॥ सु०

ए गुरु उपदेश स्वाद ।   णा मेवा जाव तत्काल । गृहस्थ हुवा तन कष्ण .....
। सुण भाइ ये दृढ .... ॥ मित्र ॥ ... वचन अमोल । हीरा ... मोल
दान शुद्ध दीज ॥ ... ॥ ... ॥ दूहा । ...
॥ जाणी मदन पूर्व ... । ... मन विस्माय ॥ १ ॥ अचिन्त्य मे ... दान ... ।
डा मे महालाभ ॥ दाना मु... सव मिल्या । ... जिना ... ॥ २ ॥ दान ...
तप भावना । धर्म का च्यार प्रकार ॥ प्रथम पद इण ... । ... दान ... ॥ ३
॥ पुण्यवन्त अवसर पाय ने । लख धन लगाय ॥ कंकर ... कंचन ... । काल ... मे ज-
गाय । ४ ॥ विशेष काले ज फले । ने विशेष दे सुख ॥ इस प्रत्यक्ष आस्या तजी ।
महा परीक्षा हो सुख ॥ ५ ॥ ६ ॥ ढाल ११ मी ॥ अगड बम ० बाजे चौघड्या ॥
यह ॥ महा पुण्य वंत श्री मदन कुवर जी । दान से कीयो खेवो पार ॥ पाप हटावन
धर्म वधावन पुण्य प्रकाश किया अधिकार ॥ औं ॥ सुणी पूर्व भव रचना मदन जी ।
मुनीवर ने जाण्या उपकारी । विन पूछ्या मुज तारण कारण । कथा कही पहली
म्हारी ॥ ऋद्धि इण थी अधिक मे पाइ । छोड आयो अनंत वारी ॥ आर । ऋद्धि प्राप्त-

दीन दयाल दया कर दीन पे । भवेल महारा फरसाया ॥ ... ...
का फल यह । अब करस्यूं अर्पण काया ॥ म्हाढ़ि मिर्दा तो मुज नहीं चहीये । जन्म
मरण से घबराया ॥ यहीं दुःख मिटावन कारन । लेस्युं हूं संयम भार ॥ मदन ॥ २ ॥
ऋषिजी कहे करो सुख होवे जिम । धर्म ढील करणी नाहीं । खुशी हवी वंदी घर आया
। जग छोडन मन उमाइ ॥ आइ बिराज्या धर्म स्थानक । सब परिवार लिया बुलाइ ॥
कहे सहू मुज देवो आज्ञा। दिक्षा की लगी अति चाह ॥ सहू कहे किसी कसर यहां है ।
कर रह्या आत्म उद्धार ॥ मदन ॥ ३ ॥ मदन कहे तुम ज्ञानी होइ । इसा वचन मुख
मत बोलो ॥ जन्म सर्व श्रावक व्रत धरे । नहीं मुक्ति को घडो तालो ॥ मुनी मार्ग शि
वसुख कादाता । संसारमें चउगति जोलो ॥ मनुष्य भवही संयम आवे । कुण खोवे व-
क्त असालो ॥ हूं तो लेस्यु संयम अबी । ढील करूं नहीं लगार ॥ मदन ॥ ४ ॥ तोतो
भाइ कहे नरशाइ । विरह हम थी सह्यो नहीं जावे ॥ जो आत्म उद्धार करोतो । म्हारे
ही मन ते चावे ॥ मदन कहे यह भलो विचारो । प्रमला तब दोडी आवे ॥ सहू मिलो
एक मतो कीधो । म्हाकी गती कोसी थावे ॥ हरगिज हम जावां नहीं देशा । म्हाके

तुमही आधार ॥ मदन ॥ ५ ॥ मदन कहे मोह दिशा को छोडी । ज्ञान निजर करके जोवो ॥ किंचित पापे भइ को नागी । इन से हलकी मत होवो ॥ साचो प्रेम जो राख्यां चावे । तो मोह निद्रामे मत सोवो । अवसर पाइ करो कमाइ । जिनसे भव भ्रमण खोवो । तुम कहणी थी हूं नहीं दूब । तुम क्यों नहीं तीरो संसार ॥ मदन ॥ ६ ॥ संतषे अति बोध वचन सुन । कहे हम भी साथे आसां ॥ जसी प्रीत संसार निभाइ । तसी धर्म में निभासां ॥ इम सुणी कुंवर पयंपे । सर्व एक मत तुम भइया ॥ तो आसरो हम ने किनको । जो नहीं रहे तात मैया ॥ और सज्जन भी मोह वस होइ । नेणां आंश्रू नीतारे ॥ मदन ॥ ७ ॥ मदन कहे अहो मोहो गिल्याणी । जरा विचार करो मन में ॥ आसरो दाता को नहीं जगमें । मतलब वसे सारा जनमें ॥ आप आपणा कीधा पावे । कुण लोभावे व्यर्थ धन में ॥ तुम सरीखा सुपुत्र सज्जन सुज । ताहे जन्म हिवे नरपनमें ॥ करो धर्म दलाली भारी । ए आज्ञा तुम इण वार ॥ म ॥ ९ ॥ इम सहू कुटंब समझाया । खबर चारी राज में जावे ॥ मोटा २ सामंत सज्जन प्रजा जन मिलके आवे ॥ कर जोडी कहे स्वामी आपके सरण छोड गया हम राजा ॥ आपकी छांया आनंद पाया

र ॥ म ॥ ९ ॥ यहां रांतो विश्व तणो हे । तजा २ सहू रिद्ध जाय ॥ जिस पहला फा-
राय गिधाया । मोटी गतो महारी थाय ॥ बाकी रहे जे जग माहे जन ॥ निज २ कर-
णी फल पाबे ॥ माचा सेवक परजा सोही । स्वामी को जो सुख चावे ॥ राजा थारे हु-
या हैं उत्तम । सुख देशी ते ज्यादारे ॥ मदन ॥ १० ॥ इम बहु विध समजुत करी तस
। कियो दिक्षा को मंडानो ॥ जग विवहार सांचवबा कारण । खुरसुंडण मंडण स्नानो ।
सहू वैरागी वस्त्र भुषण सज । आबेठा पालखी स्याने ॥ सहश्र पुरुष उठावे तेही । अ-
लग २ सब को जाणो ॥ शेन्य बाजा गीत नृत्य तिहां । आणंद मंगल धृत्यारे ॥ म ॥
॥ ११ ॥ गज्य बजार सवारी चाली । कोडंगम संग नर नारी ॥ लटक २ पर सहू न-
मे छे । धन्य २ मुख उच्चारी ॥ जय २ नन्दा जय २ भद्रा । भद्रा भदंती ललकारी ॥
आया सहू मिल ग्रामके बाहिर । जिहां मुनीवर दीठारी ॥ तजी सवारी हुइ पायचारी ।
यत्नाकर भूं निहारे ॥ म ॥ १२ ॥ करी वंदणा इशाण कुण आ । पंचमुष्टी लोचनकीधा
। पुल पाल झल्या खोलामे । वर्श निक जाण संग्रही लीधा ॥ पहरी साधु वेस पंदरही
। आ उभा गुरुके पासे ॥ जावजीव साब जोगने । नव कोटी त्याग्या तासे ॥ बेठा सा-
धु पंक्ति मे जा । शांत दांत गुणी अणगार ॥ म ॥ १३ ॥ सर्व कुटंब मिल करी वंदणा ।

मिण तृस नहीं होवे । टपक २ फिर घर जावे ॥ सुनी २ सहु दीसे साहिबी । गुण गण हीय रमावे ॥ धर्म कर्म का साधन करते । सुखे २ काल गुजारे ॥ म ॥ १४ ॥ श्रीधर ऋषि श्रीधर्म ज्ञान की । म तारज निर्जन तारे ॥ अंगेज अंग ज्ञानका घणिया । मर्दन मदन महातम्या मारे ॥ अब ऋषि लिखन अंकीया । पांचो नाम गुण उच्चारे ॥ सर्व मुनी सर्व गुणमें संपन्न । जिन है मूत्र के महारे ॥ किया ज्ञान अभ्यास बहुतसा । तप कर्या कर कर्म को जारे ॥ म ॥ १५ ॥ रुप श्रीजी निज रुपे स्थिन । पुर्व श्री गुण सुगन्ध भरी ॥ चन्द्रश्री धर्म धन्न संचीयो । प्रिय करी तप प्रित करी ॥ रत्नवंती रत्न रहे संयमे । रंभा रम्या क्रिया ने हीरी ॥ गुण सुन्दरी राची गुण ज्ञाने । रुप वंती स्वरुप वरी । कल्काचंनी कनक ज्यों निर्मळ । ए नव सतीयां सिरदारे ॥ म ॥ १६ ॥ सर्व सतीयां महा गुणवंती । ज्ञान भणी विनय भावे ॥ किरतो तपस्या मांडी दुक्कर । एकांत मोक्ष तणी चावे ॥ मनी मन करी करणी यथा शक्त । जैन धर्म घणा दीपाया ॥ घणा जीवने मार्ग लगाया आयु तणा जब अंत आया ॥ आलोइ निंदी अणसण करीयो । निज आत्म